राष्ट्रीय संस्करण

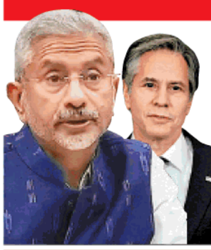
दैनिक जागरण

वर्ष 5 अंक 46

मूल्य ₹8.00, नई दिल्ली, सोमवार, 26 जुलाई, 2021

www.jagran.com

पृष्ठ 14



आतंक पर पाक को न मिले राहत, ब्लिंकन को समझाएंगे जयशंकर >>3



कारगिल विजय दिवस पर विशेष

पीठ और टांगों में गोले बांधकर चढ़ गए थे पहाड़

जम्मू : 22 साल पहले कारगिल में बर्फीली चोटियों पर लड़े गए युद्ध के 3,500 ऐसे नायक भी हैं, जिनके बारे में लोग कम जानते हैं। पाकिस्तानी घुसपैठियों को भगाने में भारतीय सैनिकों संग इनकी भी अहम भूमिका रही। (पेज-5)

'राष्ट्र प्रथम, सदैव प्रथम' के मंत्र से बढ़ना होगा आगे : मोदी

मन की बात ▶ प्रधानमंत्री ने कहा, 'भारत छोड़ो आंदोलन' की तरह हर देशवासी करे 'भारत जोड़ो आंदोलन' का नेतृत्व

मतभेदों को भुलाकर विकास के लिए एकजुट होने की बताई जरूरत

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

देश में आजादी के 75वें साल का स्वागत आम जनता की ओर से राष्ट्रगान के द्वारा किया जाएगा। सरकार अधिक से अधिक लोगों को राष्ट्रगान का हिस्सा बनाने की तैयारी में जुट गई है। 'मन की बात' कार्यक्रम के 79वें एपिसोड में इसकी जानकारी देते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आगे बढ़ने के लिए 'राष्ट्र प्रथम, सदैव प्रथम' का मंत्र देकर लोगों से एकजुट होकर देश के विकास में योगदान देने की अपील की। याद दिला दें कि आजादी की 75वीं वर्षगांठ मनाने के लिए 12 मार्च से ही पूरे देश में 'अमृत महोत्सव' कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी ने देश के विकास के लिए आजादी की लड़ाई के समय जैसी एकजुटता की जरूरत पर बल दिया। उनका संदेश साफ है कि विकास की गति को तेज करने के लिए हमें अपने छोटे-छोटे मतभेदों को छोड़ना होगा और साथ मिलकर काम करना होगा। देश में एकजुटता की भावना को बढ़ावा देने के प्रयासों को उन्होंने आंदोलन के रूप में चलाने की जरूरत बताई। उन्होंने कहा कि जैसे बापू के नेतृत्व में 'भारत छोड़ो आंदोलन' चला था, वैसे ही, आज हर देशवासी को 'भारत जोड़ो आंदोलन' का नेतृत्व करना है।

आजादी के 75वें साल का साक्षी बनने को सौभाग्य बताते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि इसकी शुरुआत सामूहिक राष्ट्रगान के साथ की जाएगी। इसके लिए संस्कृति मंत्रालय राष्ट्रगानडाटइन नाम से एक वेबसाइट तैयार कर रहा है। इस वेबसाइट की मदद से कोई भी व्यक्ति राष्ट्रगान गाते हुए अपना वीडियो रिकार्ड कर सकता है और उसे वेबसाइट पर अपलोड कर सकता है। उन्होंने कहा कि लोगों को इससे जोड़ने के लिए विशेष अभियान चलाया जाएगा। सरकार की कोशिश होगी कि अधिक से अधिक लोग मिलकर राष्ट्रगान को गाएं और इस अभियान का हिस्सा बनें। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में इस तरह के कई और अभियान शुरू किए जाएंगे।

विभिन्न मुद्दों पर विपक्ष की ओर से सरकार पर हो रहे हमलों के बीच मोदी ने 'अमृत महोत्सव' कार्यक्रमों को सरकारी आयोजन के रूप में देखे जाने के प्रति भी आगाह किया। उन्होंने कहा कि 'अमृत महोत्सव' किसी सरकार का कार्यक्रम नहीं, किसी दल का कार्यक्रम नहीं, यह कोटि-कोटि भारतवासियों का कार्यक्रम है। हर स्वतंत्र और कृतज्ञ भारतीय का अपने स्वतंत्रता सेनानियों को नमन है और इस महोत्सव की मूल भावना का विस्तार बहुत विशाल है। यह भावना है, अपने स्वाधीनता सेनानियों के मार्ग पर चलना और उनके सपनों का देश बनाना।

- सामूहिक राष्ट्रगान से होगा आजादी के 75वें साल का स्वागत
- संस्कृति मंत्रालय की वेबसाइट पर रिकार्ड कर सकेंगे राष्ट्रगान



रेडियो पर अपने चर्चित 'मन की बात' कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। जागरण आर्काइव

कारगिल के नायकों को दें सलामी : मोदी ने देशवासियों से अनुरोध किया कि 26 जुलाई को कारगिल दिवस पर इस युद्ध के वीरों को सलामी दें। उन्होंने कहा, कारगिल का युद्ध सुरक्षा बलों की वीरता और अनुशासन का प्रतीक है।

अपना 'विक्ट्री पंच' साझा करें : पीएम ने कहा, देशवासी आगे आएं और टोक्यो ओलिंपिक में हिस्सा ले रहे एथलीटों का इंटरनेट मीडिया पर 'विक्ट्री पंच' के जरिये उत्साहवर्धन करें। कहा कि 'विक्ट्री पंच' अभियान शुरू हो चुका है और आप अपनी टीम के साथ अपना विक्ट्री पंच साझा कर सकते हैं।

सुझाव भेजने वालों में 75 फीसद 35 वर्ष से कम उम्र के : माईगाव के सर्वेक्षण का हवाला देते हुए मोदी ने कहा, मन की बात के लिए अपने सुझाव और संदेश भेजने वालों में 75 फीसद लोग 35 साल से कम उम्र के हैं। उन्होंने कहा, इस कार्यक्रम के जरिये उन्हें युवाओं के विचारों को जानने का मौका मिलता है।

न्यूज गैलरी

राष्ट्रीय राजधानी ▶ पृष्ठ 2

सौ करोड़ की धोखाधड़ी में कंपनी का एमडी गिरफ्तार

नई दिल्ली : सौ करोड़ रुपये की धोखाधड़ी के आरोप में इंफ्रास्ट्रक्चर लीजिंग फाइनेंशियल सर्विसेज ट्रांसपोर्टेशन नेटवर्क लिमिटेड के प्रबंधन निदेशक रामचंद करुणाकरण को रविवार को गिरफ्तार कर लिया गया। यह गिरफ्तारी दिल्ली पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा ने रविवार को मुंबई से की है। आरोप है कि रामचंद ने गुरुग्राम में रैपिड मेट्रो रेल में काम कराने के नाम पैसों का दुरुपयोग किया।

राज-नीति ▶ पृष्ठ 3

आतंकवाद को नकार कर विकास के पथ पर बढ़ रहा असम : शाह

गुवाहाटी : विधानसभा चुनाव में जीत के बाद असम में पहली बार जनसभा को संबोधित करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि पूर्वोत्तर क्षेत्र में भाजपा अपना आधार मजबूत कर रही है। असम में दूसरी बार भाजपा सरकार बनने का मतलब है कि राज्य ने आतंकवाद को रूप से नकार दिया है और विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है। शाह ने कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास भी किया।

राष्ट्रीय फलक ▶ पृष्ठ 5

पोर्नोग्राफी रैकेट मामले में कुंद्रा के चार कर्मचारी बने गवाह

मुंबई : पोर्नोग्राफी रैकेट मामले में अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी के पति और कारोबारी राज कुंद्रा के चार कर्मचारी उनके खिलाफ गवाह बन गए हैं। इन कर्मचारियों ने पुलिस को रैकेट के बारे में पूरी जानकारी उपलब्ध करा दी है। इससे राज कुंद्रा की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। कथित रूप से पोर्नोग्राफिक फिल्में बनाने से जुड़े आरोपों में मुंबई पुलिस ने कुंद्रा को 11 अन्य लोगों के साथ 19 जुलाई को गिरफ्तार किया था।

अंतरराष्ट्रीय ▶ पृष्ठ 11

तालिबान के युद्ध अपराधों की जांच कर रहा आइसीसी

काबुल : अफगानिस्तान में तालिबान द्वारा किए जा रहे कत्लेआम को मानवाधिकार संगठन द्वारा उठाये जाने के बाद अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (आइसीसी) ने जांच शुरू कर दी है। तालिबान ने विशेषतौर पर कंधार प्रांत के स्पिन बोल्डक शहर में निर्दोष नागरिकों की हत्या की है। यहां प्रांतीय अधिकारियों के रिश्तेदारों, सेना और पुलिस कर्मचारियों को हिरासत में लेकर गोली से उड़ा दिया।

मनिका, मेरी, सिंधू ने कायम रखीं उम्मीदें

जागरण न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली

टोक्यो ओलिंपिक में रविवार का दिन भारतीय दल के लिए मायूसी भरा रहा। निशानेबाजी, टेनिस, तैराकी और हाकी में जहां भारत को निराशा हाथ लगी तो वहीं देश के लिए पदक की दावेदार मानी जाने वाली बेटियों मनिका बत्रा, एमसी मेरी कोम और पीवी सिंधू ने उम्मीदें कायम रखी हैं। 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में मनु भाकर की पिस्टल ने उनका साथ नहीं दिया और क्वालीफिकेशन दौर में उन्हें हार का सामना करना पड़ा।

नौकायन में दिखा कमाल : अर्जुन लाल जाट और अरविंद सिंह की जोड़ी ने पुरुषों की नौकायन लाइटवेट डबल स्कल्स स्पर्धा के रेपचेज दौर में तीसरे स्थान पर रहकर सेमीफाइनल में जगह बनाई।

सानिया और अंकिता की जोड़ी हुई बाहर : भारत को बड़ा झटका तब लगा जब टेनिस स्टार सानिया मिर्जा और अंकिता रैना की जोड़ी पहले ही दौर में यूक्रेन की बहनों नादिया और लियुडमाइला किचेनोक से 6-0, 6-7 (0-7) और 8-10 से हारकर बाहर हो गई।

संबंधित खबरें >> पेज 12

मेरी कोम और सिंधू का विजयी आगाज : मुक्केबाजी में छह बार की विश्व चैंपियन एमसी मेरी कोम (51 किग्रा) ने जोरदार पंच बरसाते हुए डोमेनिका गणराज्य की मिगुएलिना हर्नांडिज गार्सिया को 4-1 से हराया। इस जीत के साथ वह प्री क्वार्टर फाइनल में पहुंच गईं। 2016 रियो ओलिंपिक की रजत पदक विजेता बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधू ने 58वीं रैंकिंग की इजरायली खिलाड़ी सेनिया पोलिकारपोवा को 21-7, 21-10 से हराया। दूसरे दौर में सिंधू का सामना अब हांगकांग की चियुंग एंगान यि से होगा। टेबल टेनिस में मनिका बत्रा ने पहले दो गेम में पिछड़ने के बाद वापसी करके यूक्रेन की मारग्रेट पेसोत्सका को 4-3 से हराकर महिला सिंगल्स के तीसरे दौर में प्रवेश किया।



आज के प्रमुख आकर्षण

- तीरंदाजी में प्रवीण जाधव, अतानु दास और तरुणदीप राय की पुरुष टीम पर होंगी नजरें
- स्कीट निशानेबाज मैराज अहमद खान व अंगद वीर सिंह भी दिखाएंगे दमखम
- तलवारबाजी में भवानी देवी पहली बार ओलिंपिक में करेंगी शिरकत

भारत की हार

- 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा के क्वालीफिकेशन में बाहर हुईं मनु भाकर व यशस्विनी सिंह देसवाल
- टेनिस में सानिया मिर्जा और अंकिता रैना की जोड़ी पहले दौर से हुई बाहर
- 10 मीटर एयर राइफल में क्वालीफिकेशन से बाहर हुए दीपक कुमार और दिव्यांश सिंह पंवार
- आस्ट्रेलिया ने भारतीय पुरुष हाकी टीम को 7-1 से बुरी तरह हराया
- भारतीय तैराक श्रीहरि नटराज व माना पटेल भी क्वालीफाई नहीं कर सके

हिमाचल में भूस्खलन से नौ पर्यटकों की मौत

समर नेगी, रिकांगपिओ

हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले की सांगला-छितकुल मार्ग पर बटसेरी के पास भूस्खलन की चपेट में आने से नौ पर्यटकों की मौत हो गई। मृतकों में चार महिलाएं व पांच पुरुष शामिल हैं। हादसे में घायल तीन लोगों को सांगला के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती करवाया गया, जहां से देर शाम उन्हें छुट्टी दे दी गई। भूस्खलन के कारण बास्पा नदी पर करोड़ों की लागत से बना लोहे का पुल भी टूट गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने हादसे पर दुख जताया है।

रविवार दोपहर करीब एक बजे पर्यटकों का वाहन पहाड़ी से गिरे पत्थरों और मलबे की चपेट में आ गया था। वाहन में 11 लोग सवार थे, जबकि एक स्थानीय व्यक्ति भी सड़क से गुजरने के दौरान घायल हुआ है। घटनास्थल से दूसरी तरफ खड़े लोगों ने पहाड़ी से पत्थर गिरते देख सड़क से निकल रहे लोगों को जोर-जोर से चिल्लाकर भागने के लिए कहा। वाहन के चालक को इसका पता नहीं चल पाया। पहाड़ी से जब पत्थर नीचे गिरने लगे तो किसी को बचाव का मौका नहीं मिला। मलबे के कारण यात्री वाहन सड़क से करीब 500 मीटर नीचे बुरी तरह क्षतिग्रस्त होकर दूसरी सड़क तक पहुंच गया। पांच पर्यटकों के शव वाहन के अंदर और आसपास ही थे, लेकिन चार लोगों के शव पहाड़ी पर छिटक गए थे, जिन्हें तलाश करने में बचाव दल को काफी मशक्कत करनी पड़ी।

हादसे की सूचना मिलते ही किन्नौर के विधायक जगत सिंह नेगी, उपायुक्त आबिद हुसैन सादिक, एसपी एसआर राणा, सांगला व रिकांगपिओ थाने की फोर्स, आइटीबीपी व बचाव दल मौके पर पहुंचा। उपायुक्त किन्नौर आबिद हुसैन सादिक ने बताया कि मृतकों व घायलों के स्वजन से संपर्क करने की कोशिश की जा रही है।

शनिवार को भी हुआ भूस्खलन : बटसेरी में शनिवार को हुए भूस्खलन में एक वाहन क्षतिग्रस्त हो गया था, हालांकि पर्यटक बच गए थे। (पेज-5 भी देखें)

- किन्नौर जिले की सांगला-छितकुल सड़क पर बटसेरी में हुआ हादसा
- पहाड़ी से गिरे पत्थरों की चपेट में आकर तीन लोग घायल
- बास्पा नदी पर करोड़ों की लागत से बना लोहे का पुल भी टूटा



किन्नौर जिले के सांगला-छितकुल सड़क मार्ग पर बटसेरी के पास रविवार दोपहर बाद पहाड़ी से हुए भूस्खलन के बाद कुछ इस तरह से टूटा पुल। एएनआइ

पीएम ने की मृतकों के स्वजन को दो लाख देने की घोषणा : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मृतकों के स्वजन को प्रधानमंत्री नेशनल रिलीफ फंड से दो-दो लाख रुपये व घायलों को 50 हजार रुपये देने की घोषणा की है।

किन्नौर जिले में हुए इस हादसे से व्यथित हूं। मृतकों के स्वजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं और घायलों के जल्द स्वस्थ होने की कामना करता हूं।
-राम नाथ कोविन्द (राष्ट्रपति)

किन्नौर में हुआ हादसा अत्यंत दुखद है। इसमें जान गंवाने वालों के स्वजनों के प्रति मेरी संवेदनाएं। मैं घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। -नरेंद्र मोदी

किन्नौर में हुआ हादसा अत्यंत दुखद है। शोकाकुल परिवारों के प्रति अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं।
-जेपी नड्डा, भाजपा अध्यक्ष

पर्यटकों की मौत और घायल होने की खबर अत्यंत दुखद है। ईश्वर दिवंगत की आत्माओं को शांति और शोकग्रस्त परिवारों को संबल प्रदान करें।
-जयराम ठाकुर, सीएम हिमाचल प्रदेश

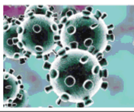
सरकार ने कोरोना से माता-पिता को खोने वाले बच्चों का ब्योरा मांगा

नई दिल्ली, प्रेट्र : महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (डब्ल्यूसीडी) ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से अनुरोध किया है कि वे जिलाधिकारियों को उन बच्चों की पहचान करने का निर्देश दें, जिन्होंने कोरोना महामारी के कारण अपने माता-पिता को खो दिया है। ऐसे बच्चों को 'पीएम-केयर्स फार चिल्ड्रेन' योजना के तहत मदद दी जानी है। मंत्रालय ने उन्हें त्वरित सहायता देने के लिए बनाए गए पोर्टल पर ऐसे बच्चों की विस्तृत जानकारी देने के लिए भी कहा है। सभी राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य सचिवों को लिखे पत्र में, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के सचिव इंदेवर पांडे ने कहा, आवेदन जमा करने, योजना के तहत सहायता प्राप्त करने के लिए पात्र बच्चों की पहचान के वास्ते वेब पोर्टल की शुरुआत की गई है।

22 जुलाई को भेजे पत्र में उन्होंने कहा, 'मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप अपने राज्य के जिलाधिकारियों को पीएम केयर्स योजना के तहत सहायता प्राप्त करने के लिए पात्र बच्चों की पहचान करने और पात्र बच्चों के विवरण देने का निर्देश दें, ताकि उन्हें तत्काल सहायता मिल सके। यह कार्य अगले 15 दिनों में पूरा किया जा सकता है।'

सहायता

- महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को लिखी चिट्ठी
- ऐसे बच्चों को 'पीएम केयर्स योजना के तहत दी जानी है मदद, सरकार ने हेल्प डेस्क भी बनाई



बच्चों की पहचान के लिए अभियान चलाएं जिलाधिकारी

मंत्रालय ने इसके लिए 'हेल्प डेस्क' बनाई है। मंत्रालय ने जिलाधिकारियों को पुलिस, जिला बाल संरक्षण इकाई (डीसीपीयू), चाइल्डलाइन व नागरिक समाज संगठनों की मदद से इन बच्चों की पहचान के लिए अभियान चलाने को कहा है। उन्होंने कहा, जिन बच्चों ने अपने माता-पिता को कोरोना की वजह से खो दिया है और योजना के तहत सहायता की जरूरत है, उन्हें चाइल्डलाइन (1098), डीसीपीयू या किसी अन्य एजेंसी या व्यक्ति द्वारा बाल कल्याण समिति के समक्ष पेश किया जा सकता है।

सीडब्ल्यूसी मौत के कारणों की करेगी जांच : इस योजना के तहत सहायता प्राप्त करने के लिए आवेदन पत्र सीडब्ल्यूसी के समक्ष बच्चों या उनकी देखभाल करने वाले या किसी अन्य एजेंसी द्वारा भरा जा सकता है। उन्होंने कहा कि सीडब्ल्यूसी माता-पिता की मृत्यु के कारणों की पुष्टि उनके मृत्यु प्रमाण पत्र या जांच के जरिये करेगी।

सरकार ने संसद में दिया था बयान : गौरतलब है कि सरकार ने 22 जुलाई को संसद में कहा था कि महामारी की दूसरी लहर के दौरान इस साल अप्रैल से 28 मई तक कुल 645 बच्चों ने अपने माता-पिता को कोरोना की वजह से खो दिया।

सीएम रहूंगा या नहीं, आज पता चल जाएगा : येदियुरप्पा

- कर्नाटक के सीएम ने कहा, उनके बने रहने या पद छोड़ने को लेकर शीर्ष नेतृत्व से नहीं मिला कोई संदेश
- भाजपा अध्यक्ष नड्डा ने नेतृत्व संकट को किया खारिज, कहा- अच्छा काम कर रहे हैं मुख्यमंत्री



कर्नाटक में नेतृत्व परिवर्तन की अटकलों के बीच बीएस येदियुरप्पा (दायें सबसे आगे) ने रविवार को बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया। एएनआइ

येदियुरप्पा सरकार की आज दूसरी वर्षगांठ

मुख्यमंत्री ने कहा कि सोमवार को पहले से तय कार्यक्रम में अपनी उपलब्धियां बताएंगे। उसके बाद जो कुछ भी होगा उसके बारे में सभी को पता चल जाएगा। सोमवार यानी 26 जुलाई को उनकी सरकार के दो साल हो जाएंगे।

बेंगलुरु, प्रेट्र : कर्नाटक में संभावित नेतृत्व परिवर्तन को लेकर रहस्य बरकरार है। मुख्यमंत्री बीएस येदियुरप्पा ने कहा कि वह पद पर बने रहेंगे या नहीं यह सोमवार को पता चलेगा, लेकिन भाजपा के लिए अभी अगले 10 से 15 सालों तक काम करते रहेंगे। वहीं, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने राज्य में नेतृत्व को लेकर जारी अटकलों को खारिज करते हुए कहा, येदियुरप्पा बहुत अच्छा काम कर रहे हैं।

कर्नाटक में पिछले दो दशकों से भाजपा का चेहरा बने 78 वर्षीय येदियुरप्पा लिंगायत समुदाय से आते हैं। समाचार एजेंसी आइएएनएस के मुताबिक, रविवार को उनके समर्थन में लिंगायत समुदाय के दो सौ से ज्यादा संत भी आगे आए। इनमें से एक धड़ा यह भी कह रहा है कि हर पंथ के लिंगायत समुदाय के संतों को अपनी अलग पार्टी बनानी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उत्तर प्रदेश की तरह उन्हीं में से कोई राज्य का मुख्यमंत्री बने। संतों की इस लामबंदी को येदियुरप्पा की तरफ से दबाव बनाने की रणनीति के रूप में देखा जा रहा है। राज्य में लिंगायत समुदाय की आबादी 15 फीसद है।

येदियुरप्पा ने रविवार की शाम कहा, उन्हें अभी पार्टी नेतृत्व से यह संदेश नहीं मिला है कि उन्हें पद पर बने रहना है या इस्तीफा देना है। उन्होंने सोमवार सुबह तक कोई न कोई संदेश मिल जाने का विश्वास व्यक्त किया। उन्होंने कहा, पार्टी का अनुशासित कार्यकर्ता होने के नाते केंद्रीय नेतृत्व के निर्देशों को मानना उनका कर्तव्य है।

येदियुरप्पा के उत्तराधिकारी के रूप में संतोष का नाम सबसे आगे

आइएएनएस के मुताबिक भाजपा नेतृत्व अंदर ही अंदर येदियुरप्पा के उत्तराधिकारी के चयन की प्रक्रिया में जुट गया है। इसमें पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) बीएल संतोष का नाम आगे चल रहा है। संतोष ब्राह्मण समाज से आते हैं जिनकी राज्य में दो फीसद आबादी है। इसके अलावा शीर्ष नेतृत्व लिंगायत समुदाय से आने वाले लक्ष्मण सुवैदी को बनाए रखते हुए चार उप मुख्यमंत्री पर भी विचार कर रहा है। इसमें लिंगायत के अलावा वोक्कालिगा, अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी), अनुसूचित जाति (एससी)/अनुसूचित जनजाति (एसटी) से एक-एक उप मुख्यमंत्री शामिल होंगे।



निर्बाध चल रही सरकार पेज>>4

अनिर्णय के दौर से निकलने में जुटा कांग्रेस नेतृत्व

त्वरित फैसलों से असमंजस

सिद्धू प्रकरण में कैप्टन पर दबाव बनाने में मिली कामयाबी ने दिया सबसे मुफीद मौका, गहलोत पर दबाव के लिए माकन व वेणुगोपाल को भेज पायलट समर्थकों की सत्ता-संगठन में वापसी की तैयार की राह

संजय मिश्र, नई दिल्ली

पंजाब में नवजोत सिंह सिद्धू को प्रदेश अध्यक्ष बनाने के लिए मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह जैसे दिग्गज नेता पर दबाव बनाने में मिली कामयाबी के बाद कांग्रेस नेतृत्व ने राजस्थान में भी मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर दबाव डालने का दांव चलकर अब पार्टी को अनिर्णय और असमंजस के दौर से निकालने की गति बढ़ा दी है। कांग्रेस हाईकमान ने इस कोशिश के तहत जहां अब हर कीमत पर सचिन पायलट और उनके समर्थकों की राजस्थान की सत्ता-संगठन में दोबारा एंट्री की समयसीमा तय कर दी है, वहीं उत्तराखंड से लेकर मणिपुर, गोवा और असम जैसे राज्यों में प्रदेश कांग्रेस में बदलाव को धड़ाधड़ अमलीजामा पहनाया जा रहा है।

पंजाब कांग्रेस का घमासान खत्म करने में पार्टी नेतृत्व को चार महीने से अधिक का समय लग गया। लिहाजा हाईकमान राजस्थान में अशोक गहलोत को अंदरूनी खींचतान खत्म करने के लिए ज्यादा समय देने का जोखिम नहीं लेना चाहता। इसलिए पिछले कई महीनों से दिल्ली आने से बच रहे गहलोत को स्पष्ट संदेश भेजा गया है कि अब पायलट और उनके समर्थकों की सत्ता-संगठन में भागीदारी का मामला लटकाने की गुंजाइश नहीं है। इसके लिए हाईकमान ने राजस्थान के प्रभारी महासचिव अजय माकन के साथ अपने विशेष दूत के तौर पर संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल को रविवार को जयपुर भेजा। माकन और वेणुगोपाल ने विधायकों के साथ बैठक में भी हाईकमान के इन इरादों का संकेत दे दिया।

दरअसल, कांग्रेस नेतृत्व पंजाब प्रकरण में मिली बढ़त से गरम सियासी लोहे का असर ठंडा नहीं पड़ने देना चाहता, इसलिए राजस्थान समेत अन्य राज्यों में अपने मनमाफिक बदलाव को सिरे चढ़ाने का मौका छोड़ना नहीं चाहता। हाईकमान सिद्धू की तरह अब पायलट को दिए अपने वादे को पूरा करना चाहता है। पिछले साल पायलट को बगावत की राह से लौटाने के लिए कांग्रेस नेतृत्व ने उन्हें और उनके समर्थकों की सत्ता-संगठन में सम्मानजनक भागीदारी का वादा किया था।

राजस्थान में सियासी आपरेशन को गति देने से पहले कांग्रेस ने सिद्धू के प्रदेश अध्यक्ष बनने के दिन ही उत्तराखंड कांग्रेस में बड़े बदलाव को अंजाम दिया। गणेश गोंदियाल को प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष, प्रीतम सिंह को विपक्ष का नेता और हरीश रावत को प्रदेश चुनाव अभियान समिति का अध्यक्ष बनाकर हाईकमान ने अपनी पसंद साफ जाहिर कर दी। इसके बाद राहुल गांधी ने गोवा कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं से मुलाकात कर चुनाव से पहले वहां संगठन में होने वाले फेरबदल पर मंत्रणा पूरी कर ली और अब बदलावों का एलान किसी भी दिन हो जाएगा।

विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की हार के बाद असम कांग्रेस में बदलाव को लेकर भी हाईकमान ने असमंजस खत्म करते हुए शनिवार रात रिपुन बोरा की जगह भूपेन बोरा को प्रदेश कांग्रेस का नया अध्यक्ष नियुक्त कर दिया। पंजाब और तेलंगाना की तर्ज पर असम में भी तीन कार्यकारी अध्यक्षों की नियुक्ति की गई है। मणिपुर कांग्रेस अध्यक्ष के इस्तीफे के मद्देनजर नेतृत्व ने शनिवार देर रात लोकेन सिंह को प्रदेश कांग्रेस का अंतरिम अध्यक्ष बना दिया। बीते कुछ दिनों के भीतर हुए इन त्वरित फैसलों से साफ है कि बढ़ रही चुनौतियों के मद्देनजर हाईकमान को अपनी दुविधा और असमंजस की स्थिति से बाहर आने का यह सबसे मुफीद मौका नजर आ रहा है।

उत्तराखंड, असम और मणिपुर में भी हुई नई नियुक्तियां, गोवा में बदलाव को दिया जा रहा अंतिम रूप

जयपुर में रविवार को प्रदेश कांग्रेस के दफ्तर पर मीडिया के सवालों के जवाब देते कांग्रेस नेता एवं राजस्थान के प्रभारी अजय माकन। साथ में हैं पार्टी महासचिव केसी वेणुगोपाल (बाएं से दूसरे)। प्रेट्र >>



125 बिस्तरों वाला कोरोना अस्पताल बाला साहिब अस्पताल परिसर में अगस्त के पहले सप्ताह शुरू हो जाएगा। इसे दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा तैयार किया जा रहा है।

मल्टीलेवल पार्किंग और आटो को रूट आधारित परमिट देने का प्रस्ताव

माला दीक्षित, नई दिल्ली

- डिपो में बसों के प्रवेश और निकासी के लिए अलग गेट का सुझाव
- कौशांबी का जाम खत्म करने के लिए कमेटी ने सुप्रीम कोर्ट में दाखिल किया ट्रैफिक प्लान
- अदालत ने दिल्ली और उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ अधिकारियों की कमेटी का किया था गठन


प्लान दाखिल : सुप्रीम कोर्ट। फाइल

गाजियाबाद के कौशांबी में ट्रैफिक जाम खत्म करने और आवागमन सुचारु बनाने के लिए सुप्रीम द्वारा गठित दिल्ली और उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ अधिकारियों की कमेटी ने कोर्ट में ट्रैफिक प्लान दाखिल किया है। ट्रैफिक प्लान में लांग टर्म और शार्ट टर्म दोनों योजनाएं दी गई हैं, ताकि शुरुआत में फौरी तौर पर और बाद में स्थायी तौर पर ट्रैफिक जाम की समस्या हल हो। प्रस्तावित योजना में बसों को नियमित करने के लिए कौशांबी डिपो में बसों का प्रवेश और निकास अलग-अलग द्वारों से करने और उल्टी दिशा से आने वाली बसों को रोकने के लिए लो-हाइट बैरियर लगाने का प्रस्ताव है। सड़क पर और सर्विस रोड पर खड़े वाहनों की समस्या से निपटने के लिए मल्टीलेवल पार्किंग के साथ और ज्यादा आटो रिक्शा को इजाजत न देने की बात कही गई है। यह भी प्रस्ताव है कि आटो रिक्शा को एरिया के बजाय रूट आधारित परमिट दिया जाए तथा हर रूट के लिए अलग रंग आवंटित हो। अतिक्रमण हटाने और रास्ते मे आड़े आ रहे ईडीएमसी टोल बूथ, ईडीएमसी पोस्ट और प्रीपेड बूथ को भी 20 मीटर आगे स्थानांतरित करने की बात की गई है। कमेटी की यह रिपोर्ट गाजियाबाद के जिलाधिकारी की ओर से सुप्रीम कोर्ट में दाखिल की गई है। सुप्रीम कोर्ट मामले में 29 जुलाई को सुनवाई करेगा।

सुप्रीम कोर्ट ने गाजियाबाद के कौशांबी में ट्रैफिक जाम की समस्या उठाने वाले मामले में सुनवाई करते हुए 24 मार्च को दिल्ली और उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ अधिकारियों की नौ सदस्यीय कमेटी गठित की थी। कोर्ट ने कमेटी से समग्र ट्रैफिक प्लान तैयार कर पेश करने को कहा था। कमेटी ने स्थिति की समीक्षा कर यह प्लान तैयार किया है। कमेटी ने माना है कि समस्या की जड़ ट्रैफिक अनुशासन का न होना, आटो रिक्शा और ई-रिक्शा की संख्या रेगुलेट न होना और उनके नियम और रूट तय न होने के साथ ही पार्किंग की कमी है।

ट्रैफिक समस्याएं चिह्नित करते हुए कहा गया है कि यू-टर्न, इंटरसेक्शन और जंक्शन पर ट्रैफिक की अफरा-तफरी रहती है। बसें इंटरसेक्शन के पास रुकी रहती हैं। बसें सवारियां चढ़ाने और उतारने के लिए बीच सड़क पर रुक जाती हैं। बसें डिपो में ज्यादा देर रुकती हैं, जिससे कि अन्य बसों को अंदर जाने के लिए सड़क पर इंतजार करना पड़ता है। आटो रिक्शा और ई-रिक्शा नियम का पालन नहीं करते और कहीं भी सड़क पर खड़े रहते हैं।

मेट्रो स्टेशन पर कम पार्किंग होने के कारण सड़क और सर्विस लेन में वाहन खड़े रहते हैं। होटल, अस्पताल और कमर्शियल एरिया में कम या पार्किंग बिल्कुल न होने के कारण भी वाहन सड़क पर खड़े रहते हैं। डीटीसी बसों की पार्किंग पर्याप्त नहीं है।

ट्रैफिक जाम से निपटने के लिए ये सुझाव दिए गए हैं

शार्ट टर्म प्लान

शार्ट टर्म योजना के मुताबिक डाक्टर बर्मन रोड पर बाएं और दाहिने दोनों ओर यू-टर्न बनाए जाएंगे। पैसिफिक माल के सामने वाला यू-टर्न सौ मीटर आगे बढ़ाया जाएगा और अलग लेन बनाई जाएगी। महाराजपुर का टी प्वाइंट बंद होगा। आटो रिक्शा की पार्किंग का निश्चित स्थान चिह्नित होगा। कौशांबी में दिल्ली बार्डर पर आनंद विहार की ओर खाली जगह को आटो पार्किंग और स्ट्रीट वेंडर के लिए वेंडिंग जोन बनाया जाएगा। पैसिफिक माल के सामने और सौर ऊर्जा मार्ग कौशांबी बस स्टैंड गेट नंबर एक पर आटो पार्किंग की जगह चिह्नित होगी। आटो सिर्फ यहीं पार्क होंगे। अभी आटो को एरिया के आधार पर परमिट जारी होता है, जिससे कि वे अपने एरिया में स्वतंत्र घूमते रहते हैं। एरिया बेसिस पर परमिट देने की नीति पर पुनर्विचार होना चाहिए और परमिट रूट बेसिस पर जारी होने चाहिए। कौशांबी डिपो में बसों का प्रवेश सौर ऊर्जा मार्ग गेट नंबर एक से होगा और निकासी गेट नंबर तीन से होगी। प्राइवेट बसों (यूपीएसआरटीसी) के अलग रास्ते के लिए कलर कोडिंग का प्रयोग होगा। दिल्ली की अथारिटीज के बारे में कहा गया है कि कौशांबी में ईडीएम माल पर स्थित ईडीएमसी टोल और पुलिस बूथ ट्रैफिक में बाधा पैदा करते हैं।

लांग टर्म प्लान

लांग टर्म योजना में कौशांबी मेट्रो स्टेशन पर पार्किंग की समस्या खत्म करने के लिए डीएमआरसी को मल्टीलेवल पार्किंग उपलब्ध कराने का प्रस्ताव है। कमर्शियल कांप्लेक्स, अस्पताल और बैंक आने वाले लोग अभी सर्विस लेन में वाहन खड़े करते हैं। यहां पार्किंग की समस्या खत्म करने के लिए जीडीए द्वारा मल्टीलेवल पार्किंग तैयार किए जाने का प्रस्ताव है। सड़क पर वाहनों का अतिक्रमण खत्म करने, कौशांबी बस डिपो को इंटीग्रेटेड बस पोर्ट की तरह पीपीपी माडल पर विकसित किए जाने की बात कही गई है। इसमें दोपहिया और चार पहिया वाहनों के लिए अंडरग्राउंड पार्किंग बनेगी। सीएनजी बसों को महाराजपुर से ही रेगुलेट किए जाने और उनके लिए वैकल्पिक पार्किंग की जरूरत बताई गई है। दिल्ली के संबंध में कहा गया है कि ज्वाइंट इंस्पेक्शन कमेटी ने तय किया है कि रोड नंबर 56 पर फुट ओवर ब्रिज के बाईं तरफ स्थान खाली किया जाए और डीटीसी बस स्टाप को कौशांबी बस डिपो की दीवार तक स्थानांतरित कर दिया जाए। अभी बसें डिपो में बहुत समय लगाती हैं, जिससे बाकी बसें रोड नंबर 56 पर खड़ी इंतजार करती हैं।

नजरबंदी के खिलाफ ड्रग्स तस्कर की याचिका पर केंद्र को नोटिस

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : नजरबंदी को गैरकानूनी बताते हुए ड्रग्स तस्कर शराफत शेख उर्फ एमडी अयूब द्वारा दायर की गई याचिका पर दिल्ली हाई कोर्ट ने केंद्र सरकार से जवाब मांगा है। रिहाई की मांग वाली शेख की याचिका पर न्यायमूर्ति सिद्धार्थ मृदुल व न्यायमूर्ति एजे भंभानी की पीठ ने केंद्र सरकार को नोटिस जारी कर मामले की सुनवाई अगले माह तक के लिए स्थगित कर दी।

नारकोटिक्स ड्रग्स अधिनियम के तहत हिरासत को लेकर केंद्र सरकार के संयुक्त सचिव द्वारा एक अप्रैल 2021 को जारी किए गए आदेश को शेख ने चुनौती दी है। साथ ही इसी कानून के तहत केंद्र के उपसचिव के 15 जून 2021 के एक अन्य आदेश को भी चुनौती देते हुए उसे रद करने की मांग की है। दिल्ली पुलिस ने शराफत के खिलाफ नारकोटिक्स ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक पदार्थ अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया था। इस नियम के तहत बिना जमानत के एक वर्ष की अवधि के लिए किसी शख्स की नजरबंदी की जा सकती है।

मेट्रो व बसों में आज से सभी सीटों पर सवारी

अनलाक ▶ सिनेमा हाल भी 50 फीसद क्षमता के साथ खुलेंगे

शादी और अंतिम संस्कार में 100 लोगों के शामिल होने की इजाजत

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली


लाकडाउन के बाद सोमवार से अब बसों में पूरी क्षमता से यात्रियों के बैठाने की आदेश के बाद इस तरह बस में चढ़ाने की नहीं होगी मारामारी। संजय

कोरोना की दूसरी लहर के दौरान लगाए गए लाकडाउन के बाद अब सोमवार से बसों और मेट्रो में यात्री सभी सीटों पर बैठकर यात्रा कर सकेंगे। हालांकि, खड़े होकर यात्रा करने की अनुमति नहीं दी गई है। दिल्ली डिजास्टर मैनेजमेंट अथारिटी (डीडीएमए) ने थियेटर, मल्टीप्लेक्स, आडिटोरियम एवं सिनेमा हाल को 50 फीसद क्षमता के साथ खोलने की छूट दी है। इसके अलावा शादी एवं अंतिम संस्कार में भी 100 लोग शामिल हो सकेंगे। स्पा खोलने की भी इजाजत दी गई है।

दिल्ली डिजास्टर मैनेजमेंट अथारिटी (डीडीएमए) की ओर से मुख्य सचिव विजय देव ने शनिवार को इस संबंध में आदेश जारी कर दिया था। कोरोना प्रोटोकाल के तहत अभी तक मेट्रो और बसों में एक सीट छोड़कर ही बैठने की अनुमति थी। इससे यात्रियों को मेट्रो और डीटीसी, क्लस्टर एवं इंटरस्टेट बसों के इंतजार में काफी देर खड़े रहना होता था। जनता की परेशानी को देखते हुए दिल्ली सरकार ने गत दिनों इस बारे में परिवहन विभाग से प्रस्ताव तैयार कराकर डीडीएमए को भेजा था। अब लोगों को परिवहन के क्षेत्र में समस्याओं से बहुत हद तक निजात मिल जाएगी। हालांकि, इस दौरान अधिकारियों को कोरोना प्रोटोकाल का पालन सुनिश्चित करने के आदेश दिए गए हैं। संबंधित डीएम एवं डीसीपी इलाके में कोरोना प्रोटोकाल का पालन कराएंगे और इसका उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई सुनिश्चित करेंगे।

मेट्रो स्टेशन के अभी नहीं खुलेंगे सभी गेट : दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) ने बताया कि अभी मेट्रो स्टेशन के सभी गेट नहीं खोले जाएंगे। लेकिन 16 स्टेशनों पर एक-एक अतिरिक्त गेट खोलने का फैसला किया है। इसमें से ब्लू लाइन के आठ, यलो लाइन के सात व वायलेट लाइन का एक स्टेशन शामिल है। अन्य स्टेशनों पर पहले की तरह निर्धारित गेटों से ही प्रवेश मिलेगा।

छूट न मिलने से आटो, टैक्सी चालक नाराज : डीडीएमए ने शनिवार को आटो, टैक्सी, ग्रामीण सेवा और ई-रिक्शा को पूरी क्षमता से यात्री बैठाने की अनुमति नहीं दी है। आटो, टैक्सी, ई-रिक्शा, कैब, ग्रामीण सेवा और फटफट सेवा में अभी दो यात्री ही बैठाए जा सकते हैं। मैक्सी कैब में पांच यात्री और आरटीवी में 11 यात्री बैठाने की अनुमति है।

आल दिल्ली आटो टैक्सी ट्रांसपोर्ट कांग्रेस यूनियन के अध्यक्ष किशन वर्मा ने डीडीएमए द्वारा आटो टैक्सी वालों को छूट न देने के फैसले को गलत बताया है। उन्होंने कहा है कि आटो टैक्सी वालों को दो सवारियां बैठाने की अनुमति उस समय से है, जब कोरोना फैल चुका था। अब कोरोना का संक्रमण कम हो गया है। ऐसे में प्रतिबंध को हटाया जाना चाहिए था। ग्रामीण सेवा यूनियन के महामंत्री चंदू चौरसिया ने कहा है कि डीडीएमए का नया आदेश उनके साथ नाइंसाफी है। डीटीसी बसों और मेट्रो में सभी सीटों पर यात्री बैठाने की अनुमति दे दी है, जबकि उनके साथ सौतेला व्यवहार किया गया है।

... लेकिन फिल्में देखने के लिए थोड़ा और इंतजार

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : राजधानी में मल्टीप्लेक्स व सिनेमा हाल को खोलने की अनुमति मिल गई है, लेकिन रुपहले पर्दे पर फिल्में देखने की चाहत के लिए दिल्ली वालों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। इसके संचालकों के मुताबिक अभी कोई फिल्म उनके पास दिखाने के लिए नहीं है। साथ ही कोरोना संक्रमण को लेकर जारी दिशा-निर्देशों के मुताबिक इंतजाम में कुछ दिन लग जाएंगे। ऐसे में शुक्रवार को नई फिल्म की रिलीज के साथ सिनेमाहाल दर्शकों के लिए खोले जाने की उम्मीद है।

कर्मचारियों के लिए टीकाकरण अनिवार्य: पुरानी दिल्ली स्थित डिलाइट्स सिनेमा के संचालक राजकुमार मेहरोत्रा ने बताया कि सभी कर्मचारियों के लिए टीकाकरण अनिवार्य किया गया है। जिन कर्मचारियों को टीके नहीं लगे हैं, उनके लिए कुछ दिन की मोहलत रहेगी, क्योंकि सिनेमा हाल शुक्रवार से खुलेंगे।

मास्क रहेगा अनिवार्य: सिनेमा हाल में बैठने वालों के साथ कर्मचारियों के लिए भी मास्क अनिवार्य रहेगा। सिनेमाघर में आने वाले हर किसी की थर्मल स्क्रीनिंग होगी। हाथ सैनिटाइज करने की सुविधा रहेगी। एक सीट छोड़कर दर्शकों को बैठाया जाएगा। वहीं, कर्मचारी ग्लब्स, मास्क के साथ फेसशील्ड भी लगाकर रखेंगे।

आनलाइन बुकिंग भी नहीं हुई शुरू : सिनेमाघर व मल्टीप्लेक्स खुलने की जानकारी मिलने पर दर्शकों ने आनलाइन टिकट बुक कराने की कोशिश की, लेकिन उन्हें निराशा हाथ लगी। किसी भी मल्टीप्लेक्स में टिकट बुक नहीं हो रहे थे। इस संबंध में लोग सिनेमाघर व मल्टीप्लेक्स को फोन करके जानकारी ले रहे थे। पीवीआर के प्रवक्ता के मुताबिक अभी कंपनी द्वारा मल्टीप्लेक्स खोलने की जानकारी नहीं दी गई है। इसलिए कोई बुकिंग नहीं ली जा रही है।

कोरोना संक्रमण दर और नए मामले स्थिर

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : कोरोना संक्रमण की दर पिछले कुछ दिनों से स्थिर हो गई है। पिछले तीन दिनों से यह दर 0.09 फीसद बनी हुई है। वहीं, नए मामले भी लगातार दूसरे दिन 66 आए हैं। गत 19 जुलाई को यह दर 0.06 फीसद थी। इसके बाद इसमें मामूली बढ़ोतरी हुई है। पिछले 24 घंटे में कोरोना के 72 मरीज स्वस्थ हुए हैं। इस तरह से अब राजधानी में 579 सक्रिय मामले रह गए हैं। पिछले एक दिन में दो मरीजों की मौत भी दर्ज की गई है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी मेडिकल बुलेटिन के मुताबिक पिछले 24 घंटे में 70,758 सैंपल की जांच की गई। इसमें आरटीपीसीआर से 49,568 और एंटीजन किट से 21,256 जांच की गई। अब तक राजधानी में कुल 2,32,58,328 सैंपल की जांच हो चुकी है। अब तक 14,35,910 लोग कोरोना से संक्रमित हो चुके हैं। इनमें से 14,10,288 लोग ठीक हो चुके हैं। वहीं 25,043 लोगों ने दम तोड़ दिया है। इस तरह से इस महामारी से मृत्यु दर 1.74 फीसद है। अस्पतालों में अब कोरोना के 337 मरीज रह गए हैं। वहीं, 167 मरीज घर में क्वारंटाइन हैं।

मानव जीवन के प्रति लापरवाह रही दिल्ली सरकार : एनजीटी

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- पश्चिमी दिल्ली की एक फैक्ट्री में आग लगने से छह श्रमिकों की मौत का मामला
- पीड़ित परिवार को मुआवजा देने के लिए कदम नहीं उठाने पर लगाई फटकार



सख्त टिप्पणी : एनजीटी दफ्तर की फाइल फोटो

पश्चिमी दिल्ली की एक फैक्ट्री में आग लगने की घटना में छह श्रमिकों की मौत के मामले में नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने दिल्ली सरकार को फटकार लगाई है। एनजीटी अध्यक्ष न्यायमूर्ति आदर्श कुमार गोयल की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि मानव जीवन के प्रति दिल्ली सरकार का रवैया पूरी तरह से लापरवाही वाला रहा है।

एनजीटी ने कहा कि जिलाधिकारी ने सूचित किया कि मृतकों के स्वजन को 50-50 हजार रुपये अनुग्रह राशि देने की घोषणा की गई है, लेकिन अब तक भुगतान नहीं किया गया है। ये चौंकाने वाले तथ्य संबंधित अधिकारियों के इंसान के प्रति चिंता की कमी को दर्शाते हैं। पीड़ित परिवार को मुआवजा देने के लिए प्रशासन ने कोई कदम नहीं उठाया। इतना ही नहीं, छह श्रमिकों की मौत होने के बावजूद मामले को हत्या के प्रयास के तहत दर्ज करने पर एनजीटी ने आश्चर्य भी व्यक्त किया। कहा कि यह भी आश्चर्यजनक है कि नोटिस के बावजूद निदेशक औद्योगिक सुरक्षा और विचाराधीन इकाई ने पेश होने की जहमत नहीं उठाई। वहीं दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) ने इस विषय पर कोई जानकारी देने में असमर्थता दिखाते हुए महज जुमलेबाजी की है। एनजीटी ने कहा कि इस मामले में पर्यावरण कानूनों का प्रथम दृष्टया उल्लंघन किया गया है और पीड़ितों को एनजीटी अधिनियम की धारा-15 के तहत मुआवजा दिया जाना जरूरी है।

हालांकि, एनजीटी ने कहा कि मामले में अंतिम आदेश पारित करने से पहले प्रामाणिक जानकारी होना आवश्यक है। ऐसे में घटना के कारणों का पता लगाने के लिए केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीसी), दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी), पश्चिमी दिल्ली के जिला मजिस्ट्रेट, औद्योगिक सुरक्षा और स्वास्थ्य के निदेशक व बाहरी दिल्ली उपायुक्त की एक समिति का गठन किया जाता है। समिति विशेष रूप से यह पता लगाएगी कि परिसर में कोई खतरनाक ज्वलनशील सामग्री संग्रहीत की गई थी या नहीं। सीपीसीबी और डीपीसीसी समन्वय और अनुपालन के लिए नोडल एजेंसी होंगे। समिति एक महीने के अंदर समिति ई-मेल के माध्यम से रिपोर्ट भेज सकती है।

बता दें कि एनजीटी ने आग की घटना में श्रमिकों के मरने और इकाई मालिक के गिरफ्तार होने की समाचार पत्रों में प्रकाशित खबर का संज्ञान लिया था। पश्चिमी दिल्ली के उद्योग नगर स्थित जूता एवं कपड़ा उत्पादन इकाई में लगी भयंकर आग में छह श्रमिकों की मौत हो गई थी। वहीं, छह श्रमिकों को दमकल विभाग की टीम ने बचा लिया था।

एयरपोर्ट का स्कैनर मशीन आपरेटर आधा किलो चरस के साथ गिरफ्तार

जागरण संवाददाता, ग्रेटर नोएडा

- फ्लाइट से दूसरे देशों में भी चरस भेजी जाने की आशंका, एयरपोर्ट प्राधिकरण से पत्राचार करेगी पुलिस
- ईकोटेक तीन कोतवाली पुलिस ने की कार्रवाई, हिमाचल प्रदेश के कसौल से आती है चरस


पुलिस की गिरफ्त में पकड़ा गया स्कैनर मशीन आपरेटर आशीष तोमर। सौ. पुलिस

ईकोटेक तीन कोतवाली पुलिस ने दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे की गुड्स स्कैनर मशीन के आपरेटर को आधा किलो चरस के साथ गिरफ्तार किया है। पूछताछ में पता चला है कि आरोपित के पास चरस हिमाचल प्रदेश के कसौल से आती है। कसौल में रहने वाला रावत आरोपित का साथी है जो उसे चरस उपलब्ध कराता है। पुलिस उसकी तलाश कर रही है। वहीं आशंका है कि फ्लाइट से दूसरे देशों में भी चरस भेजी गई है। पुलिस मामले में एयरपोर्ट प्राधिकरण से पत्राचार कर बात करेगी।

ईकोटेक तीन कोतवाली प्रभारी भुवनेश शर्मा ने बताया कि तस्कर की पहचान आशीष तोमर के रूप में हुई है। वह मेरठ के शास्त्री नगर का रहने वाला है। वर्तमान में वह चिंतन पार्क दिल्ली में रह रहा था। उसको सुत्याना कट के समीप से रविवार सुबह दबोचा गया है। आशीष के कब्जे से कार, मोबाइल व चरस बरामद किया गया है। पुलिस ने उससे गहनता से पूछताछ की तो पता चला कि वह पिछले एक साल से चरस तस्करी के काम में लिप्त है। उसके संपर्क में कई छात्र भी हैं, जिनको वह चरस बेचता है। चरस बेचने के संबंध में ही वह ग्रेटर नोएडा आया था और पुलिस ने उसे धर दबोचा।

एयरपोर्ट की सुरक्षा पर सवाल

पुलिस ने भी इस बात को माना है कि एयरपोर्ट पर नौकरी करने वाला स्कैनर मशीन आपरेटर का पद महत्वपूर्ण है। ऐसे में उस व्यक्ति का मादक पदार्थ की तस्करी में लिप्त होना चिंताजनक है। पुलिस इसकी तह तक जाने का प्रयास करेगी।

डीयू में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में आवेदन आज से

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : दिल्ली विश्वविद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2021-22 में एमफिल, पीएचडी व स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में दाखिले की दौड़ सोमवार से शुरू हो जाएगी। छात्र स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए आवेदन कर सकेंगे। डीयू ने दाखिले के लिए नई वेबसाइट तैयार की है। जिस पर पीएचडी-एमफिल, स्नातकोत्तर व स्नातक में पंजीकरण के लिए लिंक उपलब्ध रहेगा।

डीयू प्रशासन ने बताया कि लगातार दूसरे साल स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में दाखिले केवल प्रवेश परीक्षा के आधार पर होंगे। दाखिले के लिए साक्षात्कार नहीं लिया जाएगा। डीयू दाखिला डीन प्रो राजीव गुप्ता ने बताया कि इस साल दाखिले की प्रक्रिया में कोई बदलाव नहीं किया गया है। कोरोना संक्रमण को देखते हुए गत वर्ष की भांति स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में दाखिले प्रवेश परीक्षा के आधार पर होंगे।

सौ करोड़ की धोखाधड़ी में एमडी गिरफ्तार

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

कसा शिकंजा

- आइएल एंड एफएस ट्रांसपोर्टेशन नेटवर्क लिमिटेड के एमडी पर हेराफेरी का आरोप
- गुरुग्राम में रैपिड मेट्रो रेल में काम कराने के नाम पर कंपनी के एमडी ने पैसों का गलत तरीके से किया लेनदेन


रामचंद करुणाकरण। सौजन्य दिल्ली पुलिस

सौ करोड़ रुपये की धोखाधड़ी के आरोप में इंफ्रास्ट्रक्चर लीजिंग फाइनेंशियल सर्विसेज (आइएल एंड एफएस) ट्रांसपोर्टेशन नेटवर्क लिमिटेड के प्रबंधन निदेशक रामचंद करुणाकरण को रविवार को गिरफ्तार कर लिया गया। यह गिरफ्तारी दिल्ली पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) ने रविवार को मुंबई से की है।

आरोप है कि रामचंद करुणाकरण ने कई साथियों के साथ मिलकर गुरुग्राम में रैपिड मेट्रो रेल में काम कराने के नाम पैसों का दुरुपयोग किया। अतिरिक्त पुलिस आयुक्त आरके सिंह के मुताबिक, 2018 में नई दिल्ली की एंसो इंफ्रास्ट्रक्चर कंपनी के निदेशक आशीष बेगवानी ने इस संबंध में शिकायत दर्ज कराई थी। बताया था कि अगस्त, 2010 में गुरुग्राम में रैपिड मेट्रो परियोजना के लिए आइएल एंड एफएस ट्रांसपोर्टेशन नेटवर्क लिमिटेड कंपनी में 170 करोड़ रुपये का निवेश किया था। इसके बदले उन्हें कंपनी में 15 फीसद शेयर की हिस्सेदारी दी थी। कुछ समय बाद पता चला कि कंपनी ने उन पैसों का उपयोग परियोजना में न करके अपने हित में इस्तेमाल कर लिया। कंपनी ने उन पैसों को फर्जी कंपनियों में लगा कर फर्जी बिल बनाया और बहीखाते में बढ़ा हुआ खर्चा और कम लाभ दिखाया। इस तरह से करीब सौ करोड़ रुपये का फर्जीवाड़ा किया गया। इस मामले में ईओडब्ल्यू ने आइएल एंड एफएस ट्रांसपोर्टेशन नेटवर्क लिमिटेड के प्रबंध निदेशक रामचंद करुणाकरण, निदेशक रवि पार्थसारथी और हरि शंकरन के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की।

जांच में पता चला कि विभिन्न फर्जी कंपनियों के माध्यम से पैसों का लेनदेन किया गया। बगैर किसी काम के कई कंपनियों को पैसों का भुगतान किया गया। करुणाकरण 2008 से उक्त कंपनी का एमडी है।

रामचंद करुणाकरण को भारी भरकम पैसों के लेनदेन के मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) मुंबई में पहले ही गिरफ्तार कर चुका है। कई अन्य मामलों में भी जांच की जा रही है। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि एसीपी वीरेंद्र सिंह साजवान की देखरेख में काम कर रही टीम ने उसको मुंबई की जेल से गिरफ्तार किया।

दिखाई हिम्मत

फरिश्ता बना आरपीएफ जवान, यात्री की बची जान

दिल्ली कैंट रेलवे स्टेशन पर अपनी जान की परवाह किए बगैर ट्रेन व प्लेटफार्म के बीच फंसे यात्री को बचाया, इंटरनेट मीडिया में भी हो रही खूब चर्चा

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली


दिल्ली कैंट रेलवे स्टेशन पर यात्री को खींचते कांस्टेबल राजबीर। सौजन्य सीसीटीवी फुटेज

जाको राखे साइयां मार सके न कोई... यह बात दिल्ली कैंट रेलवे स्टेशन पर चरितार्थ हुई। आरपीएफ का एक कांस्टेबल ट्रेन व प्लेटफार्म के बीच फंसे यात्री के लिए फरिश्ता बनकर आया और उसे मौत के मुंह से निकाल लाया। यह पूरी घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई और देखते ही देखते कांस्टेबल राजबीर की हिम्मत व हौसले की चर्चा रेलवे अधिकारियों से लेकर इंटरनेट मीडिया पर होने लगी।

हुआ यूं कि 23 जुलाई की रात सराय रोहिल्ला से जयपुर जाने वाली 04739 नंबर की ट्रेन रात के 10 बजकर 40 मिनट पर दिल्ली कैंट रेलवे स्टेशन पहुंची। यहां दो मिनट के स्टापेज के बाद ट्रेन धीरे-धीरे चलने लगी। इसी दौरान दो भारी बैग के साथ एक यात्री प्लेटफार्म पर ट्रेन की तरफ तेजी से दौड़ा। चलती ट्रेन की गेट पर पहले उसने अपना सामान रखा, फिर उसमें चढ़ने लगा। इसी दौरान उसका पैर फिसल गया और वह प्लेटफार्म व ट्रेन के बीच फंस गया। तभी कांस्टेबल राजबीर की नजर उस पर पड़ी और वह भागते हुए यात्री के पास पहुंचे और निकालने की कोशिश करने लगे।

> अपनी जान की परवाह किए बगैर कांस्टेबल राजबीर ने समय पर अपनी हिम्मत व हौसले का परिचय दिया। यह अन्य लोगों के लिए प्रेरित करने वाला वाकया है। मैं विभाग के उच्च अधिकारियों को पत्र लिखूंगा, जिससे कि राजबीर को पुरस्कृत किया जा सके।
> -मुकेश कुमार, एसएचओ, आरपीएफ दिल्ली कैंट

पहले प्रयास में यात्री को निकालने के दौरान वह खुद भी असंतुलित होकर प्लेटफार्म पर गिर गए। इस दौरान यात्री ट्रेन के साथ घसीटता हुआ करीब पांच मीटर आगे चला गया। दोबारा से राजबीर यात्री के पास पहुंचे और उसे बाहर खींच लिया। इस दौरान किसी ने चेन पुलिंग कर ट्रेन रोक दी और बड़ा हादसा टल गया।

कांस्टेबल राजबीर ने बताया कि पहली बार जब निकालने का प्रयास कर रहा था, उस दौरान यात्री ने ट्रेन के गेट पर लगे हैंडल को जोर से पकड़ रखा था। इस कारण वह बाहर नहीं आ पाया। दूसरी बार के प्रयास में सफलता मिली।

धनखड़ हत्याकांड में तीन अगस्त तक दाखिल हो सकता है आरोप पत्र

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: पहलवान सागर धनखड़ हत्याकांड में क्राइम ब्रांच की तफ्तीश लगभग पूरी हो चुकी है। मामले में ओलिंपियन सुशील कुमार सहित कुल 18 आरोपित बनाए गए हैं। इनमें 14 को पुलिस अब तक गिरफ्तार कर चुकी है। इनके खिलाफ तीन अगस्त तक क्राइम ब्रांच आरोप पत्र दायर कर सकती है। इसके अलावा जो आरोपित अभी गिरफ्तार नहीं हुए हैं, उनके लिए पूरक आरोप पत्र दाखिल किया जाएगा। पुलिस सूत्रों की मानें तो सुशील सहित अन्य आरोपितों के खिलाफ इलेक्ट्रानिक साक्ष्य मिले हैं। सुशील ने वारदात की साजिश रची और अपने खास सहयोगी अजय सहरावत के जरिये दिल्ली, हरियाणा व पंजाब से पहलवानों व गैंगस्टर नीरज बवाना व काला जठेड़ी के गुर्गों को दिल्ली बुलाया था। आरोप पत्र में सभी के मोबाइल से साजिश की कड़ी को जोड़ा गया है।

कुख्यात किशन पहलवान गिरोह का बदमाश सुनील दहिया गिरफ्तार

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- कबड्डी खिलाड़ी व कोच है दहिया
- जाफरपुर में चलाता है स्पोर्ट्स क्लब

दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने नजफगढ़ के रहने वाले कुख्यात किशन पहलवान गिरोह के बदमाश सुनील दहिया को गिरफ्तार कर लिया है। किशन के विरोधी हेमंत गिरोह के बदमाश पर गोलियां चलाने के मामले में वह वांछित था। उसके पास से सेमी ऑटोमैटिक पिस्टल व दो कारतूस बरामद किए गए।

संयुक्त आयुक्त क्राइम ब्रांच आलोक कुमार के मुताबिक सुनील दहिया नजफगढ़ का रहने वाला है। जाफरपुर में उसका भारत माता स्पोर्ट्स क्लब नाम से स्पोर्ट्स क्लब है। उसके चाचा जय भगवान पेशे से ठेकेदार हैं। उन्हीं ने सुनील का परिचय किशन पहलवान से कराया था। उसके बाद उसने किशन का गिरोह ज्वाइन कर लिया था। किशन पहलवान व हेमंत के बीच सालों से गैंगवार चल रहा है। दोनों नजफगढ़ के ही रहने वाले हैं। दिल्ली-एनसीआर में दोनों गिरोह के बदमाशों के खिलाफ हत्या व हत्या के प्रयास के 100 से ज्यादा मामले दर्ज हैं। हेमंत अभी तिहाड़ जेल में बंद है। बीते 11 जनवरी को सुनील अपने चाचा जय भगवान के साथ एक दोस्त के घर आया था। वहां अमित शौकीन से सुनील किसी प्रापर्टी के संबंध में बातचीत करने आया था। अमित, हेमंत गिरोह का नजदीकी है। दोनों के बीच किसी बात पर झगड़ा हो जाने से अमित दोस्त की कार से वहां से भाग गया था। अमित के चले जाने से सुनील अपने कुछ साथियों के साथ अमित के घर पहुंच गया और फोन कर बाहर निकलने को कहा। घर से बाहर आने पर सुनील के एक साथी ने अमित के चचेरे भाई अंकुश को गोली मार दी।

2030 तक कार्बन उत्सर्जन कम करने का अनुरोध किया है भारत ने जी 20 देशों से। पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने सम्मेलन में कहा कुछ देशों ने वर्ष 2050 तक कार्बन उत्सर्जन को शून्य करने का संकल्प लिया है लेकिन इससे समस्या हल नहीं होगी।

पेगासस जासूसी के आरोप निराधार, विपक्ष के पास कोई मुद्दा नहीं : नड्डा

पणजी, प्रेट्र : भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने रविवार को पेगासस जासूसी के आरोपों को निराधार बताते हुए कहा कि यह कोई मुद्दा नहीं है। कांग्रेस के नेतृत्व वाले विपक्ष के पास लोगों की ओर से उठाने के लिए कोई मुद्दा नहीं है इसलिए वे इस तरह के मुद्दे उठा रहे हैं।

- कांग्रेस और अन्य विपक्षी पार्टियां हताश व मुद्दाविहीन, इसीलिए संसद की कार्यवाही कर रहीं बाधित

दो दिवसीय गोवा यात्रा की समाप्ति पर पत्रकारों से बातचीत में नड्डा ने संसद की कार्यवाही में बार-बार पड़ रही बाधा के बारे में कहा, 'हम विभिन्न मुद्दों पर चर्चा के लिए तैयार है, लेकिन अन्य विपक्षी पार्टियों के साथ कांग्रेस हताश और मुद्दाविहीन हो गई है इसीलिए उन्होंने कार्यवाही में बाधा डालने का सहारा लिया है। उन्हें समझ ही नहीं आ रहा है कि क्या करें। वे मुद्दाविहीन चीजों पर संसद को रोकना चाहते हैं।'

उन्होंने आगे कहा, 'लेकिन लोग जानते हैं कि उनकी हर तरह की कोशिशों के बावजूद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में संसद ने उत्पादकता के सभी रिकार्ड तोड़ दिए हैं।' याद दिला दें कि पिछले रविवार को अंतरराष्ट्रीय मीडिया के एक कंसोर्टियम ने रिपोर्ट दी थी कि 300 से ज्यादा सत्यापित भारतीय मोबाइल नंबरों को इजरायली कंपनी एनएसओ के पेगासस स्पाइवेयर के जरिये हैक किया जा सकता था।


भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने रविवार को मंगेश मंदिर में पूजा-अर्चना की। इस दौरान उनके साथ गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत और केंद्रीय मंत्री श्रीपद नाइक भी मौजूद थे। एएनआइ

पेगासस मुद्दे की जांच के लिए रास सदस्य पहुंचे सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली, प्रेट्र : राज्यसभा सदस्य जान ब्रिटास ने इजरायली स्पाइवेयर पेगासस के जरिये कार्यकर्ताओं, नेताओं, पत्रकारों और संवैधानिक पदों पर काम करने वाले लोगों की कथित जासूसी को लेकर अदालत की निगरानी में जांच कराने का अनुरोध करते हुए सुप्रीम कोर्ट का रुख किया है। हाल में मीडिया में आई खबरों में दावा किया गया था कि पेगासस का इस्तेमाल मंत्रियों, नेताओं, सरकारी अधिकारियों और पत्रकारों समेत करीब 300 भारतीयों की निगरानी करने के लिए किया गया। इससे देश में बड़ा राजनीतिक विवाद शुरू हो गया है।

सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका दाखिल करने वाले ब्रिटास ने कहा कि हाल में जासूसी के आरोपों ने एक बड़े वर्ग के बीच चिंता पैदा कर दी है और जासूसी का अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर गहरा असर पड़ेगा। उन्होंने पेगासस स्पाइवेयर के जरिये जासूसी करने के आरोपों के संबंध में अदालत की निगरानी में जांच कराए जाने का अनुरोध किया है।

पीएम को बताना चाहिए कि जासूसी हुई या नहीं : चिदंबरम

नई दिल्ली, प्रेट्र : कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी चिदंबरम ने रविवार को कहा कि सरकार को या तो जासूसी के आरोपों की संयुक्त संसदीय समिति के जरिये जांच करानी चाहिए या सुप्रीम कोर्ट से मामले की जांच के लिए किसी वर्तमान न्यायाधीश को नियुक्त करने का अनुरोध करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को इस मामले को संसद में स्पष्ट करना चाहिए कि लोगों की निगरानी हुई या नहीं। पूर्व गृह मंत्री ने कहा कि उन्हें यकीन नहीं है कि कोई इस हद तक कह सकता है कि 2019 के पूरे चुनावी जनादेश को गैरकानूनी जासूसी से प्रभावित किया गया। लेकिन ऐसा हो सकता है कि इससे भाजपा को जीत हासिल करने में मदद मिली हो।

राउत ने पूछा, पेगासस के जरिये जासूसी की फंडिंग किसने की

मुंबई, प्रेट्र : शिवसेना सांसद संजय राउत ने रविवार को पूछा कि पेगासस द्वारा राजनेताओं और पत्रकारों की कथित जासूसी के लिए किसने फंडिंग की। उन्होंने इसकी तुलना हिरोशिमा बम हमले से की। कहा कि इजरायल के साफ्टवेयर द्वारा जासूसी करने से स्वतंत्रता की मृत्यु हुई है। राउत ने शिवसेना के मुखपत्र सामना में अपने साप्ताहिक कालम रोखठोक में कहा, आधुनिक तकनीक ने हमें फिर से गुलामी में ले लिया है। उन्होंने कहा कि पेगासस मामला हिरोशिमा पर परमाणु बम हमले से अलग नहीं है। उन्होंने दावा किया, हिरोशिमा में लोग मारे गए, जबकि पेगासस मामला स्वतंत्रता की मृत्यु का कारण बना।

टीएमसी सांसद अभिषेक बनर्जी की हुई जासूसी : कांग्रेस

राज्य ब्यूरो, कोलकाता : कांग्रेस ने तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के सांसद और बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी की कथित जासूसी का दावा करते हुए इस मुद्दे पर केंद्र और भाजपा को लताड़ लगाई है।

ममता के दिल्ली दौरे से ठीक पहले कांग्रेस ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल से पोस्ट साझा की, जिसमें दावा किया कि अभिषेक की मोदी सरकार ने बंगाल चुनाव के दौरान जासूसी करवाई। इस ट्वीट में कहा गया है कि अपने दुश्मन को करीब रखो वाली कहावत को मोदी सरकार ने ज्यादा गंभीरता से ले लिया है। अभिषेक को लेकर कांग्रेस के इस ट्वीट के बाद तृणमूल के राज्यसभा सदस्य डेरेक ओ ब्रायन ने प्रतिक्रिया देते हुए लिखा है कि खेला होबे। तृणमूल पहले ही अपने नेता की जासूसी का दावा कर चुकी है। वहीं, कांग्रेस ने अभिषेक की तस्वीर के साथ ग्राफिक्स शेयर किया है, उसमें लिखा है कि आप क्रोनोलाजी को समझिए। पेगासस स्पाइवेयर का टारगेट कौन था? अभिषेक बनर्जी, ममता बनर्जी के भतीजे, कब? 2021 में। क्यों? बंगाल में चुनाव थे।

आतंक पर पाक को ना मिले राहत, ब्लिंकन को समझाएंगे जयशंकर

भारत की सतर्कता ▸ मंगलवार को नई दिल्ली पहुंचेंगे अमेरिकी विदेश मंत्री

मदद की आड़ में अपने ऊपर लगे प्रतिबंधों में राहत की उम्मीद लगाए है पाक

जयप्रकाश रंजन, नई दिल्ली

- सितंबर में अमेरिका, जापान, भारत, आस्ट्रेलिया के प्रमुखों की वार्ता
- कोरोना महामारी को लेकर वैश्विक सहयोग को बढ़ाना
- अफगानिस्तान को लेकर समान विचार वाले देशों के बीच साझी रणनीति
- आतंकवाद को पाकिस्तान से मिल रही मदद का मुद्दा


एंटनी ब्लिंकन।


एस जयशंकर। फाइल

कई मोर्चों पर फंसे रहने के बावजूद जो बाइडन प्रशासन भारत के साथ अपने रिश्तों की अहमियत को लेकर पूरी तरह से सतर्क है। इस हफ्ते विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन का भारत दौरा इस बात का प्रमाण है कि दोनों देशों के बीच शीर्ष स्तर पर लगातार संपर्क बने रहने की जो सहमति डोनाल्ड ट्रंप के शासनकाल में बनी थी, वह अब भी जारी है। इधर, भारतीय विदेश मंत्रालय ने विदेश मंत्री एस जयशंकर और ब्लिंकन के बीच होने वाली द्विपक्षीय बैठक का एजेंडा तैयार कर लिया है। इसमें कोरोना महामारी के खिलाफ सहयोग बढ़ाने और हिंद-प्रशांत जैसे क्षेत्र की रणनीति को लेकर और स्पष्टता लाने जैसे मुद्दे प्रमुखता से उठेंगे। भारत की तरफ से अफगानिस्तान के मौजूदा हालात और आतंकवाद को लेकर पाकिस्तान के रवैये में किसी तरह का बदलाव नहीं आने का मुद्दा भी उठाया जाएगा। अमेरिकी विदेश मंत्री मंगलवार को नई दिल्ली पहुंचेंगे।

भारत ब्लिंकन के सामने सुबूत समेत यह बात रखेगा कि आतंकवाद की फंडिंग व सीमा पार आतंकवाद को पाकिस्तान की तरफ से दिए जा रहे बढ़ावे को लेकर अंतरराष्ट्रीय बिरादरी को कोई नरमी नहीं दिखानी चाहिए। पाकिस्तान के आतंकी चेहरे को ब्लिंकन के समक्ष रखने की भारतीय विदेश मंत्री की तरफ से यह पहली कोशिश होगी। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि पाकिस्तान के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार मोईद यूसुफ अगस्त की शुरुआत में अमेरिका जा रहे हैं। अफगानिस्तान से सेना बुलाने के बाद अमेरिका चाहता है कि पाकिस्तान उसे कुछ सैन्य ठिकाने उपलब्ध कराए। पाकिस्तान इस मदद की आड़ में अपने ऊपर लगे प्रतिबंधों में राहत की उम्मीद लगाए है। विदेश मंत्रालय के सूत्रों का कहना है कि क्षेत्रीय सुरक्षा की स्थिति, अमेरिकी सेना की अफगानिस्तान से वापसी के बाद हालात और आतंकवाद को लेकर पाकिस्तानी मदद का मुद्दा हमारे एजेंडे में है।

सूत्रों का कहना है कि बैठक के दौरान क्वाड सहयोग का मुद्दा काफी प्रमुखता से उठेगा। इस वर्ष के अंत में क्वाड के चारों देशों के विदेश मंत्रियों की दूसरी बैठक होनी है। साथ ही शीर्ष नेताओं के बीच बैठक में क्वाड के तहत कोरोना वैक्सीन अभियान को लेकर जो फैसला हुआ था, उसे भी आगे बढ़ाने को लेकर बात होगी। वर्ष 2022 से क्वाड देशों ने प्रशांत क्षेत्र के देशों में वैक्सीनेशन का फैसला किया है। इसके लिए अमेरिकी कंपनी की तरफ से तैयार वैक्सीन का निर्माण भारत में किया जाना है। हिंद प्रशांत क्षेत्र में वैश्विक मंदी के असर और यहां आर्थिक विकास को तेज करने व यहां की सुरक्षा से जुड़े मुद्दे भी उठेंगे। सनद रहे कि हिंद प्रशांत क्षेत्र में सहयोग भारत व अमेरिका के रिश्तों को प्रगाढ़ करने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। दोनों देशों के बीच कोरोना के बाद की वैश्विक व्यवस्था में इंडस्ट्रियल सप्लाई चेन को लेकर भी बात हो रही है। माना जा रहा है कि दोनों देशों के विदेश मंत्री इस बारे में भावी रणनीति को ठोस आकार देने पर विमर्श करेंगे। इसकी शुरुआत हेल्थ सेक्टर में सप्लाई चेन में सामंजस्य स्थापित कर की जा सकती है। ब्लिंकन की यह यात्रा भारत व अमेरिका के बीच होने वाली अगली टू प्लस टू वार्ता की जमीन भी तैयार करेगी। इस वार्ता में दोनों देशों के विदेश व रक्षा मंत्री शामिल होते हैं। बाइडन के राष्ट्रपति बनने के बाद अभी इस व्यवस्था के तहत कोई बैठक नहीं हुई है। माना जा रहा है कि अमेरिका के रक्षा मंत्री भी जल्द ही भारत की यात्रा पर आ सकते हैं। वैसे अप्रैल 2021 में उन्होंने यात्रा की थी। ब्लिंकन के साथ जयशंकर दोनों देशों के बीच सामान्य उड़ानों के बंद होने व इससे दोनों देशों की जनता को हो रही दिक्कतों के बारे में भी बात करेंगे। सूत्रों के अनुसार अब जबकि दोनों देशों में कोरोना की स्थिति काफी नियंत्रण में है तो छात्रों, कारोबारियों, पेशेवरों आदि के आने-जाने को लेकर ज्यादा आजादी होनी चाहिए।

अमेरिकी विदेश मंत्रालय की तरफ से भारत के साथ मानवाधिकार से जुड़े मुद्दे उठाने के बयान पर सूत्रों का कहना है कि मानवाधिकार और लोकतंत्र एक वैश्विक मुद्दा है, जो किसी एक देश या क्षेत्र से जुड़ा हुआ नहीं है। इन दोनों मामलों में भारत ने जो प्रगति की है, उस पर वह गर्व करता है। भारत दूसरे देशों के साथ भी अपने इस अनुभव को साझा कर रहा है। भारत इस बारे में किसी भी पक्ष से खुले दिल से बात करने को तैयार है।

आतंकवाद को नकारकर विकास के पथ पर बढ़ रहा असम : शाह

गुवाहाटी, एएनआइ : विधानसभा चुनाव में जीत हासिल करने के बाद असम में पहली बार जनसभा को संबोधित करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को कहा कि पूर्वोत्तर क्षेत्र में भाजपा अपना आधार मजबूत कर रही है। असम में दूसरी बार भाजपा सरकार के गठन का मतलब है कि राज्य ने आतंकवाद व दंगों को स्थायी रूप से नकार दिया है और विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है। शाह ने कई विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास भी किया।

शाह ने अपने संबोधन में कहा कि हर किसी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व को स्वीकार किया है। साथ ही उन्होंने असम के पूर्व और वर्तमान मुख्यमंत्री के प्रयासों की सराहना भी की। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा, 'पिछले पांच साल में पूर्व मुख्यमंत्री सर्बानंद सोनोवाल और वर्तमान मुख्यमंत्री हिमंता बिस्व सरमा ने जिस तरह सरकार चलाई है, उसी वजह से असम के लोगों ने विकास के मार्ग को प्राथमिकता दी। हिमंता बिस्व सरमा वर्तमान मुख्यमंत्री हैं क्योंकि उन्होंने विकास के रास्ते को चुना।' विपक्ष पर निशाना साधते हुए शाह ने कहा, 'आजादी के बाद से कभी भी कैबिनेट में पूर्वोत्तर से पांच मंत्रियों को चयनित नहीं किया गया। प्रधानमंत्री मोदी की कैबिनेट में पहली बार ऐसा किया गया। इससे प्रदर्शित होता है कि भाजपा और प्रधानमंत्री मोदी की प्राथमिकताओं में पूर्वोत्तर कहां है। हम विकास में पूर्वोत्तर का योगदान बढ़ाना चाहते हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने पूर्वोत्तर में विकास का नया मार्ग शुरू किया है। सात साल में उन्होंने 35 बार क्षेत्र की यात्रा की है, इतनी बार किसी भी दूसरे प्रधानमंत्री ने क्षेत्र की यात्रा नहीं की। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में बोडोलैंड समझौता हुआ। समझौते की 90 फीसद शर्तों को हम पूरा कर चुके हैं। ब्रू-रियांग समझौते के तहत मांगे गए 14 क्षेत्रों में से नौ में जमीन पहले ही दी जा चुकी है। 35 हजार ब्रू परिवारों को भारतीय नागरिकों की तरह रहने के लिए जमीन, खाद्यान्न, पेंशन और सम्मान मिलेगा।'


केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने रविवार को असम राइफल्स के जवानों से बातचीत की। एएनआइ

कामाख्या मंदिर में पूजा-अर्चना : प्रेट्र के मुताबिक, शाह ने कामाख्या मंदिर में पूजा-अर्चना भी की और देश की प्रगति के लिए देवी का आशीर्वाद मांगा। उनके साथ मुख्यमंत्री सरमा भी थे।

मेघालय में जलापूर्ति परियोजना का उद्घाटन : प्रेट्र के मुताबिक, असम यात्रा से पहले शाह ने मेघालय में जलापूर्ति परियोजना का उद्घाटन किया। इससे ईस्ट खासी हिल्स में 20 हजार लोगों को फायदा होगा। इस मौके पर राज्य के मुख्यमंत्री कोनराड के. संगमा भी उपस्थित थे। इसके अलावा उन्होंने सोहरा वनीकरण परियोजना की शुरुआत की जो असम राइफल्स और मेघालय सरकार की संयुक्त पहल है। उन्होंने शिलांग स्थित असम राइफल्स के मुख्यालय का दौरा भी किया और जवानों से बातचीत की।

मेघालय में इनर लाइन परमिट की मांग पर विचार का दिया आश्वासन : मेघालय मंत्रिमंडल के उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने शाह से मुलाकात करके राज्य में इनर लाइन परमिट लागू करने की मांग की। इस पर शाह ने विचार करने का आश्वासन दिया है। इनर लाइन परमिट राज्य सरकार द्वारा जारी दस्तावेज होता है जिसके जरिये भारतीय नागरिक संरक्षित क्षेत्र में निश्चित अवधि के लिए यात्रा कर सकते हैं। यह उन्हें घुसपैठियों के खिलाफ सुरक्षा प्रदान करता है। नगालैंड, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम व मणिपुर में पहले से यह लागू है।

राष्ट्रपति कोविन्द के कार्यकाल के चार साल पूरे, 63 विधेयकों को दी मंजूरी

नई दिल्ली, प्रेट्र : राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द ने रविवार को अपने कार्यकाल का चौथा साल पूरा कर लिया। अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने केंद्र व राज्यों के 63 विधेयकों को हरी झंडी दी। 76 वर्षीय कोविन्द ने 25 जुलाई, 2017 को चौदहवें राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली थी।

राष्ट्रपति भवन ने इस अवसर पर ट्विटर पर एक ई-बुक जारी की, जिसमें राष्ट्रपति कोविन्द के चौथे साल के कार्यकाल की गतिविधियों का उल्लेख है। ई-बुक के अनुसार, राष्ट्रपति कोविन्द ने 13 राज्यों व दो केंद्रशासित प्रदेशों का दौरा किया और इन यात्राओं के दौरान 780 लोगों से मुलाकात की। संविधान के संरक्षक के रूप में राष्ट्रपति ने केंद्रीय मंत्रिपरिषद के सदस्यों व भारत के मुख्य न्यायाधीश को पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई। केंद्र के 43 व राज्यों के 20 विधेयकों को स्वीकृति दी।

ई-बुक में कहा गया है कि स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रपति भवन में आयोजित प्रीतिभोज में कोविन्द ने दिल्ली में काम करने वाले कुछ कोरोना योद्धाओं को विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया और उनके उत्साह व समर्पण की प्रशंसा की। राष्ट्रपति ने ट्रेंड नर्सेस एसोसिएशन, मिलिट्री नर्सिंग सर्विस व राष्ट्रपति के एस्टेट क्लीनिक की नर्सों के साथ रक्षा बंधन मनाया। उन्होंने वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये विदेशी मिशनों के 23 प्रमुखों का परिचय पत्र स्वीकार किया।

सेना के सर्वोच्च कमांडर के रूप में राष्ट्रपति कोविन्द ने कर्नाटक के कोडागु के मदिकेरी में जनरल थिमय्या संग्रहालय का उद्घाटन किया।

66 फीसद स्कूलों और 60 प्रतिशत आंगनबाड़ी केंद्रों तक नल से पहुंचा दिया गया जल

नई दिल्ली, आइएएनएस : जल शक्ति मंत्रालय ने बताया कि अभियान की शुरुआत के 10 महीने से भी कम समय में देश के 66 फीसद स्कूलों व 60 प्रतिशत आंगनबाड़ी केंद्रों में नल से जल पहुंचा दिया गया है। नौ राज्य व एक केंद्रशासित प्रदेश तो ऐसे हैं, जिन्होंने कोविड-19 की चुनौतियों के बीच स्कूलों, आश्रमशालाओं व आंगनबाड़ी केंद्रों में शतप्रतिशत नल से जल की उपलब्धता सुनिश्चित कराई।

- गत वर्ष अक्टूबर में हुई थी अभियान की शुरुआत

स्कूलों, आंगनबाड़ी केंद्रों व आश्रमशालाओं (आवासीय स्कूल) के छात्रों की बेहतर सेहत के मद्देनजर दो अक्टूबर, 2020 को नल से जल की आपूर्ति व लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए 100 दिवसीय अभियान की शुरुआत की गई थी। जल शक्ति मंत्रालय ने कहा, 'अभियान की शुरुआत के बाद 10 महीने से भी कम समय में देशभर के 6.85 लाख स्कूलों, 6.80 लाख आंगनबाड़ी केंद्रों व 2.36 लाख (69 फीसद) ग्राम पंचायतों व सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों तक नल से जल की आपूर्ति सुनिश्चित कराई गई है। 6.18 लाख स्कूलों के शौचालयों में भी नल से जल पहुंच चुका है और 7.52 लाख स्कूलों में हाथ धोने की सुविधा उपलब्ध करा दी गई है।'

इन राज्यों व केंद्रशासित प्रदेश के सभी स्कूलों तक पहुंचा नल से जल

आंध्र प्रदेश, गोवा, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, केरल, पंजाब, सिक्किम, तमिलनाडु, अंडमान एवं निकोबार

बच्चों को दी जाएगी जल प्रबंधन की सीख

जल की उपलब्धता बढ़ने और बच्चों को शुरुआत से ही पानी के प्रबंधन की सीख देने के लिए देश के 91.9 हजार स्कूलों में वर्षा जल संचयन संयंत्र लगाए जाएंगे। इसके अलावा 1.05 लाख स्कूलों में अपशिष्ट जल प्रबंधन इकाइयों की स्थापना की जाएगी।

2005-20 के बीच जनजातीय क्षेत्रों में 73 फीसद बढ़ीं स्वास्थ्य सुविधाएं

नई दिल्ली, प्रेट्र : वर्ष 2005 से 2020 के बीच जनजातीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं में 73 फीसद का इजाफा हुआ है, जबकि देश के दूसरे क्षेत्रों में 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

- राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत किया जा रहा सुविधाओं का विकास

सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, वर्ष 2005 में जनजातीय क्षेत्रों में 16,748 उप स्वास्थ्य केंद्र थे, जिनकी संख्या 2020 में 29,745 हो गई। इस प्रकार इन क्षेत्रों में उप स्वास्थ्य केंद्रों में 78 फीसद का इजाफा हुआ। हालांकि, अखिल भारतीय स्तर पर उप स्वास्थ्य केंद्रों में नौ फीसद की वृद्धि हुई है और इनकी संख्या 1,42,655 से बढ़कर 1,55,404 हो गई है। जनजातीय क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में करीब 50 फीसद का इजाफा हुआ है और उनकी संख्या 2,809 से बढ़कर 4,203 हो गई है। देशभर की बात करें तो प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या आठ फीसद वृद्धि के साथ 23,109 से बढ़कर 24,918 हो गई है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत जनजातीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं का तेजी से विकास किया जा रहा है। 15 वर्षों में इन क्षेत्रों में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में 61 फीसद इजाफा हुआ है और उनकी संख्या 643 से 1,035 हो गई है। इस अवधि में देशभर में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या 3,222 से बढ़कर 5,183 हो गई। नियम के मुताबिक प्रत्येक पांच हजार आबादी पर एक उप स्वास्थ्य केंद्र, 30 हजार पर एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र व 1.2 लाख पर एक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जरूरी है।

बनेगी बात

दिल्ली में आज सोनिया गांधी समेत वरिष्ठ विपक्षी नेताओं के साथ तृणमूल प्रमुख करेंगी बैठकें, पेगासस से लेकर किसानों के मुद्दे पर संसद में अब तक डांवाडोल ही दिखी है विपक्षी दलों में एकजुटता

ममता पर टिकी मानसून सत्र में विपक्ष की एकजुटता

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

पेगासस जासूसी कांड से लेकर किसानों के मुद्दे पर विपक्ष दलों ने संसद के मानसून सत्र में सरकार को घेरने की रणनीति बनाई थी। मानसून सत्र का पहला हफ्ता गुजर गया, लेकिन घेरेबंदी को लेकर विपक्षी दलों में एकजुटता कहीं देखने को नहीं मिली। अब विपक्षी दलों की एकजुटता बहुत कुछ तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की प्रमुख ममता बनर्जी की दिल्ली यात्रा पर निर्भर कर रही है। सोमवार को दिल्ली आ रहीं ममता सोनिया गांधी समेत विपक्ष के बड़े नेताओं के साथ बैठकें करेंगी।

हालांकि, अभी तक टीएमसी विपक्षी दलों को एकजुट करने की कांग्रेस की कोशिशों को तवज्जो देने के बजाय अपने हिसाब से विरोध प्रदर्शन की रणनीति और मुद्दे तय करते दिखी है। वैसे कांग्रेस को उम्मीद है कि अगले हफ्ते संसद में विपक्ष की संयुक्त रणनीति में टीएमसी भी शामिल होगी और साझे तालमेल से सरकार को पेगासस जासूसी से लेकर कृषि कानूनों के खिलाफ घेरा जा सकेगा।


ममता बनर्जी। फाइल/जागरण आर्काइव

कांग्रेस ने ममता की यात्रा से पहले ही उनके भतीजे अभिषेक बनर्जी की पेगासस के जरिए जासूसी कराए जाने के मामले को आधिकारिक ट्विटर हैंडल से उठाकर इन मामलों पर साथ मिलकर काम करने के संकेत भी दे दिए हैं।

कई मौकों पर अलग राह पर रही है टीएमसी : संसद में टीएमसी की रणनीति कई मौकों पर विपक्षी एकता को डांवाडोल कर देती है और इसका नमूना मानसून सत्र के पहले हफ्ते में ही दो-तीन अवसरों पर नजर आया। पहले दिन कांग्रेस और उसके घटक दलों ने संसद में जहां महंगाई और कृषि कानूनों के मुद्दे पर हंगामा किया वहीं टीएमसी ने पेगासस जासूसी कांड को तवज्जो दी। जब दूसरे दिन कांग्रेस-यूपीए के साथी दलों ने पेगासस जासूसी कांड पर सरकार को घेरा तो टीएमसी ने कृषि कानूनों के खिलाफ हंगामा किया। हालांकि बाकी दो दिन जरूर पेगासस का मुद्दा विपक्षी खेमे के एजेंडे में प्रमुखता से रहा।

कोविड-19 पर राज्यसभा में हुई बहस के लिए विपक्ष के राजी होने में भी टीएमसी व कांग्रेस के बीच मतांतर देखा गया। कोविड की स्थिति को लेकर सदन के नेताओं के लिए प्रधानमंत्री की बुलाई बैठक के संदर्भ में विपक्षी एकता नदारद दिखी। कांग्रेस, शिवसेना व अकाली दल समेत छह पार्टियां इस बैठक में शामिल नहीं हुईं मगर टीएमसी के साथ राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी, समाजवादी पार्टी समेत कई विपक्षी पार्टियां बैठक में शरीक हुई हैं। इसीलिए ममता की प्रस्तावित दिल्ली यात्रा पर विपक्षी खेमे की नजर टिकी है।

बड़े मुद्दों पर साथ आए टीएमसी

कांग्रेस के रणनीतिकारों का मानना है कि विपक्ष को मजबूत करने के एजेंडे की बात कर रही टीएमसी इस पर गंभीर है तो फिर बड़े मुद्दों पर संयुक्त रणनीति के साथ सहयोग करना अपरिहार्य जरूरत है। तभी बड़ी पार्टी होने के बावजूद कांग्रेस विपक्षी नेताओं के ममता बनर्जी की ओर से राजधानी में बुलाई गई बैठक के लिए अपने वरिष्ठ नेता पी चिदंबरम को भेजेगी। ममता अपने इस दौरे के दौरान सोनिया गांधी के अलावा शरद पवार, अखिलेश यादव से लेकर अरविंद केजरीवाल सरीखे नेताओं से चर्चा कर राष्ट्रीय स्तर पर विपक्ष को एकजुट करने की औपचारिक पहल शुरू करेंगी।

कह के रहेंगे माधव जोशी



659 दुर्घटनाएं हुई हैं इस वर्ष जून तक उत्तराखंड में। बीते वर्ष इस अवधि में यह आंकड़ा 432 था। दुर्घटनाओं में मृतकों की संख्या में 37 फीसद तो घायलों की संख्या में 47 फीसद बढ़ोतरी हुई है।

www.jagran.com
राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
सोमवार 26 जुलाई, 2021

'सिद्धू अहंकार में चूर, किसानों के उपजाए अनाज को हाथ न लगाएं'

जागरण संवाददाता, बठिंडा

- किसान संगठनों ने पूछा-किस हैसियत से बुला रहे पंजाब कांग्रेस अध्यक्ष
- कार्यभार ग्रहण समारोह में सिद्धू ने खुद को कुआं और किसानों को बताया था प्यासा

पंजाब कांग्रेस का अध्यक्ष बनते ही नवजोत सिंह सिद्धू विवाद में फंस गए हैं। चंडीगढ़ में कार्यभार ग्रहण करते समय उनके दिए बयान पर किसान संगठनों ने कड़ी नाराजगी जताई है और उनको अहंकारी बताया है।

बठिंडा किसान यूनियन के जिला अध्यक्ष शिंगारा सिंह मान ने कहा कि किसानों के प्रति सिद्धू की भाषा ही ठीक नहीं है। जिन किसानों को वह प्यासा बता रहे हैं, उन्हीं किसानों का पैदा किया अनाज वह खाते हैं। अगर यही बात है, तो सिद्धू को चाहिए कि वह किसानों के अनाज को हाथ भी न लगाएं। वह किसानों के लिए कुछ नहीं कर सकते।

संयुक्त किसान मोर्चा के नेता राजिंदर सिंह दीप सिंह वाला ने कहा कि सिद्धू का अहंकार सिर पर चढ़ कर बोल रहा था। वह शहादत देने वाले किसानों को प्यासा बता रहे हैं। कारपोरेट घरानों के आगे सीना तानकर खड़े किसानों को प्यासा कह रहे हैं। सिद्धू किसी संवैधानिक पद पर नहीं हैं। सिर्फ अध्यक्ष बने हैं और पार्टी अध्यक्ष कुछ नहीं कर सकता। पंजाब किसान-मजदूर संघर्ष कमेटी के प्रधान स्वर्ण सिंह पंधेर ने कहा कि सिद्धू को प्रधानगी का नशा हो गया है। वह बताएं कि किसानों को किस हैसियत से बुला रहे हैं।

> 'मैं किसान मोर्चा के लोगों को कहना चाहता हूं कि प्यासा कुएं के पास आता है, कुआं प्यासे के पास नहीं आता। मैं आपको बुलावा देना चाहता हूं कि मुझे मिलो। मैं जानता हूं कि तीन काले कानून आप लागू नहीं होने दोगे। सरकार भी गिरा दोगे, लेकिन इसका हल क्या है, आओ इस पर बात करें। हमारी सरकार की ताकत किस तरह काम आ सकती है।'
>
> -नवजोत सिंह सिद्धू ने चंडीगढ़ में कार्यभार ग्रहण करते समय कहा था



किसान समझदार हैं, ऐसी बातों में नहीं आते : झुंबा

किसान नेता जगसीर सिंह झुंबा ने कहा कि सिद्धू को पंजाब का अध्यक्ष बनाने का मकसद ही लोगों का ध्यान भटकाना है, ताकि असल मुद्दों को लोग भूल जाएं। यह सारा एक सियासी ड्रामा है, जिसके बाद भी किसानों को कुछ नहीं मिलेगा, लेकिन पंजाब के लोग ऐसी बातों में नहीं आएंगे।

सिद्धू ने मंत्री बनकर भी कुछ नहीं किया : जसवीर सिंह

किसान नेता जसवीर सिंह ने कहा कि सिद्धू में अहंकार आ गया है। किसानों को प्यासा कहना ठीक नहीं है। सिद्धू मंत्री भी रहे, फिर भी किसानों के लिए कुछ नहीं किया। अध्यक्ष बनने के बाद भी वह कुछ नहीं करेंगे। वह सिर्फ लोगों के साथ खेल रहे हैं।

केंद्र से वार्ता के लिए पहल करेगी राष्ट्रीय किसान समन्वय समिति

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

राष्ट्रीय किसान समन्वय समिति कृषि सुधार कानूनों में समुचित बदलाव को लेकर केंद्र से वार्ता के लिए पहल करेगी। इस समिति से 22 प्रदेशों में 100 से अधिक किसान संगठन जुड़े हैं। समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष दशरथ कुमार की अध्यक्षता में हुई किसान संगठनों की वर्चुअल बैठक में निर्णय लिया गया कि आंदोलन को अंजाम तक पहुंचाया जाए। इसके लिए केंद्र सरकार से वार्ता के लिए समिति संयुक्त किसान मोर्चा से भी समन्वय करेगी।

वर्चुअल बैठक में तय हुआ कि समन्वय समिति संयुक्त किसान मोर्चा के सामने प्रस्ताव रखेगी कि कृषि सुधार कानूनों में किसान विरोधी एक-एक नियम पर चर्चा हो। जिस नियम पर तथ्यात्मक विरोध हो उसे केंद्र से हटवाया जाए। हरियाणा किसान संघर्ष समिति के अध्यक्ष डीके शर्मा ने दैनिक जागरण से कहा कि समिति से जुड़े संगठन आंदोलन को लंबा खींचने, इसमें राजनीति करने और केंद्र सरकार से वार्ता के दरवाजे बंद करने से सहमत नहीं है। कहा, जब कानूनों के एक-एक नियम पर चर्चा हो जाएगी और इनमें से जिस पर विवाद होगा, उसे हटा दिया जाएगा तो कानून की महत्ता ही नहीं रहेगी। इसलिए संयुक्त किसान मोर्चा भी यह अड़ियल रुख छोड़ दे कि तीन कृषि कानून रद किए बिना केंद्र सरकार से वार्ता ही नहीं होगी। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय किसान समन्वय समिति 26 जनवरी की घटना के बाद संयुक्त किसान मोर्चा से अलग हो गई थी। लेकिन, कृषि सुधार कानूनों का अपने स्तर पर विरोध कर रही थी।

सुखबीर बादल ने की भाजपा के खिलाफ मोर्चा बनाने की अपील

नई दिल्ली, प्रेट्र : शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल ने कहा कि भाजपा के साथ उनकी पार्टी की कहानी खत्म हो चुकी है। इसके साथ ही उन्होंने 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा से मुकाबले के लिए क्षेत्रीय दलों को साथ आकर राष्ट्रीय मोर्चा बनाने की अपील भी की।

सुखबीर ने कहा कि किसानों के मुद्दे अकाली दल की विचारधारा के मूल में हैं। उनकी पार्टी इन पर कभी समझौता नहीं कर सकती। लिहाजा, उसने तीन कृषि कानूनों को लेकर भाजपा के साथ अपना दशकों पुराना गठबंधन तोड़ दिया और केंद्र सरकार से बाहर हो गई।

उन्होंने कहा कि अकाली दल किसानों की पार्टी है। उनके मुद्दे हमारी विचारधारा के मूल हैं। चाहे कुछ भी हो जाए और हमें जो भी कीमत चुकानी पड़े, हम इन कानूनों को पंजाब में लागू नहीं होने देंगे।

निर्बाध चल रही सरकार

प्रथम पृष्ठ से आगे

भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने रविवार को गोवा की राजधानी पणजी में पत्रकारों से बातचीत के दौरान कर्नाटक में येदियुरप्पा के नेतृत्व वाली सरकार की अच्छे कार्यों के लिए सराहना की। नड्डा ने कहा कि 'यह अच्छा है, उन्होंने बढ़िया काम किया है। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि कर्नाटक में भाजपा की सरकार बिना किसी के बाधा के चल रही है।' राज्य में नेतृत्व संकट के सवाल पर नड्डा ने कहा, 'ऐसा आप महसूस कर रहे होंगे, हम नहीं।' उल्लेखनीय है कि दक्षिण भारत में कर्नाटक ही ऐसा राज्य है जहां भाजपा की सरकार है। वहीं, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष और गांधी परिवार के नजदीकी डीके शिवकुमार ने राज्य की भाजपा सरकार को विफल बताया। उन्होंने राज्य के लोगों की बेहतरी के लिए चुनाव कराने की मांग की। उल्लेखनीय है कि विभिन्न राज्यों में पार्टी संगठन में मची खींचतान में उलझी कांग्रेस भाजपा को असहज करने का कोई मौका छोड़ना नहीं चाहती है।

अब पाकिस्तान एसजीपीसी की बधाई पर घिरे सिद्धू

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़ : पाकिस्तान सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (पीएसजीपीसी) ने नवजोत सिंह सिद्धू को पंजाब कांग्रेस का अध्यक्ष बनने पर बधाई दी है। पीएसजीपीसी ने ट्वीट के जरिये यह अपील भी की कि सिद्धू करतारपुर कारिडोर को दोबारा खुलवाने में अहम भूमिका अदा करें। भाजपा और शिरोमणि अकाली दल ने सिद्धू और पाकिस्तान को आड़े हाथ लिया। पंजाब भाजपा अध्यक्ष अश्वनी शर्मा ने कहा कि यह स्क्रिप्ट खुद सिद्धू ने लिखी है। कारिडोर केंद्र सरकार के हस्तक्षेप के बाद बना था और केंद्र के फैसले पर ही खुलेगा। सिद्धू भले ही पाकिस्तान के आर्मी प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा को जफ्फी डालते हों लेकिन इस बात का ध्यान रखें कि यह दो देशों के बीच का मामला है। इसमें सिद्धू की कोई भूमिका नहीं है।

अकाली दल के प्रवक्ता और पूर्व मंत्री डा. दलजीत सिंह चीमा ने कहा कि बधाई तो कोई भी किसी को दे ले, लेकिन पीएसजीपीसी को ध्यान रखना चाहिए कि यह दो देशों के बीच का मामला है, किसी व्यक्ति विशेष का नहीं। सिद्धू की कारिडोर को लेकर न कोई भूमिका थी और न हो सकती है। अकाली दल केंद्र सरकार से मांग करता है कि कारिडोर खोला जाए। खास बात यह है कि गत 23 जुलाई को सिद्धू के ताजपोशी समारोह में सीएम कैप्टन अमरिंदर सिंह ने पाकिस्तान को खतरा बताया था। कहा था कि पाकिस्तान की 600 किमी पंजाब के साथ लगती है। हमें देश की सुरक्षा का भी ध्यान रखना है।

महाराष्ट्र से रची जा रही झारखंड में सरकार गिराने की साजिश

खुल रहीं परतें ▶ जेल जाने से पहले पूछताछ के दौरान आरोपित का स्वीकारोक्ति बयान, तीनों आरोपित भेजे गए जेल

महाराष्ट्र के भाजपा नेता का नाम आया सामने, उन्होंने आरोपों को नकारा

राज्य ब्यूरो, रांची

झारखंड सरकार गिराने की साजिश के आरोप में गिरफ्तार आरोपितों ने पुलिस को बताया है कि महाराष्ट्र के विधायकों ने न सिर्फ इसकी साजिश रची, बल्कि इसका हिस्सा बनते हुए नई दिल्ली से रांची तक उनके साथ सफर भी किया। होटल में भी साथ ही रहे। अमित यादव और झारखंड के दो विधायकों को महाराष्ट्र के नेताओं ने कुछ अन्य बड़े नेताओं से भी मिलवाया। इस मामले में गिरफ्तार अभिषेक दुबे, अमित सिंह और निवारण प्रसाद को पुलिस ने शनिवार को जेल भेज दिया। उधर, मामले में नाम सामने आने के बाद महाराष्ट्र के भाजपा नेता चंद्रशेखर बावनकुले ने आरोपों से इन्कार किया है।

जेल जाने से पहले हुई पूछताछ के दौरान स्वीकारोक्ति बयान में रांची के देवी मंडप रोड निवासी अभिषेक कुमार दुबे ने बताया है कि महाराष्ट्र से आए नेता होटल ली-लैक में रुककर स्थानीय विधायकों की खरीद-फरोख्त की बात कर रहे थे। इन्हें मैनेज करके सदन में वोटिंग कराकर सरकार गिराने की साजिश रची जा रही थी। होटल ली-लैक में पुलिस की छापेमारी से 15 मिनट पहले ही सभी नेता निकल चुके थे। सरकार गिराने के लिए आवश्यक 12 विधायकों का इंतजाम कर लिए जाने की बात कही जा रही थी और तीन-चार के नाम सामने आ भी चुके हैं। शेष आठ विधायकों पर संशय बना हुआ है।

तीन विधायक गए साथ : रांची में सरकारी ठेकों से जुड़ा टेंडर का काम करने वाले अभिषेक ने बताया है कि उसे अमित कुमार सिंह ने 15 जुलाई को 2:30 बजे एक एयर टिकट भेजकर दिल्ली चलने के लिए कहा। इंडिगो की फ्लाइट 6:10 बजे थी, जिसका पीएनआर नंबर ओएमजेडएमआरडब्ल्यू है। उसके साथ फ्लाइट में अमित, निवारण महतो और तीन विधायक थे। जिन्हें वह नहीं पहचानता। उनका पीएनआर नंबर आइजीसीटीटूवी है। यह सब टिकट महाराष्ट्र के जयकुमार बेलखेड़े उर्फ बालकुंडे के द्वारा अमित कुमार सिंह को भेजे गए थे। पुलिस मामले की जांच कर रही है। उसका कहना है कि जल्द ही सच्चाई सामने आ जाएगी।

पैसे न मिलने से नाराज होकर विधायक वापस लौटे

रांची से साथ गए विधायकों में कोई नोएडा तो कोई झारखंड भवन चला गया। दूसरे दिन सुबह 10 बजे बेलखेड़े उर्फ बालकुंडे, चंद्रशेखर बावनकुले, चरण सिंह ने तीनों विधायकों की बड़े नेताओं के साथ मीटिंग कराई। झारखंड के विधायकों को एडवांस में एक करोड़ देने की बात कही गई, लेकिन पैसा नहीं मिलने से नाराज विधायक 3:55 बजे की फ्लाइट से वापस रांची लौट आए। विधायकों के आने के बाद भी बेलखेड़े उनके संपर्क में रहे और 21 जुलाई को वह मोहित भारतीय के साथ ढाई बजे की फ्लाइट से रांची पहुंचे और ली-लैक होटल में ठहरे। होटल से फोन से अलग-अलग स्थानीय विधायकों से बात करने की कोशिश की गई। बालकुंडे, मोहित भारतीय, आशुतोष ठक्कर और अमित कुमार यादव भी उसी होटल में रुके थे।

मुंबई में भाजपा से जुड़े मोहित भारतीय, लड़ चुके चुनाव

मोहित भारतीय का वास्तविक नाम मोहित कांबोज है। मुंबई में इनका सोने-चांदी और रीयल एस्टेट का व्यापार है। वह केबीजे ग्रुप के चेयरमैन हैं। बिहार में एथेनाल उत्पादन की इकाई शुरू करने के लिए उनका ग्रुप योजना बना रहा है। 36 वर्षीय मोहित मुंबई भाजपा के महासचिव और उपाध्यक्ष रह चुके हैं। वह मुंबई में भारतीय जनता युवा मोर्चा और उत्तर भारतीय मोर्चा के भी अध्यक्ष रह चुके हैं। 2014 में वह मुंबई की ढिंडोशी विधानसभा सीट से भाजपा के टिकट पर चुनाव भी लड़ चुके हैं।

चंद्रशेखर बावनकुले का आरोपों से इन्कार

चंद्रशेखर बावनकुले महाराष्ट्र में तीन बार भाजपा के विधायक एवं देवेंद्र फड़नवीस सरकार में ऊर्जा मंत्री रह चुके हैं। भ्रष्टाचार का आरोप लगने के बाद उन्हें 2019 में पार्टी का टिकट नहीं दिया गया। झारखंड में सरकार को अस्थिर करने संबंधी आरोपों पर उन्होंने कहा कि इससे उनका कोई मतलब नहीं है। उन्होंने कहा कि मैं तो महाराष्ट्र में घूम रहा हूं।

भाजपा ने की एसआइटी से जांच की मांग

राज्य ब्यूरो, रांची



बाबूलाल मरांडी। जागरण आर्काइव

भाजपा विधायक दल के नेता बाबूलाल मरांडी ने सरकार गिराने की साजिश से जुड़े प्रकरण पर स्थिति स्पष्ट करने के लिए राज्य सरकार से विशेष जांच टीम (एसआइटी) से जांच कराने की मांग की है। रविवार को उन्होंने कहा कि हाईकोर्ट के सिटिंग जज की अध्यक्षता में एसआइटी गठित कर पूरे मामले की जांच की जाए। यदि सरकार ने एसआइटी जांच नहीं कराई तो भाजपा चुप नहीं रहेगी। आखिर इस राज्य की जनता की हिफाजत की जिम्मेदारी हमारी भी है।

कहा, आश्चर्य तो इस बात का है कि 22 की रात निवारण महतो को पुलिस ने बोकारो में उनके घर से उठाया और उसकी गिरफ्तारी रांची के एक होटल से दिखाई गई।

विक्सल बोले-50 करोड़ और मंत्री पद का आफर था : कोलेबिरा के कांग्रेस विधायक नमन विक्सल कोंगाड़ी ने कांग्रेस विधायकों को तोड़ने की कोशिशों पर दोबारा मुहर लगाते हुए कहा कि मुझे 50 करोड़ रुपये और मंत्री पद का आफर कुछ बिचौलियों ने दिया था। वह लोग कोई भी रकम देने को तैयार थे। हमेशा कहते थे कि 11 लोगों का इंतजाम हो चुका है और आप 12वें होंगे।

इरफान ने कहा-मुझे बदनाम करने की साजिश

जामताड़ा के विधायक डा. इरफान अंसारी ने नाम सामने आने पर कहा कि पूरे प्रकरण का राजफाश होना चाहिए। इसके पीछे शराब माफिया का खेल हो सकता है। मैं पिता के इलाज के सिलसिले में दिल्ली गया था। विधायक अमित यादव पत्नी का इलाज कराने साथ गए थे। मैं हेमंत सोरेन का हनुमान हूं और उनपर आंच को बर्दाश्त नहीं करूंगा।

भाजपा पर विश्वास, योगी पहली पसंद

लखनऊ, आइएएनएस : अगले वर्ष होने जा रहे विधानसभा चुनाव के नतीजे जो भी हों, लेकिन फिलहाल भाजपा के लिए उत्तर प्रदेश में सत्ता में वापसी उतनी चुनौतीपूर्ण नहीं नजर आ रही। न्यूज एजेंसी आइएएनएस के मुताबिक, स्वतंत्र एजेंसी मैटराइज न्यूज द्वारा प्रदेशभर में कराए गए सर्वे में जनता ने भाजपा पर फिर विश्वास जताया है, जबकि उप्र के मुख्यमंत्री के रूप में योगी आदित्यनाथ पहली पसंद बने हुए हैं। योगी सरकार के कोविड प्रबंधन पर 45 फीसद लोगों ने संतुष्टि की मुहर लगाई है।



स्वतंत्र एजेंसी मैटराइज न्यूज ने कराया राज्य के सभी जिलों में सर्वेक्षण

विधानसभा चुनाव की सरगर्मियों के बीच 12 से 22 जुलाई के बीच कराए गए इस सर्वे में लोगों से कोरोना की दूसरी लहर के बाद योगी सरकार की स्थिति का आकलन किया गया। सर्वे के परिणामों के अनुसार, अधिकांश ने योगी सरकार में विश्वास व्यक्त करते हुए संदेश दिया कि अगर तुरंत विधानसभा चुनाव हो जाएं तो भाजपा एक बार फिर सरकार बनाने में सफल होगी। यह पूछे जाने पर कि 2022 में विधानसभा चुनाव में मतदान का आधार क्या होगा? इस पर सबसे ज्यादा 22 फीसद लोगों ने कहा कि सीएम उम्मीदवार, दूसरे नंबर पर 12 फीसद जनता ने कहा कि सरकार के कामकाज के आधार पर वोट करेंगे, 10 फीसद लोग पार्टी के आधार पर वोट करेंगे। कामकाज के आधार पर योगी 46 फीसद के साथ सबसे ऊपर रहे, जबकि 28 फीसद ने मायावती को और 22 फीसद ने अखिलेश यादव को बेहतर मुख्यमंत्री बताया। कहा गया है कि कोरोना के दौरान मई, 2021 में अगर विधानसभा चुनाव होते तो भाजपा को 178 से 182 सीटें ही मिलतीं, जबकि वोट मात्र 32 फीसद। सीएम योगी के खुद ग्राउंड पर उतरने के बाद स्थितियां तेजी से बदलीं। अगर जुलाई के पहले हफ्ते में चुनाव होते तो भाजपा को 278 से 288 सीटें और 43 फीसद वोट मिलता, जो बहुमत है। इसी तरह महिला सुरक्षा ने भी योगी सरकार की साख बढ़ाई है। इस मुद्दे पर 52 फीसद लोगों ने योगी पर भरोसा जताया। 34 फीसद मायावती पर भरोसा करते हैं, जबकि अखिलेश को 12 फीसद ही वोट मिला।

ब्राह्मण वोटरों को लेकर राजनीतिक दलों की सक्रियता को भी सर्वे में शामिल किया गया। परिणाम आया है कि अभी भी 64 फीसद ब्राह्मण भाजपा के साथ हैं। ब्राह्मणों की दूसरी पसंदीदा पार्टी बसपा, फिर कांग्रेस है, जबकि इस दौड़ में सपा सबसे पीछे है। दलित वोटरों के बीच बसपा 45 फीसद समर्थन के साथ सबसे आगे है, दूसरे नंबर पर 43 फीसद दलित वोटर भाजपा के साथ है।

राजस्थान में सरकार और संगठन में बड़ा बदलाव करेगा हाईकमान

जासं, जयपुर

- मुख्यमंत्री गहलोत ने कहा, सोनिया जो कहेंगी वह मंजूर होगा
- 28 और 29 जुलाई को विधायकों से जयपुर में रहने को कहा गया

मंत्रिमंडल में फेरबदल और राजनीतिक नियुक्तियों को लेकर अभी तक अड़ियल रुख अपनाते रहे मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के सुर बदल गए हैं। उन्होंने कहा है कि कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी का फैसला उन्हें मंजूर होगा। संकेत हैं कि मंत्रिमंडल विस्तार तक ही सीमित नहीं रहेगा। हाईकमान सरकार और संगठन में व्यापक फेरबदल करेगा। 28 और 29 जुलाई को विधायकों को जयपुर में रहने के लिए कहा गया है।

कांग्रेस की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी का संदेश लेकर शनिवार रात जयपुर पहुंचे संगठन महामंत्री केसी वेणुगोपाल और प्रदेश प्रभारी अजय माकन कई दौर की बातचीत कर चुके हैं। दोनों नेताओं ने शनिवार को ही गहलोत के साथ लंबी बैठक की। रविवार सुबह विधायकों और पार्टी पदाधिकारियों के साथ बैठक की। इसमें सभी विधायकों को 28 और 29 जुलाई को जयपुर में रहने के लिए कहा गया है। बैठक में पायलट शामिल हुए, लेकिन गहलोत नहीं आए। बताया जा रहा है कि वेणुगोपाल और माकन विधायकों से वन टू वन बात करेंगे। माह के अंत में सभी मंत्रियों से इस्तीफे लेकर नए सिरे से मंत्रिमंडल का गठन किया जा सकता है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा शिक्षामंत्री भी हैं। ऐसे में उन्हें एक पद से हटाने का मन बनाया जा चुका है।

वेणुगोपाल और माकन ने कहा कि राज्य के नेताओं ने एकमत से आलाकमान पर फैसला छोड़ दिया है। मुख्यमंत्री, विधायकों व पदाधिकारियों ने एक स्वर में कहा है कि आलाकमान का फैसला सभी को मान्य होगा। जयपुर आने से पहले दोनों नेताओं ने दिल्ली में पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी से मुलाकात की थी। रविवार को ही दोनों नेता दिल्ली लौट गए।



अशोक गहलोत के बदले सुर। फाइल

कयासों का दौर

28 और 29 तारीख को जयपुर में बुलाई गई बैठक को लेकर तरह-तरह के कयास लग रहे हैं। कुछ लोग इसे रायशुमारी की रणनीति मान रहे हैं तो कुछ नेताओं का कहना है कि इसके जरिये हाईकमान गहलोत व पायलट खेमे की ताकत को अनुमान लगाना चाहता है। कुछ का कहना है कि केवल मंत्रिमंडल विस्तार और राजनीतिक नियुक्तियों के लिए तो कभी विधायकों से वन-टू-वन राय नहीं मांगी गई।

पायलट समर्थकों ने नारेबाजी की

रविवार सुबह बैठक में शामिल होने के लिए वेणुगोपाल और माकन पार्टी मुख्यालय पहुंचे तो पायलट समर्थकों ने नारेबाजी शुरू कर दी। वे पायलट को मुख्यमंत्री बनाने की मांग कर रहे थे। बैठक के दौरान पार्टी कार्यालय के बाहर नारेबाजी का दौर चलता रहा।

आज दिल्ली रवाना होने से पहले ममता ने बुलाई मंत्रिमंडल की विशेष बैठक

राज्य ब्यूरो, कोलकाता

राष्ट्रीय राजधानी के चार दिवसीय दौरे पर रवाना होने से पहले बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने सोमवार को मंत्रिमंडल (कैबिनेट) की विशेष बैठक बुलाई है। सूत्रों के अनुसार, मंत्रिमंडल की इस विशेष बैठक को बुलाए जाने का कारण अभी स्पष्ट नहीं है, क्योंकि पिछली बैठक गुरुवार को ही हुई थी। एक अधिकारी ने बताया कि बैठक में किसी विशेष मुद्दे पर चर्चा हो सकती है और दिल्ली दौरे से पहले संभव है कि मुख्यमंत्री अपने मंत्रियों संग महत्वपूर्ण मंत्रणा करेंगी।

मंत्रियों को बैठक के बारे में सूचित कर दिया गया है। कैबिनेट बैठक के बाद ममता शाम को दिल्ली के लिए रवाना हो जाएंगी और 29 जुलाई तक वहां रहेंगी। संपर्क करने पर राज्य मंत्रिमंडल के एक वरिष्ठ मंत्री ने कहा कि हमारे जैसे मंत्रियों को भी नहीं बताया गया है कि कैबिनेट की ऐसी विशेष बैठक क्यों बुलाई गई। हमें इसके बारे में (बैठक) शनिवार देर शाम को ही पता चला है। मुझे लगता है कि कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा हो सकती है, जिसके बारे में मुख्यमंत्री मंत्रिमंडल को जानकारी देना चाहती हैं।

संसद के मानसून सत्र में गैरहाजिर तृणमूल के सांसद पिता-पुत्र

राज्य ब्यूरो, कोलकाता

एक तरफ तृणमूल कांग्रेस पेगासस समेत विभिन्न मुद्दों पर संसद के मानसून सत्र में रोजाना मोदी सरकार को घेरने की कोशिश कर रही है। वहीं, दूसरी तरफ पार्टी के दो सांसद शिशिर अधिकारी व उनके पुत्र दिब्येंदु अधिकारी संसद से दूरी बनाकर चल रहे हैं। तृणमूल के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने पार्टी के सभी सांसदों को मानसून सत्र के समय दिल्ली में हाजिर रहने का निर्देश दिया था, लेकिन दोनों नहीं गए।

इस बाबत पूछे जाने पर दिब्येंदु ने कहा कि मेरे माता-पिता की तबीयत ठीक नहीं है। इस कारण मैं उनकी देखभाल के लिए घर में ही हूं। उन्होंने आगे कहा कि मैं और मेरे पिता तृणमूल में ही हैं। किसी दूसरी पार्टी में नहीं गए हैं। जाने का सवाल भी नहीं है। मानसून सत्र 13 अगस्त तक चलेगा। इस दौरान मैं दिल्ली जाऊंगा और सत्र में हिस्सा लूंगा।

दूसरी तरफ से तृणमूल लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को पत्र लिखकर दलबदल विरोधी कानून के तहत पिता-पुत्र की लोकसभा सदस्यता खारिज करने की मांग कर चुकी है। कांथी सीट से सांसद शिशिर अधिकारी बंगाल विधानसभा चुनाव के समय अपने संसदीय क्षेत्र में हुई केंद्रीय गृहमंत्री और भाजपा के दिग्गज नेता अमित शाह की सभा में शामिल हुए थे।

दिब्येंदु अधिकारी ने हल्दिया में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता वाले एक सरकारी कार्यक्रम में हिस्सा लिया था। तभी से कयास लगाए जा रहे हैं कि दोनों भाजपा में शामिल हो चुके हैं, हालांकि आधिकारिक तौर पर उन्होंने कुछ नहीं कहा है। बताते चलें कि शिशिर अधिकारी बंगाल विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष सुवेंदु अधिकारी के पिता हैं।

पीएम के एकनायकत्व के खिलाफ लड़ाई जारी रखूंगा : जवाहर

राज्य ब्यूरो, कोलकाता : बंगाल में राज्यसभा की एक सीट पर नौ अगस्त को होने वाले उपचुनाव के लिए तृणमूल कांग्रेस उम्मीदवार बनाए गए प्रसार भारती के पूर्व सीईओ जवाहर सरकार ने कहा कि वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एकनायकत्व और सांप्रदायिकता के खिलाफ लड़ाई जारी रखेंगे।

उन्होंने कहा कि बंगाल विधानसभा में तृणमूल के अलावा सिर्फ दो ही दलों के विधायक हैं-भाजपा व आइएसएफ। मुझे नहीं लगता कि वे दोनों पार्टियां मुझे पसंद करती हैं। मैंने अपना कार्यकाल खत्म होने से पहले ही प्रसार भारती के सीईओ पद से इस्तीफा दे दिया था, क्योंकि मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सांप्रदायिकता, एकनायकत्व व देशव्यापी आर्थिक व्यवस्था को स्वीकार नहीं कर पाया था। मैं नामांकन को इसलिए स्वीकार कर रहा हूं क्योंकि इसके जरिये मैं मानवाधिकार उल्लंघन व सांप्रदायिकता के खिलाफ लड़ पाऊंगा। गौरतलब है कि जवाहर सरकार केंद्र की मोदी सरकार के आलोचक माने जाते हैं। वह इंटरनेट मीडिया पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लेकर आपत्तिजनक भाषा और प्रतीकों का इस्तेमाल भी करते रहे है।

'फंड की भीख मांगने के लिए पीएम से मिलना चाहती हैं दीदी'

राज्य ब्यूरो, कोलकाता

- तृणमूल की कड़ी प्रतिक्रिया, कहा- घोष को पहले संघीय व्यवस्था की समझ होनी चाहिए
- प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने कहा- ममता के राज में बंगाल हो चुका है दिवालिया

बंगाल भाजपा अध्यक्ष दिलीप घोष ने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के दिल्ली दौरे से पहले रविवार को एक बार फिर उन पर करारा हमला बोला। उन्होंने दावा किया कि ममता ने केंद्रीय संसाधनों का दुरुपयोग किया है और अब प्रधानमंत्री से मिलना चाहती हैं ताकि हाथ जोड़कर फंड की भीख मांग सकें। उनकी इस टिप्पणी पर राज्य में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) ने तीखी प्रतिक्रिया दी है और कहा कि घोष को पहले ज्संघीय व्यवस्था की समझ होनी चाहिए, जिसके तहत राज्य का प्रमुख हमेशा प्रधानमंत्री से मिल सकता है।

इधर, संवाददाताओं से बातचीत करते हुए घोष ने आरोप लगाया कि तृणमूल कांग्रेस के सदस्यों ने राज्य के खजाने से पैसे निकाले और अब उसे खाली कर दिया है। भाजपा नेता ने ममता बनर्जी के संभावित दिल्ली दौरे के बारे में पूछे जाने पर कहा कि उन्होंने (बनर्जी ने) केंद्र द्वारा आवंटित धन का दुरुपयोग किया और अब प्रधानमंत्री से मिलना चाहती हैं। ताकि हाथ जोड़कर धन मांग सके क्योंकि राज्य एक तरह से दिवालिया हो चुका है। घोष ने कहा कि ममता बनर्जी सरकार द्वारा बड़े पैमाने पर किए गए भ्रष्टाचार की वजह से बंगाल वित्तीय संकट से गुजर रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य की खराब होती आर्थिक स्थिति और तृणमूल कांग्रेस में बढ़ती गुटबाजी से दीदी को एहसास हो गया है कि वह 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव तक राज्य को नहीं चला पाएंगी।

टीएमसी का पलटवार, हमेशा अज्ञानियों की तरह बात करते हैं घोष : घोष के बयान पर आश्चर्य व्यक्त करते हुए तृणमूल के प्रवक्ता कुणाल घोष ने कहा कि वह अज्ञानियों जैसी टिप्पणियों के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने कहा कि क्या वह संघवाद के बारे में जानते हैं, जहां पर राज्य का प्रमुख हमेशा प्रधानमंत्री से मिल सकता है? बंगाल का राजस्व पहले के मुकाबले तृणमूल कांग्रेस के शासन में बढ़ा है। उल्लेखनीय है कि ममता चार दिवसीय दौरे पर सोमवार को दिल्ली जा रही हैं। जहां 28 जुलाई को प्रधानमंत्री के साथ मुलाकात का उनका कार्यक्रम है।

16 अगस्त को 'बंगाल बचाओ दिवस' के रूप में मनाएगी भाजपा

राज्य ब्यूरो, कोलकाता : भाजपा की बंगाल इकाई ने राज्य की तृणमूल कांग्रेस सरकार द्वारा 16 अगस्त को 'खेला होबे दिवस' के तौर पर मनाए जाने पर आपत्ति जताई है। कहा कि 1946 में इसी दिन मुस्लिम लीग ने 'डायरेक्ट एक्शन डे' घोषित किया था, जिसके चलते भड़के दंगों में बड़ी संख्या में लोग मारे गए थे। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष दिलीप घोष ने कहा कि भाजपा 16 अगस्त को 'बंगाल बचाओ दिवस' के रूप में मनाएगी। तृणमूल कांग्रेस ने कहा कि राज्य सरकार ने पहले ही घोषणा की है कि वह करीब 40 साल पहले फुटबाल मैच के दौरान मारे गए फुटबाल प्रेमियों की याद में 16 अगस्त को 'खेला होबे दिवस' के तौर पर मनाएगी।

10 साल के 37.8 फीसद बच्चे फेसबुक पर सक्रिय हैं। यह दावा एनसीपीसीआर के नए अध्ययन में किया गया है। 24.3 फीसद बच्चों के पास इंस्टाग्राम अकाउंट है।

महाराष्ट्र में भूस्खलन के बाद 100 अब भी लापता

आफत ▶ उद्धव ठाकरे ने किया बाढ़ से प्रभावित चिपलूण शहर का दौरा

नारायण राणे ने केंद्र की ओर से हरसंभव मदद का दिया आश्वासन



महाराष्ट्र में कोल्हापुर के बाढ़ग्रस्त इलाके से एक घायल को निकालते राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) के जवान। प्रेट्र

मुंबई, प्रेट्र : महाराष्ट्र के विभिन्न हिस्सों में बाढ़, भूस्खलन और भारी बारिश के चलते उत्पन्न अन्य घटनाओं के बाद 100 लोग अब भी लापता हैं। राज्य सरकार ने एक बयान जारी कर कहा कि इन घटनाओं में 50 लोग घायल भी हुए हैं।

रविवार को मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने बाढ़ से प्रभावित रत्नागिरी जिले के चिपलूण शहर का दौरा किया। स्थानीय लोगों के एक समूह ने मुख्यमंत्री का काफिला रोककर उन्हें अपनी परेशानियों से अवगत कराया। मुख्यमंत्री ने स्थानीय निवासियों, व्यापारियों और दुकानदारों से बात की और हालात सामान्य बनाने के लिए लोगों को राज्य सरकार की तरफ से हरसंभव मदद का भरोसा दिया। उन्होंने कहा कि स्थिति से निपटने के दीर्घकालीन उपायों के लिए केंद्र सरकार से मदद की जरूरत होगी।

इस बीच, रायगढ़, रत्नागिरी और सतारा जिलों में राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) की टीमें राहत और बचाव अभियान में लगी हुई हैं। अब तक 1,35,313 लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा दिया गया है। शनिवार को बारिश रुकने के बावजूद सांगली में कृष्णा और कोल्हापुर में पंचगंगा नदी में बाढ़ की स्थिति में सुधार नहीं हुआ है।

सऊदी किंग ने भारत में बाढ़ से मरने वालों के प्रति शोक जताया

एएनआइ, रियाद: सऊदी किंग सलमान बिन अब्दुल अजीज अल साद ने महाराष्ट्र में आई बाढ़ और उसके बाद हुए भूस्खलन में मरने वालों के प्रति शोक व्यक्त किया है। किंग सलमान ने इस संबंध में भारत के राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द को शोक संदेश भेजा है। उल्लेखनीय है कि महाराष्ट्र में बारिश और बाढ़ से 129 लोगों की मौत हो गई और कई व्यक्ति लापता हैं। राज्य सरकार के अनुसार, महाराष्ट्र में आई प्राकृतिक आपदा के बाद एक लाख 35 हजार से ज्यादा लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया गया है। यहां हजारों पशुओं की भी मौत हो गई है।

चंद मिनटों में चीख-पुकार में बदल गया रोमांच का सफर

जागरण संवाददाता, शिमला

हिमाचल के किन्नौर में हुआ हादसा एक साथ कई परिवारों को कभी न भूलने वाले जख्म दे गया। सांगला-छितकुल मार्ग पर बटसेरी पुल के पास शनिवार से ही भूस्खलन हो रहा था। स्थानीय लोगों ने पहाड़ से बड़े-बड़े पत्थर गिरते देख जोर-जोर से चिल्लाना शुरू किया। वे कहते रहे भागो भागो...लेकिन पर्यटक वाहन का चालक उनकी एक भी आवाज नहीं सुन पाया। चंद ही सेकंड में वाहन पत्थरों की चपेट में आ गया। देश के विभिन्न राज्यों से सुकून की तलाश में ये लोग किन्नौर भ्रमण के लिए आए थे, लेकिन चंद मिनटों में उनका रोमांचक सफर चीख-पुकार में बदल गया।

मृतकों में राजस्थान के एक परिवार के तीन लोग : दिल्ली की टूर एंड ट्रैवल एजेंसी के माध्यम से उन्होंने वाहन में सीटें बुक करवाई थीं। इसमें एक परिवार के तीन लोग शामिल थे। हादसे में मरे नौ लोगों में से राजस्थान के एक ही परिवार के तीन लोग भी शामिल हैं। इनमें माया देवी बियानी बेटे के साथ घूमने आईं थीं।

इनकी गई जान

▶ प्रथम पृष्ठ से आगे

- प्रतिक्षा निवासी नागपुर, महाराष्ट्र
- दीपा शर्मा निवासी जयपुर, राजस्थान
- अमोघ बापट निवासी कोरबा दारी, छत्तीसगढ़
- सतीश खताकबार निवासी छत्तीसगढ़
- उमराव सिंह (चालक), निवासी टैगोर गार्डन, दिल्ली
- कुमार उल्हास
- अनुराग बियानी निवासी पार्शरथ मार्ग बजाज रोड, राजस्थान
- माया देवी बियानी, निवासी पार्शरथ मार्ग बजाज रोड, राजस्थान
- ऋचा बियानी निवासी निवासी पार्शरथ मार्ग बजाज रोड, राजस्थान

ये हुए हैं घायल

- शिरिल ओबराय निवासी रमेश नगर, दिल्ली
- नवीन भारद्वाज निवासी मोहाली, पंजाब
- रंजीत सिंह निवासी किन्नौर, हिमाचल प्रदेश

आइईडी हमला नाकाम, आतंकियों ने राइफल छीनी

राज्य ब्यूरो, जम्मू

उत्तरी कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में सुरक्षाबलों ने रविवार को तीन आइईडी बरामद कर आतंकियों की बड़ी साजिश को विफल कर दिया है। इन आइईडी को बरामद कर इलाके में बड़ा आतंकी हमला नाकाम कर दिया गया है। वहीं, दक्षिण कश्मीर के कुलगाम जिले में आतंकी एक पुलिसकर्मी की राइफल को छीनकर भाग गए। घटना के बाद सुरक्षाबलों ने आतंकियों की धरपकड़ के लिए पूरे इलाके को घेरकर तलाशी अभियान चलाया। देर शाम तक आतंकियों का कोई सुराग नहीं मिला था।

सुरक्षाबलों को सूत्रों से सूचना मिली थी कि आतंकियों ने कुपवाड़ा के नादरनाग अवूरा इलाके में किसी बड़े हमले को अंजाम देने की साजिश रची है। इसके बाद सुरक्षाबलों ने पूरे इलाके को घेरकर सघन तलाशी अभियान चलाया। इसी दौरान तीन आइईडी बरामद हुईं। सुरक्षाबलों के बम निरोधक दस्ते ने इन्हें तुरंत निष्क्रिय कर दिया। इन दिनों सुरक्षाबलों ने आतंकियों के खिलाफ व्यापक पर अभियान चलाया हुआ है।

वहीं, आतंकियों ने यह वारदात कुलगाम जिले के खुदवानी क्षेत्र में शम्सीपोरा क्रासिंग पर अंजाम दी। वानपोह पुलिस स्टेशन में तैनात कांस्टेबल मुदस्सर अहमद निवासी देवसर दोपहर को शम्सीपोरा क्रासिंग पर खड़ा था। तभी वहां आतंकी पहुंचे और उसकी राइफल छीनकर फरार हो गए। मुदस्सर ने अधिकारियों को सूचना दी।

बांडीपोरा में मारे गए आतंकियों में अल्ताफ बाबा भी शामिल

राज्य ब्यूरो, जम्मू : दक्षिण कश्मीर के कुलगाम जिले में सुरक्षाबलों ने रविवार को हुई मुठभेड़ में एक आतंकवादी को मार गिराया। वहीं, एक दिन पहले बांडीपोरा मुठभेड़ में मारे गए तीनों आतंकियों की सुरक्षाबलों ने पहचान कर ली है। इनमें से एक सारिक अल्ताफ बाबा शामिल है। वह तीन साल पहले अटारी सीमा से आतंकी प्रशिक्षण के लिए पाकिस्तान गया था। अन्य दोनों आतंकी विदेशी हैं। कुलगाम जिले के यारीपोरा के मुनांद गांव में सुरक्षाबलों को आतंकी के छिपे होने की सूचना मिली थी।

मतांतरण के बाद तीन आदिवासी परिवार मूल धर्म में लौटे

जागरण संवाददाता, चाईबासा

ईसाई धर्म अपनाने और चर्च जाने से कोई बीमारी नहीं होगी। इस धर्म में आकर सभी तकलीफें दूर हो जाएगी। यहां कई तरह की अन्य सुविधाएं भी मिलेंगी, जिससे जिंदगी संवर जाएगी। कुछ इसी तरह का प्रलोभन देकर लगभग एक साल पूर्व चाईबासा जिला के जगन्नाथपुर प्रखंड स्थित जलडीहा गांव के तीन आदिवासी परिवारों का मतांतरण सरना से ईसाई धर्म में करा दिया गया। हालांकि किए गए वादे पूरे नहीं हुए। इससे क्षुब्ध तीन आदिवासी परिवारों की लगभग एक साल बाद फिर से सरना धर्म में वापसी हो गई है।

वापस सरना धर्म में लौटे सुनाय उर्फ पिरकली कुई, शिवनाथ सिंकू व मुक्ता कुई ने ग्रामीण मुंडा बामिया सिंकू को बताया कि परिवार के कुछ सदस्यों को बुखार हो गया था, वे ठीक नहीं हो पा रहे थे। इस बीच किसी ने बताया कि ईसाई धर्म अपना लो। इसके बाद बीमारी, दुख-तकलीफ दूर हो जाएगी। चर्च में स्वादिष्ट भोजन भी मिलेगा। इस तरह के कई प्रलोभन मिलने के बाद दबाव में आकर वे मतांतरित हो गए, लेकिन मतांतरण के बाद समझ में आया कि सब छलावा है। ऐसा कुछ नहीं होता। आदिवासी समाज युवा महासभा ने मतांतरित परिवारों को समझाकर सरना धर्म वापसी कराई। जिलाध्यक्ष गब्बर हेंब्रम ने कहा कि तीन परिवार के 12 सदस्यों की आदिवासी विधि-विधान वापसी हुई है।

पोर्नोग्राफी रैकेट : कुंद्रा के चार कर्मचारी बने गवाह

मुंबई, एएनआइ : पोर्नोग्राफी रैकेट मामले में अभिनेत्री शिल्पा शेट्टी के पति और कारोबारी राज कुंद्रा के चार कर्मचारी उनके खिलाफ गवाह बन गए हैं। मुंबई पुलिस के सूत्रों ने रविवार को यह जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि इन कर्मचारियों ने मुंबई पुलिस की अपराध शाखा के प्रापर्टी सेल को रैकेट के कामकाज के बारे में पूरी जानकारी उपलब्ध करा दी है। इससे राज कुंद्रा की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। कथित रूप से पोर्नोग्राफिक फिल्में बनाने से जुड़े आरोपों में मुंबई पुलिस ने कुंद्रा को 11 अन्य लोगों के साथ 19 जुलाई को गिरफ्तार किया था। वे 27 जुलाई तक अपराध शाखा की हिरासत में रहेंगे। अपराध शाखा की प्रापर्टी सेल ने रविवार को इस मामले में पूछताछ के लिए टीवी अभिनेत्री व माडल गहना वशिष्ठ और दो अन्य लोगों को पूछताछ के लिए समन किया था। समाचार एजेंसी 'प्रेट्र' ने एक पुलिस अधिकारी के हवाले से बताया कि वे पूछताछ के लिए नहीं पहुंचे। इस बीच, अपराध शाखा को तलाशी के दौरान कुंद्रा के मुंबई में अंधेरी स्थित वियान एवं जेएल स्ट्रीम कार्यालयों में गुप्त अलमारियां मिली हैं। सूत्रों के अनुसार कुंद्रा को जल्द ही विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा) और मनी लांड्रिंग के मामलों का सामना करना पड़ेगा क्योंकि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) जल्द ही इन कानूनों के तहत उनके खिलाफ मामले दर्ज कर सकता है।

राज कुंद्रा से जुड़े अरविंद का कई राज्यों में नेटवर्क

जागरण संवाददाता, कानपुर : राज कुंद्रा के पोर्न फिल्मों के प्रोडक्शन हाउस का काम संभालने वाले कानपुर के अरविंद श्रीवास्तव का नेटवर्क कई राज्यों तक फैला है। उसका परिवार उसे सिंगापुर की कंपनी में काम करने वाला बता रहा है तो उत्तर प्रदेश के अलावा मध्यप्रदेश से लेकर महाराष्ट्र तक सभी जगह उसकी गतिविधियां मिली हैं। उसका पासपोर्ट मध्यप्रदेश से बना हुआ है। वहीं की एक मूवी कंपनी से उसके कनेक्शन सामने आए हैं, जो राज कुंद्रा के मामले से भी जुड़ी हुई है। कानपुर में श्याम नगर के निवासी अरविंद श्रीवास्तव ने मध्यप्रदेश से अपना पासपोर्ट बनवाया था। मप्र के भोपाल में ही फ्लिज मूवीज ओपीसी प्राइवेट लिमिटेड कंपनी है, जिससे अरविंद, उसकी पत्नी हर्षिता, पिता नर्वदा प्रसाद के बैंक खातों में रुपये आ रहे थे। पुलिस मान रही है कि इस कंपनी को खुद ही संचालित कर रहा था।

ड्रोन से फेंके विस्फोटक के निशाने पर थे जम्मू के भीड़ वाले क्षेत्र

जागरण संवाददाता, जम्मू

सरहद पार से आए ड्रोन में बंधे आइईडी (इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस) से लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मुहम्मद के आतंकी जम्मू शहर के भीड़भाड़ वाले इलाकों और आसपास कस्बों में धमाके करने की फिराक में थे। जम्मू-कश्मीर पुलिस महानिदेशक दिलबाग सिंह ने रविवार को साजिश से पर्दा उठाते हुए कहा कि स्वतंत्रता दिवस को लेकर पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर में बड़ी वारदात की फिराक में है। गौरतलब है कि 23 जून पाकिस्तानी ड्रोन हेक्साकाप्टर में करीब पांच किलो शक्तिशाली आइईडी को बांध सीमावर्ती क्षेत्र कानाचक्क के एक गांव में पुलिस ने सटीक निशाने से मार गिराया था। डीजीपी दिलबाग ने कहा कि पाकिस्तानी सेना आतंकियों की मदद करने के लिए ड्रोन से हथियार और विस्फोटक भारतीय क्षेत्र में पहुंचाने में लगातार कोशिश कर रहा है। सरहद पर मुस्तैद जवानों के कारण लश्कर और जैश-ए-मुहम्मद के आतंकी हथियार की कमी से जूझ रहे हैं। आतंकरोधी अभियान में दोनों संगठनों के आतंकी और ओवरग्राउंड वर्कर पकड़े या मारे जा रहे हैं। आतंकियों के पास हथियारों की काफी कमी हो गई है। इनकी भरपाई करने के लिए पाक अब ड्रोन से हथियार व गोलाबारूद के अलावा नकदी भारतीय क्षेत्रों में गिराकर आतंकियों की मदद करने में लगा है। उन्होंने कहा कि जैश और लश्कर भीड़वाले इलाकों में धमाके कर जानमाल की भारी तबाही को अंजाम देने की फिराक में थे। 23 जुलाई को गुढ़ा पत्तन की तरह हीरानगर सेक्टर में भी ड्रोन को मार गिराया गया था।

बलिदानियों को श्रद्धांजलि देंगे राष्ट्रपति

कारगिल विजय दिवस

राज्य ब्यूरो, जम्मू


जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के चार दिवसीय दौरे पर रविवार को श्रीनगर पहुंचे राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द को एयरपोर्ट पर सेना के जवानों ने गार्ड आफ आनर दिया। ट्विटर

राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द रविवार दोपहर जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के चार दिवसीय दौरे पर पहुंचे। अनुच्छेद-370 हटने के बाद यह उनका जम्मू-कश्मीर में पहला दौरा है। सोमवार को राष्ट्रपति कारगिल के द्रास में जाकर बलिदानियों को श्रद्धांजलि भी देंगे। श्रीनगर पहुंचने पर राष्ट्रपति को गार्ड आफ आनर दिया गया। इसके साथ ही राम नाथ कोविन्द ने रविवार को अपने कार्यकाल के चार वर्ष भी पूरे किए।

राष्ट्रपति सुबह 11:46 मिनट पर श्रीनगर एयरपोर्ट पहुंचे और इसके बाद राजभवन रवाना हो गए। पूरे श्रीनगर में सुरक्षा के कड़े प्रबंध किए हैं। एयरपोर्ट से राजभजन तक के मार्ग को सील कर दिया है। श्रीनगर एयरपोर्ट पर राष्ट्रपति का स्वागत करने के लिए उपराज्यपाल मनोज सिन्हा के अलावा पुलिस और प्रशासन के कई अधिकारी मौजूद थे।

प्रशासनिक अधिकारियों के अनुसार, चार दिन की यात्रा के दौरान, राष्ट्रपति कारगिल विजय दिवस के 22 वर्ष पूरे होने पर द्रास वार मेमोरियल में सैनिकों के शौर्य और बलिदान को याद कर उन्हें श्रद्धांजलि देंगे। लद्दाख के उपराज्यपाल आरके माथुर, चीफ आफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत सहित सेना के कई वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद रहेंगे। वहीं, लद्दाख से लेकर कश्मीर में सुरक्षा व्यवस्था सख्त है। द्रास से लौट कर राष्ट्रपति 27 जुलाई मंगलवार कश्मीर विश्वविद्यालय के 19वें दीक्षांत समारोह में भाग लेंगे। उपराज्यपाल मनोज सिन्हा और कश्मीर विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर प्रो. तलत अहमद भी मौजूद रहेंगे। यह दीक्षांत समारोह नौ वर्ष बाद हो रहा है। राष्ट्रपति बुधवार को दिल्ली रवाना होंगे। राष्ट्रपति दौरे को देखते हुए राजभवन तक जाने वाले मार्ग पर ट्रैफिक व्यवस्था में बदलाव किया है।

अब घाटी में हर जगह फहराता है तिरंगा...

विकास शर्मा, चंडीगढ़

दुनिया के सबसे ऊंचे युद्ध क्षेत्र पर पाकिस्तान को धूल चटाने की खुशी में जब देश कारगिल विजय दिवस (26 जुलाई) मना रहा है, उस समय थल सेनाध्यक्ष रहे जनरल वीपी मलिक कश्मीर में बदली आबोहवा से आह्लादित हैं। वह कहते हैं कि सैनिकों की शहादत का असर अब घाटी में दिखने लगा है। आज हर छोटी-बड़ी सरकारी इमारत पर तिरंगे को फहराते हुए देखकर काफी अच्छा लगता है।

जनरल वीपी मलिक इसी महीने अपनी पत्नी रंजना मलिक के साथ श्रीनगर घुमने गए थे। यात्रा को यादगार बनाने के लिए उन्होंने श्रीनगर की डल लेक से एक फोटो ट्विटर पर शेयर की। फोटो की कैप्शन में उन्होंने खुबसूरत नजारों के बजाय टाइगर हिल में मिली जीत का जिक्र किया।

सेना में भी बढ़ा है आत्मविश्वास : वीपी मलिक ने बताया कि रिटायर्ड जनरल होने के नाते उनकी यात्रा की मेजबानी सेना ने की थी। इस दौरान वह श्रीनगर समेत उरी और बारामूला भी गए। सैन्य अफसरों से बातचीत में महसूस किया कि अनुच्छेद 370 हटाने के बाद सेना का आत्मविश्वास बढ़ा है। सेना के सामने जमीनी स्तर पर काम करने में दिक्कतें काफी कम हुई हैं। हालात सामान्य करने के लिए बेहद स्मार्ट तरीके से काम किया जा रहा है। कई स्तरों पर काम चल रहा है। आतंकी नेटवर्क को खत्म करने के साथ स्थानीय लोगों से मेलजोल बढ़ाया जा रहा है।

लोग भी चाहते हैं घाटी में शांति : मलिक ने बताया कि घाटी के लोगों को भी समझ आने लगा है कि पत्थर और बंदूक लेकर सेना और सरकार से नहीं लड़ा जा सकता। इससे उनका अपना नुकसान हो रहा है। लोग अब शांति चाहते हैं।

बच्चे और युवा पीढ़ी भी स्कूल-कालेज में जाकर अपने भविष्य को संवारने की बात करने लगी है। यह भविष्य के लिए अच्छे संकेत हैं। पड़ोसी देश पाकिस्तान को भी यह बात जितनी जल्दी समझ आ जाए, उतना ही उसके लिए अच्छा है। कारगिल युद्ध का जिक्र करते हुए कहते हैं कि इस युद्ध में हमारे जूनियर अधिकारियों ने अदम्य साहस का परिचय दिया था और बहादुरी की नई मिसाल कायम की थी। इस जोश और जज्बे को जगाए रखना चाहिए।

हौसला बढ़ाने कारगिल के अग्रिम इलाकों में पहुंचे सीडीएस रावत

कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में सीडीएस जनरल बिपिन रावत ने रविवार को सीमा पर अग्रिम इलाकों में पहुंचकर जवानों का हौसला बढ़ाया। कारगिल के कई अग्रिम इलाकों का दौरा किया। वह कारगिल दिवस पर द्रास में आयोजित समारोह में हिस्सा लेने पहुंचे हैं। जनरल बिपिन रावत सोमवार को 22वें कारगिल विजय दिवस कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए द्रास पहुंच रहे राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द का स्वागत करेंगे।

जम्मू कश्मीर में चार माह रही स्वर्णिम मशाल

विजय मशाल जम्मू-कश्मीर में चार अप्रैल से 23 जुलाई तक रही। इस दौरान विजय मशाल के सम्मान में प्रदेश के लगभग सभी जिलों में कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। अब यह लद्दाख पहुंच गई है। अभी यह कारगिल जिले के द्रास में हैं। कारगिल विजय दिवस के बाद यह कारगिल और लेह दोनों जिलों में विभिन्न कार्यक्रमों में जाएगा।

कारगिल विजय दिवस समारोह में फिल्म शेरशाह का ट्रेलर लांच


कारगिल युद्ध में शहीद हुए कैप्टन विक्रम बत्रा का फाइल फोटो। इंटरनेट मीडिया

स्मिता श्रीवास्तव, कारगिल : कारगिल विजय दिवस की बाइसवीं सालगिरह की पूर्व संध्या पर रविवार को द्रास में शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए आयोजित समारोह में फिल्म शेरशाह का ट्रेलर लांच किया गया। कारगिल युद्ध में शहीद हुए कैप्टन विक्रम बत्रा के जीवन पर आधारित इस फिल्म में मुख्य भूमिकाओं में सिद्धार्थ मल्होत्रा व कियारा आडवाणी हैं।

इस मौके पर फिल्म के कलाकारों, निर्देशक विष्णु वर्धन, निर्माता करण जौहर, चीफ आफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत, विक्रम बत्रा के जुड़वां भाई विशाल बत्रा समेत कारगिल शहीदों के स्वजन मौजूद रहे। समारोह में जवानों ने कर चले हम फिदा..., चक दे इंडिया..., ऐ वतन मेरे वतन... जैसे गानों पर प्रस्तुतियां दीं। शहीदों के स्वजन को सम्मानित किया गया। करण जौहर ने कहा, 'मैं सेना का शुक्रगुजार हूं कि उन्होंने हमें इस काबिल समझा कि हम उनके सामने शेरशाह फिल्म का ट्रेलर लांच कर पाएं। हमारे लिए यह केवल एक फिल्म नहीं, बल्कि भावना है।'

जनरल बिपिन रावत ने कहा, 'मुझे खुशी है कि कैप्टन विक्रम बत्रा पर फिल्म बनाई गई है। यह एक शुरुआत है, आगे यही चाहेंगे कि अन्य वीरों पर भी फिल्में बनाई जाएं। फिल्म कई देशों तक पहुंचेगी। ऐसे में हिंदुस्तानी फौज का जज्बा और साहस देखकर दुश्मनों को यह संदेश जरूर मिलेगा कि अगर वे हमसे टकराएंगे, तो चूरचूर हो जाएंगे।'

कौन थे कैप्टन विक्रम बत्रा : साल 1999 में कारगिल में हुए पाकिस्तान से युद्ध में भारत को विजय दिलाने में कैप्टन विक्रम बत्रा की महत्वपूर्ण भूमिका रही। नौ सितंबर, 1974 को हिमाचल प्रदेश में पैदा हुए कैप्टन विक्रम ने कारगिल युद्ध के दौरान अदम्य शौर्य का प्रदर्शन किया था। कैप्टन विक्रम को 15 अगस्त, 1999 को मरणोपरांत सर्वोच्च वीरता पुरस्कार परमवीर चक्र से नवाजा गया था।



पीठ और टांगों में गोले बांधकर चढ़ गए थे कारगिल की चोटियां

सेना की एक आवाज पर उठ खड़े हुए थे गांव के युवा, फौज की अहम साथी बनी थी टांडा टाइगर फोर्स

कारगिल विजय दिवस (26 जुलाई) पर विशेष

अवधेश चौहान ● जम्मू


टांडा टाइगर फोर्स के नायक केपी सिंह को नार्दर्न कमान की ओर से सम्मानित करते तत्कालीन जीओसी 10 डिव. मे. जनरल राकेश कुमार शर्मा ● सौ. केपी सिंह

3,500 युवाओं ने 25 हजार फुट ऊंची चोटियों पर पहुंचाए हथियार और रसद

25 पोर्टर कारगिल युद्ध में गंभीर रूप से घायल हुए और सात ने देश के लिए बलिदान दिया


टांडा टाइगर फोर्स का हिस्सा बन कारगिल में आपरेशन विजय में भाग लेने वाले विजय शर्मा अपने परिवार के साथ ● जागरण

22 साल पहले कारगिल में 25 हजार फुट ऊंची बर्फीली चोटियों पर लड़े गए युद्ध के 3,500 ऐसे नायक भी हैं, जिनके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। ये जांबाज न सिर्फ सेना की एक आवाज पर उठ खड़े हुए थे बल्कि जवानों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर भारतीय क्षेत्र में दाखिल हो चुके पाकिस्तानी घुसपैठियों को खदेड़कर ही वापस लौटे। जम्मू और आसपास के जिलों के ग्रामीण युवाओं की टांडा टाइगर फोर्स के जवान अपनी पीठ और टांगों पर बम के गोले बांधकर पहाड़ चढ़ गए थे।

सेना के साथ पोर्टर (कुली) के रूप में काम करते हुए इन युवाओं ने भारतीय चौकियों और अग्रिम मोर्चों तक गोलाबारूद के साथ खाना और रसद भी पहुंचाई, ताकि हमारे जवान मजबूती से दुश्मन के सामने डटे रहें। कारगिल युद्ध में टांडा टाइगर फोर्स के सात पोर्टर ने देश के लिए बलिदान दिया और 25 गंभीर रूप से घायल हुए। कारगिल विजय दिवस की 21वीं वर्षगांठ पर पूरा देश इन वीरों को सलाम करता है।

स्थानीय युवाओं को प्रेरित करने को कहा: वर्ष 1999 में कारगिल की पहाड़ियों पर पाकिस्तानी सैनिकों ने घुसपैठ कर कब्जा कर लिया था। युद्ध के दौरान सेना को ऊंची पहाड़ियों तक हथियार, गोलाबारूद और अन्य रसद पहुंचाने में पोर्टर की भारी कमी महसूस हुई। उन दिनों कर्नल जेपी सिंह ऊधमपुर कमान मुख्यालय में तैनात थे। स्थानीय होने के नाते कर्नल जेपी सिंह ने जम्मू जिले की अखनूर तहसील के अपने गांव टांडा के युवाओं को पोर्टर के रूप में भर्ती कर छह एडहाक (अस्थायी) कंपनियां तैयार करने का जिम्मा अपने भाई केपी सिंह को सौंपा। तत्कालीन राज्यसभा सदस्य व जम्मू-कश्मीर के पूर्व सदर-ए-रियासत डा. कर्ण सिंह ने भी परिस्थितियों को देखते हुए केपी सिंह को युवाओं को प्रेरित करने को कहा।

एक आवाज पर आ गए युवा: जम्मू से 35 किलोमीटर दूर टांडा गांव में रहने वाले केपी सिंह पोर्टरों की समानांतर फौज तैयार करने में जुट गए। छोटे से टांडा गांव के ही करीब 500 युवा उनके साथ हो लिए। देश पर खतरे को भांपते हुए सीमावर्ती गांव ज्यौड़ियां, खौड़, परगवाल, छम्ब और कठुआ, ऊधमपुर व सांबा तक के युवाओं में देशभक्ति का जज्बा हिलोरे मारने लगा।

15 दिन की कड़ी ट्रेनिंग: केपी सिंह ने पोर्टरों की इस फोर्स को 'अखनूर टांडा टाइगर फोर्स' नाम दिया। इन जांबाजों को कारगिल की ऊंची चोटियों पर भेजने से पहले 15 दिन तक कड़ी ट्रेनिंग दी गई। आखिरकार उन्हें छह जून, 1999 को पहाड़ों पर गोलाबारूद और रसद ले जाने के लिए तैनात कर दिया गया। भारत माता की जय के नारे लगाते हुए इन पोर्टरों ने कारगिल युद्ध जीतने में अहम योगदान दिया।

अधिकारों की लड़ रहे लड़ाई: टांडा टाइगर फोर्स के युवाओं को एक मलाल है कि उन्हें आश्वासन के बावजूद कारगिल युद्ध खत्म होने के बाद सेना की नियमित भर्ती के दौरान कोई प्राथमिकता नहीं दी गई। इन्हें युद्ध के दौरान 2,500 से 4,000 रुपये महीना मेहनताना मिलता था। ये युद्ध समाप्ति के बाद गोलाबारूद संभालने के लिए नवंबर 1999 तक मोर्चे पर डटे रहे। केपी सिंह उनके अधिकारों के लिए लड़ रहे हैं।

सेना ने हौसले को सराहा था: कारगिल डिवीजन के तत्कालीन जनरल आफिसर कमांडिंग (जीओसी) मेजर जनरल वीएस भुल्लर ने टांडा फोर्स के जवानों के हौसले व सहयोग को सराहा था। जम्मू-कश्मीर के तत्कालीन राज्यपाल जीसी सक्सेना भी केपी सिंह को सम्मानित कर चुके हैं।

इस खबर को विस्तार से पढ़ने के लिए स्कैन करें

जब पाकिस्तान के तीन गोले गिरे

कारगिल युद्ध में पोर्टर की भूमिका निभाने वाले विजय शर्मा बताते हैं, युद्ध के दौरान जब भारतीय जवान 25 हजार फुट की ऊंचाई पर पहुंचे तो चारों तरफ बर्फ ही बर्फ थी। सांस और खून जमा देने वाली ठंड के बीच हमें एक गोला पीठ पर और दो गोले टांगों में बांध कर 30 किलो वजन लेकर रस्सी के सहारे 50 फुट ऊपर चढ़ना पड़ता था। जवानों के लिए हथियार व गोलाबारूद के अलावा केरोसिन, खाने का सामान आदि भी हम ले जाते थे। कई बार तो सेना के जवान भी कहते थे कि इतना जोखिम मत उठाओ, लेकिन उस समय हम सभी का लक्ष्य टाइगर हिल पर तिरंगा फहराने का था। विजय शर्मा ने कहा, एक बार टाइगर हिल और उसके आसपास निगरानी कर रहे पाकिस्तानी सैनिकों ने हमारी मूवमेंट को भांप लिया। उन्होंने तीन गोले हमारी तरफ दागे। हम सांसें थामकर बैठ गए। सामने मौत दिखी, लेकिन तीनों गोले बर्फ में दब गए, फटे नहीं और हम अपने लक्ष्य पर आगे बढ़ गए।

पिछले हफ्ते लगभग स्थिर ही रही संक्रमण दर, मौतें 16 फीसद घटीं

संक्रमण की समीक्षा ▸ कोरोना संक्रमण के 2,66,216 मामले मिले और 3,436 मौतें हुई

जेएनएन, नई दिल्ली

कोरोना महामारी की दूसरी लहर में संक्रमण के मामलों में स्थिरता आ गई है। पिछले हफ्ते नए मामलों में मात्र एक फीसद की कमी दर्ज की गई है, जबकि मौतें 16 फीसद घटी हैं। अगर हम पूरे विश्व की बात करें तो नए मामले तीन फीसद और मौतें चार फीसद बढ़ी हैं।

वर्ल्डोमीटर के आंकड़ों के मुताबिक पिछले सात दिनों में देश में संक्रमण के कुल 2,66,216 मामले सामने आए, जबकि उससे पहले के सात दिनों में 2,69,039 केस पाए गए थे। मामलों में यह कमी एक फीसद बैठती है। इसी तरह बीते हफ्ते 3,436 मौतें हुईं, जबकि उसके पहले के सात दिनों में 4,090 मौतें हुई थीं। मौतों में यह कमी 16 फीसद बैठती है।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की तरफ से रविवार सुबह आठ बजे अपडेट किए गए आंकड़ों के मुताबिक नए मामलों की तुलना में ज्यादा मरीज तो ठीक हुए हैं, लेकिन दोनों के बीच अंतर मात्र 230 का रहा है। हालांकि, पिछले 34 दिनों से लगातार दैनिक संक्रमण दर तीन फीसद से नीचे बनी हुई है।

उपलब्ध हैं वैक्सीन की 3.29 करोड़ डोज : मंत्रालय ने बताया कि राज्यों, केंद्र शासित प्रदेशों और निजी अस्पतालों के पास अभी कोरोना वैक्सीन की 3.29 करोड़ डोज उपलब्ध हैं। केंद्र की तरफ से अभी तक कुल 45.37 करोड़ मुहैया कराई गई हैं।



संक्रमण से बचाने की कवायद। फाइल फोटो

देश में कोरोना की स्थिति

24 घंटे में नए मामले	39,742
कुल सक्रिय मामले	4,08,212
24 घंटे में टीकाकरण	52.68 लाख
कुल टीकाकरण	43.31 करोड़

रविवार सुबह आठ बजे तक कोरोना की स्थिति

नए मामले	39,742
कुल मामले	3,13,71,901
सक्रिय मामले	4,08,212
मौतें (24 घंटे में)	535
कुल मौतें	4,20,561
ठीक होने की दर	97.36 फीसद
मृत्यु दर	1.34 फीसद
पाजिटिविटी दर	2.31 फीसद
सा. पाजिटिविटी दर	2.24 फीसद
जांचें (शनिवार)	17,18,756
कुल जांचें	45,62,89,567

रविवार शाम छह बजे तक किस राज्य में कितने टीके

बिहार	3.42 लाख
गुजरात	3.06 लाख
राजस्थान	1.60 लाख
झारखंड	1.11 लाख
महाराष्ट्र	1.06 लाख
बंगाल	0.65 लाख
छत्तीसगढ़	0.55 लाख
हरियाणा	0.33 लाख
जम्मू-कश्मीर	0.28 लाख
पंजाब	0.20 लाख
दिल्ली	0.10 लाख
उत्तर प्रदेश	0.09 लाख
उत्तराखंड	0.09 लाख

(कोविन प्लेटफार्म के आंकड़े)

कांवड़ मेला रद होने का प्रचार करेगा रेलवे

संवाद सूत्र, लक्सर (हरिद्वार)

▸ प्रचार-प्रसार के लिए राजकीय रेलवे पुलिस की तीन टीमें गठित

▸ यात्रियों को जागरूक करने के लिए ट्रेनों पर भी लगवाए जा रहे पोस्टर

कोरोना संक्रमण को देखते हुए उत्तराखंड सरकार कांवड़ मेला रद कर चुकी है। बावजूद इसके अब भी बड़ी संख्या में कांवड़ यात्री हरिद्वार का रुख कर रहे हैं। इसके लिए अब रेलवे ने तय किया है कि कांवड़ मेला रद होने का प्रचार-प्रसार किया जाए। इसके लिए राजकीय रेलवे पुलिस (जीआरपी) की तीन टीम बनाई गई हैं। प्रचार के मकसद से ये टीम दिल्ली, उत्तर प्रदेश और हरियाणा भेजी जाएंगी।

जीआरपी के अपर पुलिस अधीक्षक मनोज कत्याल ने बताया कि जीआरपी भी यात्रियों को जागरूक कर रहा है कि कांवड़ यात्रा के लिए हरिद्वार न आएं। जीआरपी के जवान ट्रेन में ऐसे यात्रियों की पहचान कर रहे हैं। कांवड़ की वेशभूषा में सवार यात्रियों को लक्सर और रुड़की में उतारकर बसों में बिठा उत्तर प्रदेश सीमा पर छोड़ा जा रहा है। इसके अलावा ट्रेनों पर भी पोस्टर लगाकर यात्रियों को जागरूक किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि कई यात्रियों को मेला रद होने की जानकारी नहीं है। ऐसे में यात्रियों को अनावश्यक परेशानी न हो इसके लिए रेलवे की ओर से यह अभियान चलाया जा रहा है। अपर पुलिस अधीक्षक के अनुसार जीआरपी की टीमें प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न शहरों में स्थानीय पुलिस और धार्मिक संस्थाओं का सहयोग लेंगी।

हरियाणा के 14 कांवड़ यात्रियों पर मुकदमा : प्रतिबंध के बावजूद जल लेने सोनीपत (हरियाणा) से हरिद्वार पहुंचे 14 कांवड़ यात्रियों के खिलाफ पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया। इन यात्रियों को 14 दिन के लिए क्वारंटाइन किया जाएगा। ये यात्री आम श्रद्धालुओं के तौर पर हरिद्वार पहुंचे और यहां कांवड़ यात्रियों की वेशभूषा धारण कर बम-बम उद्घोष करते हुए हरकी पैड़ी पहुंचे। पुलिस क्षेत्राधिकारी (नगर) अभय प्रताप सिंह ने बताया कि ये सभी ग्राम कुंडली जिला सोनीपत (हरियाणा) के रहने वाले हैं। उन्होंने बताया कि इसके अलावा दो दुकानदारों पर भी मुकदमे दर्ज किए गए हैं। इन दुकानदारों से आरोपितों ने कांवड़ से संबंधित सामाग्री खरीदी थी।

सामुदायिक रेडियो स्टेशनों से टीके को लेकर भ्रांतियां दूर करने की अपील

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने सामुदायिक रेडियो स्टेशनों से कोरोना टीके को लेकर समाज में फैली भ्रांतियों को दूर करने की अपील की है। इनसे कोरोना से बचाव के उपायों को अपनाने के लिए जागरूकता फैलाने का भी आग्रह किया गया है।

मंत्रालय की तरफ से 16 राज्यों से आए सामुदायिक रेडियो स्टेशनों के प्रतिनिधियों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें उनसे यह अपील की गई। यूनिसेफ के साथ मिलकर मंत्रालय ने इस कार्यशाला का आयोजन किया था। एक आधिकारिक बयान में कहा गया है कि कार्यशाला में देश के दूर दराज के इलाकों में रहने वाले लोगों के बीच कोरोना रोधी वैक्सीन को लेकर फैली भ्रांतियों को दूर करने और महामारी से बचाव के उपायों को अपनाने के लिए जागरूकता फैलाने की जरूरत पर बल दिया गया।

स्वास्थ्य मंत्रालय में संयुक्त सचिव लव अग्रवाल ने अपने उद्घाटन भाषण में दुनिया के सबसे बड़े टीकाकरण अभियान में सामुदायिक रेडियो स्टेशनों के योगदान को स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि रेडियो स्टेशन द्वारा टीकाकरण को लेकर सूचना देने वाले कार्यक्रमों के प्रसारण से टीकाकरण अभियान में सामुदायिक भागीदारी बढ़ी है।

आधी हुई संक्रमण रोधी दवाओं की मांग

मुकेश चंद्र श्रीवास्तव, वाराणसी

कोरोना की दूसरी लहर के थमते ही दवाओं की बिक्री घट गई। अप्रैल की तुलना में अभी संक्रमण रोधी दवाइयों की बिक्री आधी से भी कम हो गई है।

आइएमएस हेल्थ एंड क्वालिटीज आर नाउ की आइक्यूवीआइए संस्था की ओर से अप्रैल 2021 में जारी मार्केट फीडबैक रिपोर्ट बताती है कि देश की शीर्ष 40 दवा कंपनियों ने मार्च की तुलना में शानदार कारोबार किया। सबसे अधिक 2256 करोड़ का कारोबार संक्रमण रोधी (एंटी इंफेक्टिव) दवाओं ने किया। हालांकि, दूसरी लहर का असर कम होते ही मई और जून में दवा कारोबार में आया यह उछाल पिछले साल की तुलना में कम होता गया। वहीं, जून में संक्रमण रोधी दवाओं की वृद्धि घटकर 20.5 फीसद रह गई और कुल बिक्री मात्र 1334.7 करोड़ की ही हुई। सबसे चौंकाने वाला आंकड़ा एंटी वायरल दवाओं का रहा। अप्रैल में जहां इसकी बिक्री में 1320.4 फीसद वृद्धि दर्ज की गई थी, वहीं पिछले साल की तुलना में इस बार जून में यह घटकर 84.7 फीसद पर आ गई।

एंटी वायरल

माह	कारोबार	वृद्धि दर
अप्रैल	869.1	1320.4
मई	577.39	746.5
जून	149.5	84.7

हृदय

माह	कारोबार	वृद्धि दर
अप्रैल	2065.0	22.1
मई	1990.52	27.3
जून	1735.0	7.2

संक्रमण रोधी

माह	कारोबार	वृद्धि दर
अप्रैल	2256.5	138.3
मई	2184.05	135.7
जून	1334.7	20.5

श्वास

माह	कारोबार	वृद्धि दर
अप्रैल	12322.2	13.5
मई	1447.25	117.2
जून	899.5	23.0

(कारोबार करोड़ रुपये व बिक्री में वृद्धि फीसद में)

पिछले साल के अप्रैल की तुलना में इस साल दवा कारोबार बेहतर रहा। हालांकि, पिछले साल के सापेक्ष इस साल मई व जून में दवाओं की बिक्री की वृद्धि दर कुछ घटी है। सबसे अधिक बुखार, इंफेक्शन, पेट, हृदय, शुगर व सांस संबंधी बीमारियों की दवाओं की बिक्री हो रही है।
- मनोज खन्ना, अध्यक्ष, केमिस्ट एंड ड्रगिस्ट वेलफेयर एसोसिएशन

दवा कारोबार के मामले में देश के शीर्ष 30 शहरों में बनारस अप्रैल व मई में 12वें स्थान पर था। जून में वह 13वें नंबर पर आ गया। यहां से पूरे पूर्वांचल व बिहार के कुछ हिस्सों में दवा की आपूर्ति होती है। देश में पिछले साल के सापेक्ष अप्रैल व मई में बिक्री दर में वृद्धि माइनस 1 व 5 फीसद थी, जो जून में बढ़कर 11 फीसद हो गई।
- संदीप चतुर्वेदी, कार्यकारी अध्यक्ष, केमिस्ट ड्रगिस्ट फेडरेशन, उप्र

नयना देवी में बिना मास्क मिले तो लगेगा जुर्माना

सुनील शर्मा, बिलासपुर

▸ मंदिर न्यास समिति ने कोरोना से बचाव के लिए सख्त किए दिशानिर्देश

उत्तर भारत की सुप्रसिद्ध शक्ति पीठ श्रीनयना देवी मंदिर में अब अगर बिना मास्क लगाए पकड़े गए तो जुर्माने के साथ कोरोना टेस्ट भी करवाना होगा। मंदिर न्यास समिति ने बढ़ती भीड़ को देख यह फैसला लिया है। नौ अगस्त से श्रीनयना देवी में मेले शुरू होने जा रहे हैं। उनमें प्रतिदिन करीब 60 हजार लोग शीष नवाने पहुंचते हैं। ऐसे में श्रीनयना देवी प्रशासन व मंदिर न्यास समिति ने लोगों की कोरोना से सुरक्षा के लिए सख्ती बरतनी शुरू कर दी है।

रविवार को पहुंचे 30 हजार श्रद्धालु : श्रीनयना मंदिर परिसर में रविवार को श्रद्धालुओं की भीड़ ने रिकार्ड दर्ज किया। कोरोना महामारी के बाद खुले मंदिर में अचानक काफी भीड़ आने लगी है। मंदिर न्यास समिति के सदस्यों ने बताया कि पिछले रविवार भी मां के भक्तों की संख्या 30 हजार के करीब पहुंच गई थी। इस रविवार भी संख्या 30 हजार पार गई।

160 ढाबा संचालकों का कोरोना टेस्ट करवाया : एसडीएम श्रीनयना ने बताया कि मेले के दृष्टिगत उन्होंने क्षेत्र के ढाबा व रेस्तरां संचालकों के कोरोना टेस्ट करवाए हैं। क्षेत्र की सारी मार्किट, टोबा, स्वारघाट मार्किट में कोरोना टेस्ट करवाए गए हैं।

मेले के दौरान 60 हजार लोग प्रतिदिन पहुंचने का अनुमान : शक्तिपीठ श्रीनयना में पंजाब सहित अन्य राज्यों से प्रतिदिन 60 हजार से भक्त पहुंचते हैं। इस बार भी इतने या इससे ज्यादा लोग पहुंचने का अनुमान है।

मंदिर न्यास समिति ने बिना मास्क घूमने वाले लोगों पर नजर रखना शुरू कर दिया है। ऐसे लोगों से पुलिस जुर्माना वसूलेगी और साथ ही उनका कोरोना टेस्ट करवाना भी सुनिश्चित किया जाएगा। इसके लिए कोरोना टेस्ट केंद्र स्थापित किया गया है, जिसमें रैपिड एंटीजन टेस्ट की व्यवस्था होगी। लोगों को मंदिर समिति की तरफ से निशुल्क मास्क दिया जाएगा, लेकिन मास्क नहीं पहनने पर उन्हें जुर्माने का भी प्रावधान रखा गया है।
सुभाष गौतम, मंदिर न्यास समिति के अध्यक्ष व एसडीएम श्रीश्रीनयना देवी

जम्मू कश्मीर में अब किसी भी जिले में वीकेंड कर्फ्यू नहीं

राज्य ब्यूरो, जम्मू

लगातार दम तोड़ रहे कोरोना संक्रमण के चलते जम्मू कश्मीर में अब सबकुछ तेजी से सामान्य हो रहा है। इसी क्रम में प्रदेश प्रशासन ने रविवार को प्रदेश में वीकेंड कर्फ्यू को पूरी तरह खत्म कर दिया है। अब किसी भी जिले में वीकेंड कर्फ्यू नहीं होगा। हालांकि, प्रदेश के 20 में से 13 जिलों में पहले से ही वीकेंड कर्फ्यू नहीं था। अलबत्ता, सभी जिलों में रात आठ बजे से सुबह सात बजे तक रात का कर्फ्यू जरूर जारी रहेगा।

कोरोना संक्रमण लगातार काबू होने के मद्देनजर राज्य कार्यकारी समिति की कुछ दिनों पहले बैठक हुई थी। इस बैठक में प्रदेश के मुख्य सचिव अरुण कुमार मेहता ने स्वास्थ्य विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव अटल ढुल्लु, गृह विभाग के प्रमुख सचिव, मंडलायुक्तों, जिला उपायुक्तों और पुलिस अधिकारियों के साथ कोरोना की स्थिति पर विचार-विमर्श किया था। इसमें निष्कर्ष निकला कि पिछले सप्ताह के मुकाबले कोरोना की स्थिति में लगातार सुधार आ रहा है। इसके बाद फैसला हुआ कि प्रदेश में पूरी तरह से वीकेंड कर्फ्यू हटा लिया जाए। साथ ही सभी जिलों में कोरोना की रोकथाम के लिए जारी दिशा-निर्देशों का पालन जारी रखने पर जोर दिया गया।

राज्य कार्यकारी समिति ने आदेश दिया सरकारी और निजी शिक्षण संस्थान प्रशासनिक कार्य के लिए सीमित संख्या में वैक्सीन लगे हुए स्टाफ को बुला सकते है। शैक्षणिक संस्थान 31 जुलाई तक पहले से ही बंद हैं। इनडोर और आउटडोर समारोहों में लोगों के इकट्ठा होने की संख्या पहले की तरह 25 ही रहेगी। रात का कर्फ्यू भी जारी रहेगा। पंचायत स्तर पर निगरानी होगी।

राष्ट्रीय फलक

न्यूज गैलरी

लैब संचालक की निशानदेही पर लैपटाप बरामद

हरिद्वार : कुंभ में कोरोना टेस्टिंग फर्जीवाड़े में गिरफ्तारी के बाद रिमांड पर लिए गए भिवानी के लैब संचालक आशीष वशिष्ठ की निशानदेही पर एसआइटी ने हरियाणा से लैपटाप व एक रजिस्टर बरामद किया है। हिसार और भिवानी के बाद एसआइटी दिल्ली होते हुए आशीष को हरिद्वार लेकर पहुंची। कोर्ट में पेश करने के बाद उसे जेल भेजा गया है। (जासं)

बाबा रामदेव के खिलाफ याचिका पर सुनवाई आज

नई दिल्ली : कोरोना महामारी की दूसरी लहर के दौरान योग गुरु बाबा रामदेव द्वारा एलोपैथी के खिलाफ दिए गए कथित बयान के खिलाफ चिकित्सकों के सात संघों की तरफ से दायर याचिका पर आज दिल्ली हाई कोर्ट में सुनवाई होगी। डाक्टरों के संघों ने रामदेव पर एलोपैथ को लेकर गलत सूचना फैलाने का आरोप लगाया है। सोमवार को न्यायमूर्ति सी हरिशंकर की पीठ मामले में सुनवाई करेगी। (जासं)

भाषाई अल्पसंख्यकों को लाभ की मांग पर कोर्ट में दस्तक

नई दिल्ली : तमिलनाडु स्थित शिक्षण संगठनों ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल कर केंद्र को धार्मिक की तरह भाषाई अल्पसंख्यकों की पहचान करने के लिए अधिसूचना जारी करने की मांग की है। याचिका में कहा गया है कि एक इकाई की तरह उनकी पहचान हो। (प्रेट्र)

भड़काऊ पोस्ट को लेकर एनआइए ने छापेमारी की

चेन्नई : राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआइए) ने इस्लामिक स्टेट (आइएस) आतंकी समूह और कट्टरपंथी संगठन हिज्ब-उत-तहरीर की विचारधारा की वकालत करने वाले एक चरमपंथी अब्दुल्ला की फेसबुक पोस्ट से जुड़े मामले में तमिलनाडु के चार जिलों में छह स्थानों पर छापेमारी की है। (प्रेट्र)

हावड़ा-पटना रेलमार्ग पर साढ़े सात घंटे थमी रहीं ट्रेन

लखीसराय : बिहार में बड़हिया स्टेशन पर रविवार को लोगों ने रेल रोको आंदोलन के तहत साढ़े सात घंटे तक ट्रेन परिचालन ठप कर दिया। इस कारण हावड़ा- पटना मुख्य रेलमार्ग पर साढ़े सात घंटे तक ट्रेनें थमी रहीं। (जासं)

वादी न प्रतिवादी... 62 वर्षों से तारीख पर तारीख

अरुण विक्रांत, बक्सर

▸ बक्सर के डुमरांव अनुमंडलीय न्यायालय में चल रहा अनोखा मुकदमा

▸ केस के बाद 20 वर्षों तक आए पैरवीकार, पिछले 40 वर्षों से दोनों पक्ष से कोई भी नहीं आ रहा

▸ वह सिनेमा हाल भी नहीं, जिससे जुड़ा था मामला, आज फिर सुनवाई की तारीख

अब न वादी है, न प्रतिवादी। वह सिनेमा हाल भी नहीं, जिसको लेकर मुकदमा चला। लेकिन, 62 साल बाद भी तारीख पर तारीख पड़ रही है।

बिहार के बक्सर जिले के डुमरांव अनुमंडलीय कोर्ट का यह मामला चर्चा में है। मुकदमा उस समय का है, जब वर्तमान भोजपुर, बक्सर, भभुआ और रोहतास को मिलाकर एक जिला हुआ करता था शाहाबाद। उस जमाने में पूरे बक्सर जिले में इकलौता सिनेमा हाल हुआ करता था, जिसका नाम था तुलसी टाकीज। इसके मालिक थे बद्री प्रसाद जायसवाल। वह अब इस दुनिया में नहीं हैं। बम्बई (अब मुंबई) की फिल्म वितरक कंपनी गाउमंट काली प्राइवेट लिमिटेड के साथ लेनदेन को लेकर कुछ विवाद हुआ। कंपनी ने बाम्बे हाईकोर्ट की शरण ली। 24 नवंबर, 1958 को न्यायाधीश न्यायमूर्ति केटी देसाई ने तुलसी टाकीज में लगा कंपनी का प्रोजेक्टर और लाइट आदि लौटाने का आदेश दिया। 60 हजार रुपये भी दिए जाने थे। इसका अनुपालन कराने के लिए कंपनी के वकील आदेश लेने को शाहाबाद की स्थानीय अदालत पहुंचे। इस पर सिनेमा हाल के मालिक ने मोहलत देने की मांग करते हुए उनका पक्ष भी सुने जाने का आग्रह किया। कोर्ट ने यथास्थिति बनाए रखने का अंतरिम आदेश दिया।

इस बीच बद्री प्रसाद ने पटना हाई कोर्ट में अपील कर कहा कि उनका पक्ष नहीं सुना गया था, जिस पर स्थगनादेश निर्गत कर दिया गया। फिर यह मामला आरा कोर्ट में चलने लगा। बक्सर जिला बना तो वहां स्थानांतरित हो गया। कुछ साल पहले डुमरांव में अनुमंडलीय दीवानी न्यायालय बनने के बाद मुकदमा वहां की अदालत में चला गया। इसकी अगली तारीख फिर 26 जुलाई को पड़ी है। इस समय यह मुकदमा सब जज-टू की अदालत में न्यायाधीश शाहयार मोहम्मद अफजल के अधीन है।

हाई कोर्ट के संज्ञान में लाएंगे : कोर्ट में दर्ज कार्यवाही के अनुसार, मुकदमा के बाद 20 वर्षों तक दोनों पक्ष सक्रिय रहे थे। इसके बाद पैरवीकारों ने आना छोड़ दिया। रिकार्ड के अनुसार तुलसी टाकीज की तरफ से अधिवक्ता कुंज बिहारी सिन्हा व गाउमंट काली प्राइवेट लिमिटेड की तरफ से अधिवक्ता शंकर प्रसाद पैरवी कर रहे थे। वे दोनों भी नहीं रहे, फिर कोई पैरवीकार भी नहीं आया।

अनुमंडलीय न्यायालय के वरीय अधिवक्ता सइदुल आजम और सुनील तिवारी कहते हैं कि इस मुकदमे को अबतक समाप्त हो जाना चाहिए था, लेकिन 1959 में ही हाइ कोर्ट से स्थगनादेश निर्गत होने के कारण निचली अदालत सुनवाई बंद नहीं कर सकती। इसी वजह से प्रक्रिया के तहत तारीख पर तारीख पड़ रही है। पटना हाई कोर्ट के वरीय अधिवक्ता आरके शुक्ला बताते हैं कि इस मामले को कोर्ट के संज्ञान में लाना होगा कि इसमें अब कोई पक्षकार नहीं हैं।

जहां था सिनेमा हाल, वहां अब माल

तुलसी टाकीज की जगह अब माल बन चुका है। स्थानीय लोग बताते हैं कि बद्री प्रसाद जायसवाल के निधन के बाद तुलसी टाकीज बिक गया और उसकी जगह शीला सिनेमा हाल ने ले ली। बद्री प्रसाद का परिवार डुमरांव से चला गया। बाद में नए मालिक ने सिनेमा हाल को तुड़वाकर वहां माल बना दिया। बहरहाल, मामला चल रहा है।

अदालतों पर मुकदमे का बोझ

नेशनल ज्यूडिशियल डेटा ग्रिड के अनुसार तीन करोड़ 91 लाख से ज्यादा मामले देश की विभिन्न अदालतों में लंबित हैं। इनमें अकेले बिहार में 33 लाख से ज्यादा मामले न्यायिक प्रक्रिया में हैं।

अब मैं ठाकुरजी के हाथ की बंशी हूं : गुप्तेश्वर पांडे

जागरण संवाददाता, मथुरा

बिहार के डीजीपी रह चुके गुप्तेश्वर पांडे अब कथावाचक बन गए हैं। नौकरी से वीआरएस लेकर राजनीति में जाने की अटकलों को जन्म देने वाले पांडे ने अब धर्म और अध्यात्म की राह पकड़ ली है। रविवार को यहां भागवत कथा शुरू करने से पहले बोले, अब तो मैं ठाकुर जी के हाथ की बंशी हो गया हूं, वह जैसे बजाएंगे बजता रहूंगा।

वृंदावन के चैतन्य विहार स्थित पाराशर अध्यात्म ट्रस्ट में 25 से 31 जुलाई तक वह श्रद्धालुओं को भागवत कथा का रसपान कराएंगे। केंद्रीय राज्यमंत्री अश्वनी चौबे और उत्तर प्रदेश श्रम कल्याण परिषद के अध्यक्ष सुनील भराला ने व्यास पीठ का पूजन और दीप प्रज्ज्वलन कर कथा की शुरुआत की।

राजनीति में जाने के सवाल पर बोले, राजनीति में तो मेरा प्रवेश ही नहीं हुआ। राजनीति सबके बस की बात नहीं है। राजनीति में धीरज, संयम, त्याग, तपस्या, सहनशक्ति और प्रतीक्षा की जरूरत है, लेकिन ये सब मेरे अंदर नहीं था। पूर्व आइजी पंडा के सखी रूप रखने और फिर अचानक गायब होने के सवाल पर उन्होंने कहा, आपकी चेतना का जो स्तर है, उसी स्तर से आप दूसरे को परख सकते हैं। जो विनोदी चेतना के लोग हैं, वे अपने को नहीं जान सकते, दूसरे को क्या जानेंगे।



श्रीमद्भागवत कथा महोत्सव में व्यासपीठ पर बैठे बिहार के पूर्व डीजीपी गुप्तेश्वर पांडे। जागरण

बुजुर्गों को है अपने घर में रहने का पूरा अधिकार : हाई कोर्ट

राज्य ब्यूरो, कोलकाता

▸ नदिया के एक बुजुर्ग अपने बेटे और बहू की प्रताड़ना से हो गए थे बेघर

▸ अदालत ने बेटे और बहू को घर से बेदखल करने का दिया निर्देश

वृद्ध नागरिकों को अपने घर में रहने का अधिकार है। जरूरत पड़ने पर वह अपने बेटे और बहू को घर से बेदखल भी कर सकते हैं। यह बात कलकत्ता उच्च न्यायालय ने गत दिनों एक मामले की सुनवाई करते हुए कही।

कोर्ट के मुताबिक, संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत किसी भी बुजुर्ग व्यक्ति को घर में रहने का पूरा अधिकार है। नदिया के एक बुजुर्ग अपने बेटे और बहू की प्रताड़ना से बेघर हो गए थे। उन्होंने इसके खिलाफ कलकत्ता उच्च न्यायालय में मामला दायर किया था। मामले की सुनवाई के दौरान जस्टिस राजशेखर मंथा ने कहा कि एक वरिष्ठ नागरिक को अपने घर में अच्छे से रहने का अधिकार है। अन्यथा संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन के मौलिक अधिकार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन हो सकता है। उन्होंने आगे टिप्पणी की कि जीवन के आखिरी दिनों में एक नागरिक को अदालत जाने के लिए मजबूर करना बेहद दर्दनाक है।

अधिनियम 2007 के तहत बुजुर्ग को अपने घर में रहने का पूरा अधिकार : अदालत ने ताहिरपुर थाने के प्रभारी अधिकारी को बेटे और बहू को घर से बेदखल करने का निर्देश दिया ताकि वृद्ध शांति से जीवन व्यतीत कर सकें। न्यायमूर्ति मंथा ने कहा कि कई मामलों में पुत्र व वधू को घर पर रहने का कानूनी अधिकार है। ऐसे में सवाल यह है कि क्या उन्हें प्रतिबंधित किया जाना चाहिए। न्यायाधीश ने कहा कि वरिष्ठ नागरिक अधिनियम 2007 के तहत एक बुजुर्ग व्यक्ति को अपने घर में रहने का पूरा अधिकार है। लेकिन 2005 का घरेलू हिंसा अधिनियम, जो पुत्र व वधू की सुरक्षा का आह्वान करता है, आवास के लिए कोई विशिष्ट स्पष्टीकरण प्रदान नहीं करता है।

नदियों, जलाशयों का संरक्षण राज्य का मौलिक दायित्व : कोर्ट

कोच्चि, प्रेट्र : केरल हाई कोर्ट ने कहा है कि नदियों, जलाशयों और अन्य जल संसाधनों का संरक्षण राज्य के साथ-साथ संबंधित स्थानीय निकायों का मौलिक दायित्व है।

केरल सरकार और कोट्टायम की तीन नगरपालिकाओं को वहां 'मीनाचिल' नदी के पानी की शुद्धता बनाए रखने और नदी के किनारे से सभी अतिक्रमण हटाने के लिए कदम उठाने का निर्देश देते हुए यह टिप्पणी केरल उच्च न्यायालय की ओर से की गई है। मुख्य न्यायाधीश एस. मणिकुमार और न्यायमूर्ति शाजी पे चेली ने कहा, 'नदियों और अन्य जल संसाधनों का संरक्षण राज्य के साथ-साथ संबंधित स्थानीय निकायों का मौलिक दायित्व है, जिनके साथ वे निहित हैं।' पीठ ने राज्य और अन्य निकायों को समय-समय पर, तीन महीने में एक बार निरीक्षण करने और कोट्टायम के जिलाधिकारी को रिपोर्ट सौंपने का निर्देश भी दिया। पीठ ने कुछ लोगों के संगठन द्वारा दायर याचिका का निपटारा किया, जो नदियों के संरक्षण और अतिक्रमण को रोकने में रुचि रखते हैं।

योगी ने पूछा- क्या कर रही पुलिस, जनता दर्शन में आने की क्यों आ रही नौबत

जागरण संवाददाता, गोरखपुर

गोरखनाथ मंदिर के हिंदू सेवाश्रम में आयोजित जनता दर्शन में पुलिस की कार्यप्रणाली फिर सवालों के घेरे में आ गई। न्याय की आस लेकर पहुंचे फरियादियों की समस्या सुनने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मौके पर मौजूद एसएसपी को फटकार लगाते हुए कार्यप्रणाली सुधारने की हिदायत दी। मुख्यमंत्री ने सौ से अधिक समस्याएं सुनीं, जिसमें आधे मामले पुलिस की लापरवाही के थे। इन मामलों का निस्तारण थाने-चौकियों से ही हो जाना चाहिए था, लेकिन पुलिस ने संज्ञान ही नहीं लिया। कुछ शिकायतें मुकदमा न दर्ज होने की थीं, तो कुछ मुकदमे के बाद भी कार्रवाई न होने की।

सवालिया लहजे में मुख्यमंत्री ने एसएसपी से कहा कि आखिर पुलिस कर क्या रही है, जो फरियादियों को जनता दर्शन तक आने की जरूरत पड़ रही है। मामले का निस्तारण थाने-चौकियों पर हो जाता तो जनता को छोटे-छोटे कामों के लिए मुख्यमंत्री तक आने की जरूरत नहीं पड़ती।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हर हाल में मामले का निस्तारण स्थानीय स्तर पर सुनिश्चित कराएं। जो थानाध्यक्ष और चौकी इंचार्ज हीलाहवाली कर रहे हैं, उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित करें। मंदिर प्रबंधन के अनुसार मुख्यमंत्री ने जनता दर्शन में करीब 100 लोगों की समस्या सुनीं, जिसमें आधे से अधिक मामले पुलिस की लापरवाही और मनमाना रवैये के थे।



अयोध्या : हनुमानगढ़ी में श्रद्धावनत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। जागरण

महामारी खतरा टला नहीं

पिछले 18 महीने से दुनिया को अपनी विभीषिका से डरा रही महामारी के सामने मानवता डटकर खड़ी हुई है। हमने ऐतिहासिक रूप से सबसे कम समय में वैक्सीन तैयार कर ली जो दुनिया भर में तेजी से लगाई जा रही है। हालांकि अभी भी एक बड़ी आबादी है जिन्हें कम समय में इस रक्षा कवच को देने की चुनौती बनी हुई है। हम इस महामारी के साथ जीना सीखने की ओर बढ़ चले हैं। अब कुछ विशेषज्ञ भारत में तीसरी लहर की जल्द शुरुआत के कयास लगा रहे हैं। इन सबके बीच भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) के चौथे राष्ट्रव्यापी सीरो सर्वे में सामने आया है कि देश के हर तीन में से दो व्यक्ति में कोरोना की एंटीबाडी बन चुकी है। इस प्रतिकूल परिस्थिति में यह खबर निर्णायक उम्मीद तो जगाती है कि देश अब हर्ड इम्युनिटी की दहलीज पर खड़ा है, लेकिन बड़ी चिंता इस बात को लेकर है कि अभी भी देश में 40 करोड़ लोग ऐसे हैं जो आसानी से इस जटिल वायरस के शिकार बन तीसरी लहर के आगाज की वजह हो सकते हैं। संक्रमण की रफ्तार जितनी बढ़ेगी, वायरस उतने ही अपने प्रतिरूप बनाएगा जो कई मायनों में ज्यादा घातक हो सकते हैं। अब इसकी काट हम सबके अपने हाथों में है। इसे बड़ी शिद्दत से हम लोग पिछले डेढ़ साल से निभा भी रहे हैं। टीका तो हम सब लगवा ही रहे हैं। दूसरों को भी प्रेरित कर रहे हैं। हमें करना और लोगों से करवाना ये होगा कि मास्क का साथ वे न छोड़ें। बहुत जरूरी हो, तो ही बाहर निकलें या भीड़ में जाएं। तमाम एहतियात और सतर्कता का पालन करें। सीरो सर्वे के इस मुगालते में कतई न रहें कि करीब 70 फीसद लोग सुरक्षित हो चुके हैं। खतरा अभी टला नहीं है। इस महामारी में सतर्कता ही सबसे बड़ा बचाव है। ऐसे में हालिया सीरो सर्वे के नतीजों के आलोक में भविष्य में महामारी के रूप-स्वरूप और खतरे की पड़ताल आज हम सबके लिए बड़ा मुद्दा है।

43 करोड़: भारत में हुए टीकाकरण की संख्या

9.27 करोड़: ऐसे भारतीय जिन्हें टीके की दोनों खुराक लगाई जा चुकी है।



इलस्ट्रेशन : अवधेश

रहना होगा सतर्क



प्रो ज्ञानेश्वर चौबे
जीन विज्ञानी, जंतु विज्ञान विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

दिसंबर-जनवरी में हुए तीसरे सर्वे के मुकाबले जून-जुलाई के चौथे सर्वे में एंटीबाडी बनने वाले लोगों की संख्या तीन गुना बढ़ चुकी है। साथ में हो रहे तेज टीकाकरण से ज्यादा लोग इम्यून भी होते जा रहे हैं। फिर भी वायरस का भरोसा नहीं, सतर्कता का स्तर हमेशा उच्च बनाए रखना होगा।

अलग-अलग देशों में कोरोना वायरस की रंगत और मारक क्षमता के आधार पर यह तय किया जा सकता है कि मात्र नेचुरल इंफेक्शन से देश की विशाल जनसंख्या में हर्ड इम्युनिटी तो विकसित नहीं हो सकती। दुनिया के कई देशों में देखा जा रहा है कि जनसंख्या के एक बड़े हिस्से में एंटीबाडी तैयार हुई। फिर भी वहां कोरोना की दूसरी लहर आई और पहली लहर से बचे-खुचे लोगों को अपना शिकार बना गई। इसका जीता-जागता उदाहरण है ब्राजील का शहर मनास। यहां पहली लहर के बाद 76 फीसद से ज्यादा लोगों में एंटीबाडी बन गई थी, मगर दूसरी लहर ने घनघोर तांडव मचाया। जहां तक हमारे देश की बात है तो भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) द्वारा दिसंबर और जनवरी में किए गए तीसरे सीरो सर्वे के मुताबिक मात्र 21.4 फीसद आबादी पाजिटिव पाई गई थी और दूसरी लहर के आते-आते मार्च तक लोगों में एंटीबाडी खत्म हो चुकी थी। यहीं से नए वैरिएंट अल्फा और डेल्टा को अपनी जड़ें जमाने का मौका भी मिल गया।

भारत में इन्हें 2020 के अंत में रिपोर्ट कर लिया गया था, मगर सर्विलांस का विस्तार न हो पाने से रौद्र रूप अप्रैल और मई में देखने को मिला। एंटीबाडी खत्म होना दूसरी लहर का एक कारक तो है, मगर नए वैरिएंट अल्फा और डेल्टा ने इसकी तीव्रता कई गुना तक बढ़ा दी। डेल्टा वैरिएंट पर किए गए शोधों से पता चला है कि यह वुहान स्ट्रेन की तुलना में दोगुने से भी ज्यादा संक्रामक है।

आइसीएमआर द्वारा इस साल जून-जुलाई में चौथा सीरो सर्वे किया गया, जिसमें 68 फीसद लोगों में एंटीबाडी मिली है। यह आंकड़ा तीसरे सीरो सर्वे से तीन गुना ज्यादा है। इतनी बड़ी आबादी में एंटीबाडी के साथ ही देश में वैक्सीनेशन की गति भी काफी तेज कर दी गई है। इससे लोग कोरोना के प्रति इम्यून हो रहे हैं। इन सभी सकारात्मक संभावनाओं को देखते हुए फिलहाल लग रहा है कि तीसरी लहर के खतरे की दीवार दरक रही है। तीसरी लहर आई भी तो दूसरी जितनी जानलेवा या उससे अधिक मारक नहीं होगी।

सबसे ज्यादा ध्यान देने की बात है कि देश की 40 करोड़ की आबादी अब भी इस वायरस से अछूती है। आइसीएमआर के मुताबिक दूसरी लहर में महज पांच फीसद लोगों में पुनर्संक्रमण देखा गया। यानी तीसरी लहर आई तो सबसे अधिक प्रभावित वो लोग होंगे जो अभी तक संक्रमण से दूर है। हालांकि इन 40 करोड़ लोगों में कुछ ऐसे भी होंगे जो पहली लहर में संक्रमित हुए थे और कुछ ने वैक्सीन की दोनों डोज ले ली है। यहां हमारी प्राथमिकता यह है कि टीका नहीं लगवाने वालों को तत्काल वैक्सीनेशन सेंटर जाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। यदि फिर भी अवहेलना हो तो तमाम सरकारी कामकाज के पहले टीकाकरण को अनिवार्य कर दिया जाए।

भारत में तबाही मचाने वाला डेल्टा वैरिएंट जब संक्रमण की रफ्तार बढ़ा रहा था तो साथ में चल रहा टीकाकरण अभियान मृत्युदर पर अंकुश लगा रहा था। अंततोगत्वा वर्तमान के ब्रेक थ्रू इंफेक्शन पर हुए शोध इस ओर इशारा कर रहे हैं कि हमें विश्वव्यापी डेल्टा वैरिएंट को मात देने के लिए वैक्सीन अपग्रेडेशन पर भी ध्यान देना चाहिए। इसके साथ ही वायरस सर्विलांस की गति भी तेज करनी चाहिए।

जहां तक बच्चों के टीकाकरण का मुद्दा है तो ब्रिटेन की वैक्सीन एडवाइजरी कमेटी ने जुलाई के मध्य में 16 साल से कम उम्र के बच्चों के टीकाकरण में देरी करने का सुझाव दिया है। उनका कहना है कि बच्चों में कोरोना संक्रमण के गंभीर होने का खतरा सबसे कम है। भारत को ऐसे सुझावों से दूरी बनाते हुए बच्चों के लिए टीकाकरण अभियान को जल्द लागू करना चाहिए। तमाम देशों में संक्रमण के आंकड़ों से पता चलता है कि स्कूल जाने वाले बच्चे संक्रमण फैलाने में बड़ी भूमिका निभाते हैं। हमारे देश की पारिवारिक संरचना ऐसी है, जहां बच्चे अपने दादा-दादी के संपर्क में काफी ज्यादा रहते हैं। इसलिए स्कूल जाने वाले बच्चों के टीकाकरण से हम बड़े-बुजुर्गों को भी सुरक्षित रख पाएंगे।

डर के आगे जीत है

ब्रिटेन ने कोरोना महामारी से संबंधित लगभग सभी पाबंदियां हटा दी हैं। जर्मनी ने टीका लगवा चुके लोगों को बिना क्वारंटाइन यात्रा की अनुमति दे दी है। इटली में अब मास्क लगाना अनिवार्य नहीं रहा और सिंगापुर में सभी माल खोल दिए गए हैं। ये सब डेढ़ साल से कोरोना महामारी के डर में जी रही दुनिया की जीत की ओर बढ़ते कदमों का कुछ उदाहरण हैं।

जीना इसी का नाम है

एशिया और यूरोप की कई सरकारें सामान्य तरीके से जीने के लिए अपने लोगों को प्रोत्साहित कर रही हैं। आफिस, रेस्तरां और एयरपोर्ट पर फिर भीड़ जुटने लगी है। मूल मंत्र यही है कि हमें वायरस के साथ जीना है। हालांकि विज्ञानी अभी भी बंदिशों से बाहर निकलने की इस रणनीति को समय से पहले का कदम मान रहे हैं।

खतरे की बात

न्यू नार्मल की ओर बढ़ते कदमों के बीच खतरे की आशंकाएं भी पूरी तरह खत्म नहीं हुई हैं। खतरे ही आहट ही है कि अब भी बहुत से देश पाबंदियों को खत्म करने में हिचकिचा रहे हैं।



लांग कोविड की पहेली

विज्ञानी अब तक लांग कोविड की पहेली को पूरी तरह सुलझा नहीं पाए हैं। लांग कोविड वह स्थिति है, जिसमें कोरोना संक्रमण से ठीक होने के बाद भी व्यक्ति लंबे समय तक कुछ लक्षणों से जूझता रहता है। यही कारण है कि विज्ञानी कोरोना संक्रमण को सामान्य फ्लू मानने के पक्ष में नहीं हैं।

रणनीति बदलने लगे हैं देश

आस्ट्रेलिया जैसे देश अपनी सीमाओं को बंद रखने के बाद अब समझ गए हैं कि वायरस को मिटाना फिलहाल संभव नहीं है। इसलिए सरकारों का जोर अब इस पर है कि संक्रमित व्यक्ति की स्थिति ज्यादा गंभीर न हो और किसी की जान न जाए। संक्रमित होना तो ऐसी स्थिति है, जिसे टाला नहीं जा सकता है। जीरो-कोविड का लक्ष्य रखने वाले देश भी अपनी रणनीति पर पुनर्विचार करने लगे हैं।

सिंगापुर बन रहा उदाहरण

सिंगापुर कोरोना संक्रमण के प्रत्येक मामले को बहुत संजीदगी से ले रहा था। पहली बार मामले दहाई में पहुंचने पर वहां अफरा-तफरी सी मच गई थी। सीमाएं बंद कर दी गईं। लेकिन कोई भी कदम संक्रमण को रोक नहीं पाया। पाबंदियों से ऊब चुके लोग पूछने लगे कि महामारी का अंत कब होगा? अब वहां अधिकारियों ने पाबंदियों से बाहर निकलने और महामारी के साथ जीवन आगे बढ़ाने के लिए नई रणनीति तैयार की है।

असहमतियों के भी सुर

कुछ लोग सरकारों की इन नीतियों से नाखुश भी हैं। उनका कहना है कि सरकारें बिना टीकाकरण वाले लोगों की जिंदगी को खतरे में डाल रही हैं। उनका कहना है कि सरकारें गतिविधियों को खोलने के लिए शार्टकट अपना रही हैं।

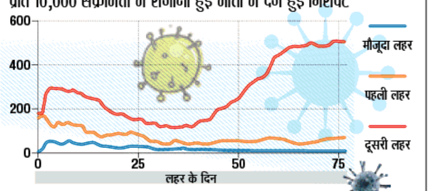


केस स्टडी: ब्रिटेन

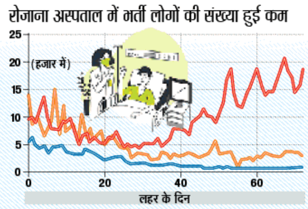
तीसरी लहर की आशंकाओं के बीच यह बड़ा सवाल है कि अगर महामारी की ऐसी कोई लहर आई, तो कितनी घातक होगी। ब्रिटेन इस समय तीसरी लहर से जूझ रहा है। ब्रिटेन के आंकड़ों से इस महामारी को समझने की कोशिश करते हैं।



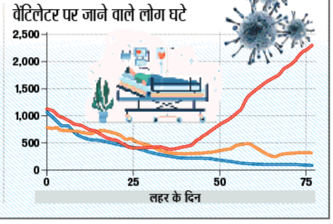
प्रति 10,000 संक्रमितों में रोजाना हुई मौतों में दर्ज हुई गिरावट



रोजाना अस्पताल में भर्ती लोगों की संख्या हुई कम



वेंटिलेटर पर जाने वाले लोग घटे



निकलें न बेहिसाब



डा दिलीप कुमार
वायरोलाजिस्ट, बेलर कालेज आफ मेडिसिन, ह्यूस्टन

लोगों की बेतरतीब आवाजाही और लापरवाही ही ब्रिटेन में अल्फा वैरिएंट के तेजी से फैलने का कारण बनी थी। भारत में दूसरी लहर की वजह भी कुछ अलग नहीं थी। इसलिए जरूरी है कि हम घर से बाहर कदम रखते हुए संक्रमण से बचाव के कदमों की अनदेखी न करें।

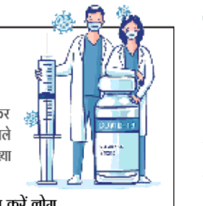
विज्ञान जगत की प्रतिष्ठित पत्रिका साइंस में प्रकाशित एक रिपोर्ट के मुताबिक ब्रिटेन में तबाही मचाने वाले अल्फा वैरिएंट के तेजी से फैलने के पीछे मुख्य वजह थी हाई इंटर कम्युनिटी मोबिलिटी। जिसका सीधा मतलब है लोगों का एक से दूसरे क्षेत्र में बड़ी तादाद में आना-जाना। जब कोरोना की पिछली लहर कमजोर पड़ने लगी तो ब्रिटेन में लाकडाउन के नियमों को ढीला कर दिया गया। लोग बड़ी संख्या में बाहर निकलने लगे। इसी बीच अल्फा वैरिएंट सामने आया और देखते-देखते पूरे ब्रिटेन में फैल गया। अप्रैल और मई में कुछ ऐसा ही भारत में भी हुआ। जब जनवरी में पहली लहर कमजोर पड़ने लगी, तो लोग बाहर निकलने लगे। बड़ी भीड़ एकत्रित होने लगी। इस बीच सिक्वेंसिंग डाटा में महाराष्ट्र में नए वैरिएंट की पुष्टि भी हुई, लेकिन लोगों ने गंभीरता से नहीं लिया और लाकडाउन और शारीरिक दूरी के नियमों का उल्लंघन किया।

हाल ही में आइसीएमआर का चौथा राष्ट्रीय सीरो सर्वे बताता है कि देश में अभी भी करीब 40 करोड़ लोगों में एंटीबाडी नहीं है, जिनमें संक्रमण का खतरा है। यह आबादी कम नहीं है। खतरा सिर्फ इस आबादी में संक्रमण का ही नहीं है, इससे भी बड़ा खतरा है किसी नए वैरिएंट के पैदा होने का या फिर किसी दूसरे देश में सामने आए नए वैरिएंट का हमारे देश में फैलने का। अभी तक वैरिएंट्स के खिलाफ हमारे टीके प्रभावी हैं और यह बड़ी राहत की बात है। लेकिन, अगर संक्रमण की दर को नियंत्रित नहीं किया जा सका, तो भविष्य में वैक्सीन के प्रभाव को कम करने वाले नए वैरिएंट की आशंका से इन्कार नहीं किया जा सकता। ऐसे में वैक्सीन ले चुके लोगों के भी संक्रमित होने का खतरा बढ़ जाएगा। जब तक वायरस हमारे बीच है, तब तक उसमें म्युटेशन होता रहेगा और नए वैरिएंट बनने की आशंका रहेगी।

अब हमारा पूरा ध्यान संक्रमण को नियंत्रित रखने पर होना चाहिए। प्रशासनिक स्तर पर टीकाकरण की रफ्तार बढ़ाने का प्रयास होना चाहिए। जहां संक्रमण बढ़ता दिखे, वहां सख्त कदम उठाने के साथ उन इलाकों में वायरस के जीन सिक्वेंसिंग करने की भी जरूरत होगी, ताकि किसी नए वैरिएंट को पहचाना जा सके और उसके द्वारा तबाही मचाने से पहले ही नियंत्रित किया जा सके।

टीका बनाम टिकाऊ कदम

दुनिया के कई देशों में एक बड़ी आबादी का टीकाकरण संपन्न हो चुका है। वहां अब मास्क की अनिवार्यता को खत्म भी कर दिया गया है, लेकिन अब वहां से फिर मामले बढ़ने लगे हैं। सिंगापुर में आने वाले कुल नए केस में तीन चौथाई उनकी संख्या है जिन्होंने दोनों टीके लगा लिए हैं।



इधर कुआं उधर खाई, करें तो क्या करें लोग

दरअसल टीका कारगर है। अव्वल तो टीका लगने के बाद संक्रमण की आशंका बहुत न्यून हो जाती है। लेकिन अगर दोनों खुराक लेने के बाद भी कोई इस महामारी से संक्रमित होता है तो उसकी हालात बहुत गंभीर नहीं होगी। ब्रिटेन में तीसरी लहर के दौरान आने वाले नए मामलों में ये बातें स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही हैं। या पीड़ित में बहुत सामान्य लक्षण दिखाई दे सकते हैं, या फिर कोई भी लक्षण न दिखाई दें, लेकिन इन सबके बावजूद वह दूसरों को संक्रमित कर सकता है। लोगों में जितना संक्रमण बढ़ेगा, वायरस उतना ही म्यूटेट होगा। ज्यादा घातक और संक्रामक रूप सामने आने पर तीसरी लहर की आशंका मजबूत होगी।



मास्क ही बचाव

इसलिए जरूरी है कि जब तक देश-दुनिया में एक भी कोरोना संक्रमित मौजूद है, आपको मास्क लगाना ही है। भले ही आप टीके की दोनों खुराक लगवा चुके हों। मास्क और शारीरिक दूरी ही इस महामारी से बचाव के अमोघ अस्त्र हैं।

जनमत

क्या कोविड-19 महामारी की पहली और दूसरी लहर के पीड़ादायक अनुभवों के बाद तीसरी लहर के लिए हम तैयार हैं?

हां 97%

नहीं 03%

क्या हालिया सीरो सर्वे के उम्मीद भरे नतीजों के बाद भी हमें महामारी से बचने के सभी एहतियात बरतने की जरूरत है?

हां 98%

नहीं 02%

आपकी आवाज

कुछ राज्यों में अभी भी महामारी की स्थिति गंभीर है। मास्क और शारीरिक दूरी से जुड़े नियमों का पालन हमें करते रहना होगा। **विजय कुमार धानिया**

वैश्विक महामारी के मामले में किसी सर्वे के भरोसे पूर्णत: निश्चिंत रहना लापरवाही व चूक होगी। हमें हर हाल में सतर्क रहना होगा। **गौरीशंकर अंतज**

कोरोना महामारी की तीसरी लहर को समझने के लिए हमें इससे जूझ रहे अन्य देशों से सीखने की जरूरत है। मास्क, सैनिटाइजर और शारीरिक दूरी के अलावा कोई रास्ता नहीं है। टीकाकरण की गति भी बढ़ानी होगी, जिससे जल्द से जल्द ज्यादा से ज्यादा आबादी को सुरक्षित किया जा सके। **वीर बहादुर सिंह धाकरे**

संक्रमण थामने से ही बनेगी बात



डा चंद्रकांत लहारिया
जन नीति और स्वास्थ्य तंत्र विशेषज्ञ

दो तिहाई आबादी में एंटीबाडी बनने पर ऐसे लोगों की संख्या घटी है, जिनके संक्रमित होने का खतरा ज्यादा रहता है। परंतु महामारी जब तक पूरी तरह खत्म नहीं होती, सतर्कता का हर कदम उठाना ही होगा। क्योंकि जितना संक्रमण बढ़ेगा, वायरस के नए वैरिएंट की तलवार लटकी रहेगी।

चौथा सीरो सर्वे बताता है कि अब देश में ऐसे कम लोग रह गए हैं, जिनमें महामारी के संक्रमण का ज्यादा खतरा है। दूसरी लहर से पहले देश में करीब 76 फीसद या 105 करोड़ लोग खतरे की जद में थे, अब यह संख्या करीब 40 करोड़ रह गई है। यह अच्छी खबर है। यह कम संख्या भरोसा दिलाती है कि अगली कोई भी लहर दूसरी लहर से कम घातक रहेगी। हम चिंता और तनाव को कम कर सकते हैं, लेकिन यह अर्थ बिलकुल नहीं कि हमें ढील दे देनी चाहिए। अभी भी 40 करोड़ लोग खतरे की जद में हैं और वायरस का प्रसार थमा नहीं है। हमें इस बात पर भी ध्यान देना होगा कि राष्ट्रीय स्तर पर खतरे की जद में आने वाले लोगों की संख्या कम हुई है, लेकिन राज्यों और जिलों के भीतर कुछ जगहें ऐसी हो सकती हैं, जहां ऐसे लोगों का प्रतिशत ज्यादा हो। किसी अन्य लहर से पहले राज्य या जिलावार मामले बढ़ सकते हैं।

हमें यह भी याद रखना होगा कि एंटीबाडी समय के साथ कम होने लगती है। कुछ ऐसे लोग जिनमें अभी एंटीबाडी है, हो सकता है कि अगले कुछ महीने में उनमें एंटीबाडी न रह जाए। एक अहम बात, सीरो प्रिवेलेंस का वायरस से कोई लेना देना नहीं है। वायरस अभी भी फैल रहा है और जब तक इसका प्रसार हो रहा है, नए वैरिएंट का खतरा बना रहेगा। ब्रिटेन इसका उदाहरण है। वहां टीकाकरण से बड़ी आबादी में एंटीबाडी बन गई थी। इसके बावजूद डेल्टा वैरिएंट उभरा और बड़ी संख्या में मामले आए। हालांकि टीका लगे होने का फायदा यह रहा कि अस्पताल में भर्ती होने और जान जाने के मामले कम रहे। भारत को डेल्टा से भी ज्यादा संक्रामक वैरिएंट के लिए तैयारी रखनी होगी। ऐसा वैरिएंट भारत में या किसी भी देश में पनप सकता है। अनुमान है कि अगस्त से नवंबर, 2021 के बीच अगली लहर आ सकती है। कुछ लोग इन अनुमानों को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। उन्हें इस बात पर आश्चर्य होता है कि अनुमान अलग-अलग क्यों हैं। इसकी वजह यह है कि कोई यह नहीं बता सकता है कि नया वैरिएंट कब उभरेगा। अगर नया वैरिएंट उभर आया और लोगों ने सावधानी नहीं बरती तो अगस्त में ही तीसरी लहर आ सकती है। सीरो सर्वे के नतीजों से अति आत्मविश्वास में आने की जरूरत नहीं है कि लोग सुरक्षा के उपाय करना छोड़ दें। संवेदनशील लोगों में संक्रमण और बीमारी का खतरा बना रहता है। ज्यादा संक्रामक वैरिएंट के आने से ऐसे लोग भी संक्रमित हो सकते हैं, जिनमें एंटीबाडी है। कुछ लोग निष्कर्ष निकाल रहे हैं कि भारत हर्ड इम्युनिटी की तरफ बढ़ रहा है। हमें समझना होगा कि ज्यादा संक्रामक वैरिएंट होने पर हर्ड इम्युनिटी का थ्रेसहोल्ड भी बढ़ जाता है। फिलहाल हर्ड इम्युनिटी के लिए 85 फीसद से ज्यादा लोगों में एंटीबाडी की जरूरत है और हम इससे दूर हैं।

सवाल है कि हमें क्या करना चाहिए? जवाब है कि जब तक दुनिया में महामारी चल रही है, हमें अपने और अपने लोगों की सुरक्षा के लिए मास्क, शारीरिक दूरी और हाथ धोने की आदत को अपनाए रहना होगा, साथ ही टीका लगवाना होगा। सीरो सर्वे से बच्चों को लेकर भरोसा बढ़ाने वाली बात सामने आई है। इसमें कहा गया है कि बच्चों में भी बड़ों की तरह ही सीरोप्रिवेलेंस पाया गया। बच्चों में अन्य की तुलना में बीमारी के गंभीर होने की आशंका कम रहती है। इसकी वजह है कि उनके फेफड़े में वह रिसेप्टर पूरी तरह विकसित नहीं होता है, जो वायरस को फैलने में मदद करता है। इनसे हमें यह पता चलता है कि अगली किसी लहर में बच्चों पर कोई अतिरिक्त खतरा नहीं है। राज्यों के प्रशासन को राष्ट्रीय सर्वे के साथ राज्य एवं स्थानीय स्तर पर सर्वे के आंकड़ों को आधार बनाकर टीकाकरण और अन्य कदमों पर विचार करना चाहिए। जरूरत पड़े तो कुछ चुनिंदा जिलों में अलग से सीरो सर्वे कराया जा सकता है। शहरों और गांवों में सीरो प्रिवेलेंस एक जैसा ही पाया गया। इस आंकड़े का इस्तेमाल सही अनुमान लगाने और देश में मौत के असल आंकड़ों के आकलन में किया जा सकता है।

इस लड़ाई में टीकाकरण कराते हुए और मास्क पहनकर लोग अपना योगदान दे सकते हैं। तकनीक के जानकार लोग विज्ञान आधारित प्रमाण जुटाएं और नीति निर्माता सही योजनाएं बनाकर भूमिका निभाएं। अभी संभलने की जरूरत है। कम से कम 60 से 70 फीसद वयस्क आबादी को टीके की एक डोज लगाने और फिर दूसरी डोज की गति बढ़ाकर महामारी के प्रभाव को कम किया जा सकता है।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
सोमवार 26 जुलाई, 2021

दैनिक जागरण

विचार कर्म का बीज है

अमेरिका और अफगानिस्तान

अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन की भारत यात्रा एक ऐसे समय हो रही है, जब अफगानिस्तान में हालात तेजी से बिगड़ते जा रहे हैं। यह अच्छा है कि अमेरिकी विदेश मंत्री की भारतीय नेताओं के साथ विभिन्न मुद्दों के अलावा अफगानिस्तान संकट पर भी बातचीत होगी, लेकिन यह बातचीत इस तरह होनी चाहिए कि इस संकट का कोई समाधान भी निकलता हुआ दिखे। ऐसा तभी संभव होगा जब अमेरिका यह महसूस करेगा कि उसकी सेनाओं ने जल्दबाजी में अफगानिस्तान छोड़कर इस देश को तालिबान के हवाले करने का काम किया है। आज अफगानिस्तान जिन खतरनाक स्थितियों से दो-चार है, उनके लिए एक बड़ी हद तक अमेरिका ही जिम्मेदार है। अमेरिका ने यह जानते हुए भी तालिबान के साथ एक ढीला-ढाला समझौता किया कि वे अपने वादे पर खरे नहीं उतरेंगे। अंततः ऐसा ही हुआ। तालिबान अफगानिस्तान पर कब्जा करने की कोशिश में हैं। इस कोशिश के तहत वे दिल दहलाने वाली बर्बरता का परिचय देने में लगे हुए हैं। वे जैसी मार-काट मचाए हुए हैं, उससे यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि यदि वे अफगानिस्तान पर काबिज हो गए तो उसका भविष्य कितना अधिक अंधकार भरा होगा। यदि अफगानिस्तान तबाही की ओर जाता है जिसके कि आसार भी दिख रहे हैं तो इसके लिए अमेरिका ही जिम्मेदार होगा।

अमेरिका की यह नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि वह अफगानिस्तान को तालिबान के हाथों में जाने से रोके। यदि वह ऐसा नहीं करता तो यह देश किस्म-किस्म के आतंकी संगठनों और जिहादियों का गढ़ बन जाएगा। इससे भी खतरनाक बात यह होगी कि इन सब खतरनाक तत्वों पर पाकिस्तान का असर होगा। यदि अमेरिका ने समय रहते यह समझा होता कि तालिबान को ताकत देने वाला पाकिस्तान है तो शायद उसे पराजय के बोध के साथ अफगानिस्तान नहीं छोड़ना पड़ता। उसने जिन हालात में अफगानिस्तान छोड़ा, उससे दुनिया को यही संदेश गया है कि उसने तालिबान के समक्ष समर्पण कर दिया। भारत को अमेरिकी विदेश मंत्री से दो टूक शब्दों में यह कहना चाहिए कि अमेरिकी प्रशासन ने न केवल अफगानिस्तान, बल्कि इस पूरे क्षेत्र की शांति एवं स्थिरता के लिए खतरा पैदा करने का काम किया है। हालांकि अमेरिका इससे परिचित होगा कि तालिबान पाकिस्तान और पाकिस्तान चीन के इशारों पर चल रहा है, फिर भी भारत को उसके समक्ष यह रेखांकित करना चाहिए कि इन दोनों देशों की साठगांठ पूरे दक्षिण एशिया को अस्थिर करने वाली साबित हो सकती है। भारत को अमेरिका को यह भी समझाना होगा कि पाकिस्तान की तरह चीन पर भी लगाम लगाने की जरूरत है और इसमें सफलता तब मिलेगी, जब क्वाड को और अधिक मजबूत करने के साथ सक्रिय भी किया जाएगा।

राहत की बात

उत्तर प्रदेश में कोरोना के सक्रिय केस एक हजार से नीचे आ गए हैं। यह राहत देने वाली स्थिति है। दो माह पहले की स्थिति को याद करें तो अंदाजा लगेगा कि हम भय के वातावरण से कितनी दूर और सुरक्षित निकल आए हैं। 30 अप्रैल के आंकड़े बोलते हैं कि सक्रिय केसों की संख्या तीन लाख तक पहुंच गई थी। मई से रोगियों की संख्या में निरंतर कमी आ रही है। यह गति रही तो यथाशीघ्र प्रदेश कोरोना से मुक्त भी हो जाएगा, लेकिन अहम प्रश्न है-कैसे? इसका उत्तर भी सरल है-हम सब एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभाएंगे तो कोरोना को हराने में सफल होंगे। उन हृदय विदारक दृश्यों को सर्वदा स्मृतियों में रखना होगा, एक खतरे की घंटी के रूप में। लोग कैसे स्वजन के सांसों की टूटती डोर को संभालने के लिए आक्सीजन और दवा के लिए हाथ-पांव मार रहे थे, इधर-उधर भाग रहे थे। समझना होगा कि सतर्कता नहीं बरती गई तो हमें फिर पुरानी स्थिति से मुकाबिल होना पड़ेगा। आए दिन डेल्टा प्लस और कप्पा जैसे नए वैरिएंट की चर्चा के बीच लापरवाही का दौर भी शुरू हो गया है। बाजार में, सफर के दौरान ट्रेन और बसों में लोग कोविड से बचाव संबंधी हिदायतों को खारिज करते नजर आ रहे हैं। दो गज की दूरी का कहीं पालन होता नहीं दिख रहा है। बिना मास्क लगाए लोगों की संख्या भी निरंतर बढ़ती जा रही है। प्रशासन, पुलिस और स्वास्थ्य विभाग में दो माह पहले वाली मुस्तैदी नजर नहीं आ रही। हवाई अड्डों को छोड़ दें तो रेलवे और बस स्टेशनों पर थर्मल स्क्रीनिंग और सैनिटाइजेशन की व्यवस्था शिथिल हो चली है। जांचों की संख्या भी घट गई है। वायरल बुखार के इस मौसम में कहीं कोरोना वायरस पैठ न बना ले, इससे बचने के लिए लक्षण दिखते ही जांच जरूरी है। वस्तुतः बच्चों को संक्रमण से बचाने के लिए बड़ों को सुरक्षित रहना होगा। इसके दो ही उपाय हैं, कोविड से बचाव की हिदायतों का पालन और टीके का सुरक्षा कवच धारण करना। सीधी सी बात है-खुद बचिए और दूसरों को बचाने में योगदान दीजिए।

> समझना होगा कि सतर्कता नहीं बरती गई तो हमें फिर पुरानी स्थिति से मुकाबिल होना पड़ेगा

नए मिजाज वाली न्यायपालिका



ए. सूर्यप्रकाश

कुछ हालिया फैसलों और टिप्पणियों से स्पष्ट है कि जो न्यायपालिका के नए मिजाज को भांपने में नाकाम रहेगा, उसे उसकी तपिश तो झेलनी ही पड़ेगी

देश की शीर्ष अदालत नागरिकों से जुड़े मूल अधिकारों के संरक्षण को लेकर निरंतर रूप से अपनी प्रतिबद्धता दिखाती आई है। वहीं राज्य और उनकी पुलिस आतंक विरोधी कानूनों की आड़ में ऐसे फैसले लेने पर तुली हैं, जिनसे लोगों का जीवन जोखिम में पड़ रहा है। इस सिलसिले में यदि मुख्य न्यायाधीश एनवी रमना सहित कुछ न्यायाधीशों की हालिया टिप्पणियों पर गौर करें तो प्रतीत होता है कि राजनीतिक विरोधियों को आतंकित करने और आलोचकों को खामोश करने के लिए राज्य सरकारें राष्ट्रीय सुरक्षा कानून यानी रासुका और ऐसे अन्य कानूनों का और उपयोग नहीं कर पाएंगी। इतना ही नहीं कोरोना महामारी जैसी आपदा के बीच शीर्ष अदालत ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि वह राज्य सरकारों के ऐसे फैसलों पर आंखें नहीं मूंदे रहेगी, जिनके जरिये सरकारें किसी वर्ग की धार्मिक या अन्य भावनाओं का तुष्टीकरण करने में लगी हों। तमाम हाई कोर्ट भी हाल में संकेत दे चुके हैं कि अगर सरकारों ने अपनी कार्यशैली न बदली तो अदालतें मूकदर्शक नहीं बनी रहेंगी। बीते दिनों मणिपुर में एक एक्टिविस्ट की रिहाई के निर्देश से लेकर उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में कांवड़ यात्रा को लेकर सख्ती और बकरीद से पहले केरल सरकार को देर से ही सही, तगड़ी लताड़ लगाना अदालत के नए मिजाज और तेवरों को दर्शाता है।

इस कड़ी में सुप्रीम कोर्ट ने मणिपुर के एक एक्टिविस्ट इरेंद्रो लिचोबाम की तत्काल रिहाई के आदेश दिए। लिचोबाम को मणिपुर सरकार ने रासुका के तहत गिरफ्तार किया था। दरअसल उन्होंने कोविड-19 से हुई मणिपुर के भाजपा अध्यक्ष की मौत को गाय के गोबर और गोमूत्र से जोड़कर फेसबुक पर एक टिप्पणी लिखी थी। लिचोबाम ने लिखा था कि कोरोना का उपचार गोबर या गोमूत्र में नहीं, बल्कि विवेक और विज्ञान में निहित है। इस पोस्ट के बाद वह गिरफ्तार कर लिए गए और करीब दो महीने जेल में रहे। मीडिया में आई खबरों के अनुसार जब यह मामला सुप्रीम कोर्ट के समक्ष आया तो जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ और एमआर शाह की पीठ ने लिचोबाम की तुरंत रिहाई के आदेश में कहा कि हम ऐसे व्यक्ति को एक दिन के लिए भी जेल में नहीं रख सकते। पीठ ने राज्य सरकार को निर्देश दिया कि वह फैसले के दिन ही पांच बजे से पहले बंदी की रिहाई के आदेश का पालन सुनिश्चित करे। निःसंदेह लिचोबाम की पोस्ट में गरिमा का अभाव था, क्योंकि यह कोरोना के शिकार हुए एक मृतक के विषय में थी, लेकिन क्या यह राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के उल्लंघन में गिनी जा सकती थी।

इसके बाद कांवड़ यात्रा का मुद्दा आया, जिस पर अदालत ने स्वतः संज्ञान लिया।



मुखर होती सुप्रीम कोर्ट की भूमिका। फाइल

कांवड़ यात्रा में श्रद्धालु अमूमन हरिद्वार से गंगाजल लेकर सैकड़ों किलोमीटर लंबी यात्रा कर अपने गंतव्य तक जाते हैं और वहां शिव मंदिर में गंगाजल से अभिषेक के साथ यह यात्रा संपन्न होती है। गत वर्ष कोरोना के कारण यात्रा प्रतिबंधित हो गई थी। हालांकि इस बार उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश ने यात्रा की अनुमति के शुरुआती संकेत दिए। बहरहाल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दो-टूक कह दिया कि सार्वजनिक स्वास्थ्य को लेकर कोई समझौता नहीं किया जा सकता। इसके बाद उत्तराखंड सरकार ने यात्रा रद कर दी। फिर भी उत्तर प्रदेश सरकार इसे लेकर हीलाहवाली ही करती दिखी। आखिरकार सुप्रीम कोर्ट को दखल देना पड़ा। जस्टिस आरएफ नरीमन और बीआर गवई ने इस मसले को उठाकर उत्तर प्रदेश सरकार से पुनर्विचार के लिए कहा। इस पर पीठ ने यही कहा कि भारत के नागरिकों का स्वास्थ्य और अनुच्छेद 21 में उल्लिखित जीवन का अधिकार सर्वोपरि है। न्यायाधीशों ने कहा कि जीवन का अधिकार सबसे बुनियादी मूल अधिकार है और अन्य सभी भावनाएं इसके समक्ष गौण हैं। उन्होंने कहा कि महामारी ने सभी को प्रभावित किया और अनुच्छेद 21 ही सभी को संरक्षा प्रदान करता है। अदालत ने राज्य सरकार को निर्णय पर पुनर्विचार के लिए समय दिया। राज्य सरकार भी तुरंत लाइन पर आ गई और उसने यात्रा रद करने का एलान किया। इस बीच अदालत के समक्ष एक और मसला आ गया। यह केरल से जुड़ा था, जहां राज्य सरकार ने बकरीद से पहले बंदिशों में कुछ छूट दी थी ताकि लोग त्योहार पर खरीदारी कर सकें। अदालत ने महामारी के दौर में रियायतें देने को लेकर दबाव के आगे झुकी सूबे की सरकार को आड़े हाथों लिया। साथ ही चेताया भी कि इन रियायतों के कारण राज्य में महामारी का प्रसार हुआ तो संबंधित निर्णय लेने वालों के खिलाफ अदालत कार्रवाई करेगी।

कुछ दिन पहले अमेरिकन बार एसोसिएशन द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में जस्टिस चंद्रचूड़ ने नागरिकों के मूल अधिकारों की रक्षा में सुप्रीम कोर्ट की भूमिका और दायित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आतंक विरोधी कानूनों सहित आपराधिक कानूनों का नागरिकों द्वारा की गई आलोचना को दबाने या उनके उत्पीड़न में उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि जहां कार्यकारी और विधायी कदमों से नागरिकों के मूल मानवाधिकारों का उल्लंघन हो वहां संविधान के संरक्षक के रूप में सुप्रीम कोर्ट को आगे आना होगा।

कुछ हफ्ते पहले एक अन्य कार्यक्रम में मुख्य न्यायाधीश एनवी रमना ने भी इस संदर्भ में कहा कि विद्वानों के अनुसार कोई कानून तब तक कानून के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता जब तक कि वह न्याय और समानता के सिद्धांतों से आबद्ध न हो। 'सशक्त स्वतंत्र न्यायपालिका' के महत्व पर जोर देते हुए जस्टिस रमना ने कहा कि न्यायपालिका को ही यह जिम्मेदारी मिली है कि वह यह सुनिश्चित करे कि जो कानून प्रवर्तित किए जा रहे हैं क्या वे संविधान के अनुरूप हैं या नहीं। ऐसे में कानूनों की न्यायिक समीक्षा न्यायपालिका के मुख्य कार्यों में से एक है। रमना ने आगे यह भी कहा, 'न्यायपालिका के महत्व से हमें उस तथ्य को अनदेखा नहीं करना चाहिए कि संविधानवाद के संरक्षण का दायित्व केवल अदालतों के ही जिम्मे है। राज्य व्यवस्था के तीनों अंगों कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका तीनों संवैधानिक भरोसे के बराबर भागीदार हैं।' ऐसे आदेशों और टिप्पणियों से शीर्ष अदालत का मंतव्य एकदम स्पष्ट है। वह यही कि जो भी उच्चतर न्यायपालिका के नए मिजाज को भांपने में नाकाम रहेगा, उसे देर-सबेर उसकी तपिश तो झेलनी ही पड़ेगी।

(लेखक लोकतांत्रिक विषयों के विशेषज्ञ और वरिष्ठ स्तंभकार हैं)

response@jagran.com

सुधारनी होगी पंचायती चुनाव प्रक्रिया



प्रो. रसाल सिंह

प्रधान की तर्ज पर जनता द्वारा सीधे ब्लाक प्रमुख और जिला पंचायत अध्यक्ष का चुनाव कराया जाना चाहिए



प्रत्यक्ष चुनाव का दिखेगा सकारात्मक असर। फाइल

उत्तर प्रदेश के उप-मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने हाल में कहा कि राज्य में अगली बार जिला पंचायत अध्यक्ष और ब्लाक प्रमुख के चुनाव सीधे जनता द्वारा कराए जाएंगे। इस पर बाकी राज्यों को भी विचार करना चाहिए। उल्लेखनीय है कि अभी जनता द्वारा चुने गए जिला पंचायत सदस्य और क्षेत्र पंचायत सदस्य क्रमशः जिला पंचायत अध्यक्ष और ब्लाक प्रमुख का चुनाव करते हैं। इन चुनावों में धनबल और बाहुबल का अत्यधिक दुरुपयोग होता है। इनमें सत्तारूढ़ दल के पक्ष में शासन-प्रशासन की मशीनरी का भी बेजा इस्तेमाल होता है। इसलिए इन चुनावों के परिणाम वास्तविक जनादेश की अभिव्यक्ति नहीं करते। उप्र ही नहीं, बल्कि बंगाल, राजस्थान, बिहार, पंजाब, हरियाणा, ओडिशा और जम्मू-कश्मीर आदि राज्य जहां भी त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था लागू है, वहां कमोबेश यही कहानी है। सर्वविदित है कि सत्तारूढ़ दल ही इनमें से अधिकांश पदों पर जीत हासिल करते हैं। वर्ष 2015-16 में उप्र में तत्कालीन सत्तारूढ़ दल सपा ने जिला पंचायत अध्यक्ष की 75 सीटों में से कुल 63 सीटें और ब्लाक प्रमुख की 826 सीटों में से 623 सीटें जीतकर नया कीर्तिमान बनाया था। 2010 के चुनावों में सत्तारूढ़ बसपा ने भी लगभग यही किया था। 2021 के हालिया संपन्न चुनावों में सत्तारूढ़ भाजपा ने जिला पंचायत अध्यक्ष की 67 सीटें और ब्लाक प्रमुख की 648 सीटें जीतकर नया इतिहास रच दिया है। पंचायत चुनावों में इतनी शानदार जीत हासिल करने के बावजूद साल-डेढ़ साल के बाद हुए विधानसभा चुनावों में सत्तारूढ़ दलों का हश्र बहुत बुरा हुआ। इस आधार पर यह निष्कर्ष निकालना मुश्किल नहीं है कि ये चुनाव वास्तविक जनादेश की अभिव्यक्ति नहीं करते।

देश में 24 अप्रैल, 1993 को 73वें संविधान संशोधन के परिणामस्वरूप त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा प्राप्त हुआ था। पंचायती राज व्यवस्था को लागू करने की सबसे बड़ी वजह गांधी जी की ग्राम स्वराज की अवधारणा थी। गांधी जी की लोकतंत्र की अवधारणा में शासन-प्रशासन का विकेंद्रीकरण अंतर्निहित है। उनके इसी सपने को साकार करने के लिए और लोकतंत्र और विकास को ऊपर से नीचे की जगह नीचे से ऊपर की ओर संभव करने के लिए पंचायती राज व्यवस्था लागू की गई। इसमें ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत और जिला पंचायत को शामिल किया गया। ग्राम पंचायत के अध्यक्ष अर्थात प्रधान या सरपंच का चुनाव तो ग्राम पंचायत के मतदाता प्रत्यक्ष मतदान के द्वारा करते हैं, किंतु क्षेत्र पंचायत अध्यक्ष अर्थात ब्लाक प्रमुख और जिला पंचायत अध्यक्ष अर्थात जिला पंचायत प्रमुख का चुनाव जनता द्वारा चुने हुए सदस्य करते हैं। इस अप्रत्यक्ष चुनाव के कारण ही पंचायती राज व्यवस्था के दूसरे और तीसरे पायदान इतने दूषित और तमाम बुराइयों के उद्गम स्थल बन गए हैं।

क्षेत्र पंचायत सदस्यों और जिला पंचायत सदस्यों की क्रमशः ब्लाक प्रमुख और जिला पंचायत अध्यक्ष चुनाव में मतदान के अलावा कोई सक्रिय और व्यावहारिक भूमिका नहीं होती है। उनके पास कोई कार्यकारी शक्ति, बजट आदि भी नहीं होते हैं। इसलिए वे प्रमुख और अध्यक्ष के चुनाव में प्रायः अपने मत को एकमुश्त रकम लेकर बेच देते हैं। सदस्यों की खरीद-फरोख्त में करोड़ों रुपये लगाकर चुनाव जीते हुए प्रमुख और अध्यक्ष विकास की जगह अपने खर्च की भरपाई में जुट जाते हैं। इससे ये संस्थाएं भ्रष्टाचार के बड़े अड्डे बन जाती हैं। ब्लाक प्रमुख और जिला पंचायत अध्यक्ष का कोई प्रत्यक्ष निर्वाचक मंडल न होने से इनकी उसके प्रति जवाबदेही नगण्य होती है। इसलिए ये विकास-कार्यों के लिए आवंटित राशि का कहां, कितना और कैसा प्रयोग करते हैं, इसका जमीनी हिसाब-किताब न होकर कागजी लेखा-जोखा ही अधिक होता है। इस प्रकार विकास-राशि के बड़े हिस्से की बंदरबांट हो जाती है। इस व्यवस्था में आंशिक परिवर्तन करके क्षेत्र पंचायत सदस्यों और जिला पंचायत सदस्यों के गैरजरूरी और बेवजह खर्चीले चुनाव से बचा जा सकता है। ग्राम पंचायत पंचायती राज व्यवस्था की वास्तविक रीढ़ है। प्रधान/सरपंच का चुनाव जनता सीधे करती है। उसके पास कार्यकारी अधिकार, वित्तीय शक्तियां और संसाधन होते हैं। उसका अपने निर्वाचकों के साथ सीधा संपर्क और उनके प्रति प्रत्यक्ष जवाबदेही भी होती है। इसी तर्ज पर क्षेत्र पंचायत और जिला पंचायत सदस्यों के चुनाव की जगह जनता द्वारा सीधे ब्लाक प्रमुख और जिला पंचायत अध्यक्ष का चुनाव कराया जाना चाहिए। ब्लाक के सभी प्रधानों को क्षेत्र पंचायत का सदस्य बनाकर और जिले के सभी ब्लाक प्रमुखों को जिला पंचायत का सदस्य बनाकर क्षेत्र पंचायत और जिला पंचायत का गठन किया जा सकता है।

इन चुनावों को राजनीतिक दलों के आधार पर नहीं लड़ा जाना चाहिए। वे इन चुनावों को अपनी प्रतिष्ठा से जोड़कर धनबल, बाहुबल और प्रशासनिक मशीनरी का दुरुपयोग करते हैं। इससे चुनावों की निष्पक्षता और पारदर्शिता बुरी तरह प्रभावित होती है। जब ये चुनाव भी ग्राम प्रधान की तरह गैर-राजनीतिक आधार पर होंगे और राजनीतिक दलों के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप से मुक्त होंगे तो जमीनी स्तर पर जनता के बीच सक्रिय और लोकप्रिय नेताओं की नई पौध तैयार हो सकेगी। दरअसल ब्लाक प्रमुख और जिला पंचायत अध्यक्ष पद के चुनाव राजनीति में धनपशुओं और बाहुबलियों के प्रवेश-द्वार हैं। वे अपने धनबल और बाहुबल से दलों को प्रभावित कर विधानसभा और लोकसभा के टिकट पर दावेदारी करते हैं। राजनीति के इन गंदे नालों को बंद करने या इनकी चुनाव-प्रक्रिया में तत्काल बदलाव करने की जरूरत है। ऐसा करके ही इन पंचायती राज संस्थाओं में जनता की वास्तविक भागीदारी सुनिश्चित हो सकेगी और लक्षित परिणाम प्राप्त होने की संभावना भी बनेगी।

(लेखक जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय में अधिष्ठाता, छात्र कल्याण हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

भावना

मनुष्य के लिए किसी भी उद्यम की सार्थकता के पीछे जो सबसे महत्वपूर्ण तत्व है, वह है उसकी भावना। अर्थात किसी कार्य से ज्यादा उस कार्य के पीछे की भावना का महत्व होता है। जो कार्य शुद्ध हृदय से किया जाता है वह श्रेष्ठ फलदायक होता है। इसके विपरीत हीन और क्षुद्र भाव लेकर किया गया कार्य बड़ा होते हुए भी श्रेष्ठ नहीं होता। पंचतंत्र में आचार्य विष्णु शर्मा कहते हैं, 'मंत्र, तीर्थ, ब्राह्मण, देवता, ज्योतिषी, औषधि और गुरु में हमारी जैसी भावना होती है, वैसी ही सिद्धि हमें मिलती है।' अर्थात किसी व्यक्ति को भावना के अनुरूप ही सिद्धि मिलती है। महर्षि वाल्मीकि की भावना ने उन्हें श्रेष्ठ साधक बना दिया। तुलसीदास की भावनाओं ने जब भाव की उदात्तता को प्राप्त किया तो वह पत्नी वियोगी और विकल 'रामबोला' से महान साधक और कवि बन गए। भावना की उदात्तता को धारण करने वाले रैदास के लिए किसी गंगा तट पर जाकर स्नान करने की आवश्यकता नहीं रहती। उनके लिए 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' उक्ति चरितार्थ हो जाती है। कबीर अपने करघे पर ही भक्ति की 'झीनी-झीनी चदरिया' बीन लेते हैं। अपनी भावना की महानता के चलते वह उस चदरिया को 'ज्यूं की त्यूं' धर देते हैं। वह तनिक भी मैली नहीं होती। तभी अमृतलाल नागर 'मानस का हंस' में लिखते हैं, 'भाव की एकाग्रता अंतश्चेतना का वह द्वार खोलती है, जिसमें सत्य सार्थक होकर बसता है।'

इस भाव की एकाग्रता के लिए अंतःकरण से स्वार्थ, वासनाओं और छल-छिद्र को निकालना पड़ता है। कहते हैं कि भगवान तो भाव के भूखे हैं। तुलसीदास जी मानस में लिखते हैं, 'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखीं तिन तैसी।' यानी अपनी भावना के अनुरूप ही व्यक्ति ईश्वर के स्वरूप को देख पाता है। जैसे चींटियों को बुलाने के लिए मात्र शक्कर की जरूरत होती है, ठीक वैसे ही भाव की मधुरता से साधक लक्ष्य को अपने निकट बुला सकता है।

डा. प्रशांत अग्निहोत्री

बिखरने के बाद निखरने का जज्बा

डा. मोनिका शर्मा

मीराबाई चानू का सफर बताता है कि संघर्ष करने का जज्बा हो तो खुद को साबित करने की राहें भी खुल ही जाती हैं

टोक्यो ओलिंपिक में एक बेटी ने देश को पहला पदक दिलाया है। वेटलिफ्टिंग में मीराबाई चानू ने सिल्वर मेडल हासिल कर एक उम्मीद भरी शुरुआत की है। मीराबाई ने 49 किलोग्राम भार में कुल 202 किलोग्राम भार उठाकर यह पदक जीता है। वह ओलिंपिक में वेटलिफ्टिंग में सिल्वर लाने वाली पहली भारतीय एथलीट हैं। सिडनी ओलिंपिक 2000 में कर्णम मल्लेश्वरी ने वेटलिफ्टिंग में कांस्य पदक जीता था। मीराबाई की जीत एक खिलाड़ी की ही नहीं, बल्कि मन से मजबूत और खुद को हर परिस्थिति में संभाल लेने वाली भारतीय बेटी की जीत है। अभावों से लड़कर जीतने के जज्बे से रूबरू करवाने वाली जीत है। यह सबक देती है कि कड़ी मेहनत और लगन से सफलता पाने की प्रतिबद्धता हो तो सपने सच होते हैं। मीराबाई कभी इम्फाल के एक छोटे से गांव में आग जलाने वाली लकड़ी चुनती थीं। उन्होंने 2007 में वेटलिफ्टिंग की ट्रेनिंग शुरू की थी। तब घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने कारण वह डाइट चार्ट के मुताबिक खाना तक नहीं ले पाती थीं। तब अभ्यास के लिए उनके पास लोहे का बार नहीं था। इसके लिए उन्होंने बांस का इस्तेमाल किया। इन तमाम कठिनाइयों से जूझते हुए चानू आज वहां पहुंची हैं जहां पहुंचने का सपना देखा था।

भारत में जहां एक आम खिलाड़ी के लिए संघर्षपूर्ण स्थितियां हैं, वहां बेटियों के लिए तो यह सफर और भी कठिन है। यही वजह है कि मीराबाई का सफर देश की लाडलियों को हिम्मत देने वाला है। साल 2016 के रियो ओलिंपिक खेलों में चानू हर कोशिश के बाद भी सही तरीके से वजन नहीं उठा पाई थीं। यह समझना मुश्किल नहीं कि कोई खिलाड़ी अपना खेल पूरा ही नहीं कर पाए तो कितना दुखद अनुभव होता है। 'डिड नाट फिनिश' पांच साल पहले मीराबाई के नाम के आगे यही शब्द लिखे गए थे। तब हार ही नहीं, मनोबल का टूटना भी उनके हिस्से आया था। उसके बाद चानू अवसाद का शिकार हो गई थीं। निराशा के उस दौर में देश की इस बेटी ने खेल तक छोड़ने का निर्णय कर लिया था। हालांकि बाद में वह हौसला जुटाकर खड़ी हुईं और आज खुद को साबित कर दिया। चानू की जीत जीवन में वापसी का सबक भी सिखाती है। अपने आप में भरोसा रखने की सोच को एक सकारात्मक जिद बनाने की हिम्मत देती है। रियो ओलिंपिक के कटु अनुभव के बाद मीराबाई ने खेल के मोर्चे पर ही नहीं, मन के मोर्चे पर भी खुद को मजबूत किया तो उनकी मेहनत रंग लाई। जिजीविषा के ऐसे उदाहरण ही देश में बदलाव की बुनियाद बनते हैं। इसीलिए चानू की जीत युवाओं के लिए एक प्रेरक संदेश लिए है। यह जीवन के प्रति सकारात्मक रवैया और लक्ष्य को पाने की ललक रखने की सीख देती है। असफलता और पीड़ा के बाद खुद को थामने और कामयाबी को छूने का जज्बा बनाए रखने का पाठ पढ़ाती है।

(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

मेलबाक्स

जासूसी मामले को अनावश्यक तूल

संजय गुप्त जी लिखित आलेख 'जासूसी मामले की सच्चाई' को पढ़ने का अवसर मिला। लेख सारगर्भित है और विपक्ष द्वारा मानसून सत्र के आरंभ होते ही कथित पेगासस फोन हैकिंग के मामले को अनावश्यक रूप से उछालने की कोशिश के पीछे की वास्तविक मंशा को उजागर करता है। अब जबकि एमनेस्टी इंटरनेशनल (जिसका भारत के प्रति गंभीर पूर्वाग्रह रखने का एक लंबा इतिहास रहा है) स्वयं स्वीकार कर रहा है कि वह वांछित लोगों के फोन को हैक कर जासूसी किए जाने की पुष्टि नहीं कर सकता तो फिर किस आधार पर विपक्ष इसे इतना तूल दे रहा है। कहीं वह जाने-अनजाने सचमुच किसी अंतरराष्ट्रीय साजिश का हिस्सा तो नहीं बन रहा, जिसका जिक्र विदेश राज्यमंत्री ने किया है। ऐसा इसलिए भी, क्योंकि चाहे शाहीन बाग का धरना हो अथवा वर्तमान में चल रहा कथित किसान आंदोलन (इस बात पर भी विचार कर लिया जाए कि देश के कुल 28 राज्यों में से दो अथवा तीन राज्यों के कुछ संपन्न किसानों और किसानों के रूप में मंडी के बिचौलियों के द्वारा आंदोलन के नाम पर महत्वपूर्ण रास्तों-चौराहों को कब्जा किए जाने को किस हद तक किसान आंदोलन की संज्ञा दी जाए), सभी में अंतरराष्ट्रीय साजिश के संकेत मिले हैं। बहरहाल कोई यह न भूले कि देश की आंतरिक सुरक्षा और राष्ट्रीय हित के लिए केंद्र सरकार को समुचित कदम उठाने का पूरा अधिकार है। यह सही है कि ऐतिहासिक काल के आरंभ से ही राष्ट्रहित में गुप्तचरों की सेवाएं ली जाती रही हैं। भारतवर्ष को पहली बार एक राजनीतिक सूत्र में बांधने वाले मौर्यवंशी राजाओं के समय भी राज्य भर में 'संस्था' और 'संचार' नाम से जाने जाने वाले गुप्तचरों का जाल बिछा होता था, जो छोटी से छोटी, यद्यपि महत्वपूर्ण घटनाओं की सूचना राजमहल तक पहुंचाते थे। हां, केंद्र सरकार इस बात को सुनिश्चित करे कि डिजिटल तकनीक के वर्तमान युग में निजी डाटा के बेजा इस्तेमाल से लोगों की निजता भंग न हो, उनके जीवन और सम्मान की सुरक्षा बनी रहे।

चंदन कर्ण, झारखंड

राज्यसभा सदस्यों पर सवाल

अधिकतर लोकतांत्रिक देशों में दो सदनों का समावेश होता है। उच्च सदन की स्थापना इसलिए की गई है कि वह निरंतरता एवं तीव्र परिवर्तन के मध्य सामंजस्य बना रहने दे। इस सदन में उन उच्च प्रतिभाशाली व्यक्तियों को सदस्य बनने का अवसर देना था, जो चुनाव की जटिल प्रक्रिया में नहीं फंसना चाहते हैं, लेकिन अधिकतर मामलों में ऐसा लग रहा है कि आज यह सदन बुझे हुए कारतूसों एवं चुनावों में जनता द्वारा तिरस्कृत नेताओं का शरण स्थल बन गया है। सदन में अशिष्टता एवं अराजकता का प्रदर्शन चरम पर पहुंच गया है। एक विपक्षी दल के सांसद मंत्री के हाथ से कागज लेकर फाड़कर सदन में फेंक देते हैं। वहीं एक ऐसे व्यक्ति को सदन का सदस्य बनने के लिए तृणमूल कांग्रेस प्रस्तावित कर रही है, जिसका काम ही केवल प्रधानमंत्री का अपमान करना है। राज्यसभा में अब गंभीर चर्चा एवं स्तरीय विचार विमर्श भी नहीं होता। राज्यसभा भंग नहीं की जा सकती है, अतः इसको समाप्त करना ही श्रेयस्कर है।

धर्मेंद्र नाथ रस्तोगी, गाजियाबाद

जाति आधारित जनगणना पर हो पुनर्विचार

'जाति और जनगणना' आधारित संपादकीय में केंद्र की भावना को उजागर करते लिखा गया है कि सरकार नहीं चाहती है कि देश की जनगणना जाति आधारित की जाए। 2011 में जनगणना हुई थी। अब दस वर्ष के अंतराल के बाद केंद्र सरकार फिर से इसे कराने की मुहिम चला रही है, पर जाति आधारित जनगणना कराने से इन्कार करना उचित नहीं है। सरकार आरक्षण भी जाति के आधार पर देती है, इस तरह की जनगणना से स्थिति स्पष्ट हो जाएगी। समाज में जातियों की क्या स्थिति है, इन लोगों की माली हालत और आय का क्या जरिया है, इसका भी पता चल जाएगा। देश की कुल आबादी में कितनी जातियां हैं, इसका भी आंकड़ा स्पष्ट हो जाएगा। सरकार जाति आधारित जनगणना के लिए पुनर्विचार करे।

कांतिलाल मांडोत, नई दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई शुल्क अतिरिक्त।

35 प्रतिशत है देश में चीनी उत्पादन में इस समय सहकारी क्षेत्र की हिस्सेदारी। यह आंकड़ा इस तथ्य को साबित करता है कि सहकारिता के क्षेत्र में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण योगदान है।

आजकल

केंद्र में 'सहकारिता' से शुरू होगा नया अध्याय

इसी माह के आरंभ में केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार ने कैबिनेट विस्तार के दौरान एक सहकारिता मंत्रालय का भी गठन किया है। इसका प्रभार गृहमंत्री अमित शाह को दिया गया है। सहकारिता का स्वतंत्र भारत में अपना इतिहास रहा है। सहकारिता आंदोलनों ने देश की राजनीति को प्रभावित करते हुए एक नई दिशा देने का काम भी किया है। यह मंत्रालय देश में सहकारी समितियों के हितों की देख-रेख और उनके उत्थान के लिए काम करेगा। ऐसे में ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करते हुए ग्रामीण विकास में सक्षम सहकारी संगठनों की भूमिका के बारे में समग्रता से समझा जाना चाहिए



डा. विकास सिंह
मैनेजमेंट गुरु तथा वित्तीय एवं समग्र विकास के विशेषज्ञ

इसी माह केंद्रीय मंत्रिमंडल में किए गए विस्तार के साथ ही एक सहकारिता मंत्रालय का गठन चर्चा में है। हमारे देश में आज सहकारी क्षेत्र को मजबूत समर्थन की जरूरत है। सहकारिता वास्तव में ग्रामीण परिदृश्य में सर्वव्यापी है। भारत की अधिकांश ग्रामीण अर्थव्यवस्था सहकारिता से प्रभावित होती है और किसी न किसी रूप में लगभग हर ग्रामीण जीवन को प्रभावित करती है। ग्रामीण परिवेश में यह 'जीवन की सुगमता' के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है। हालांकि इसका योगदान कुछ क्षेत्रों में अधिक प्रभावी नहीं रहा है, यहां तक कि इस कारण से कुछ क्षेत्रों में एक प्रकार से ह्रास ही हुआ। विडंबना यह है कि राज्य इस क्षेत्र पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहे हैं। जबकि इसे पोषण के साथ एक मजबूत रीढ़ और अभिनव दिमाग की जरूरत है।

नीति निर्माताओं की उदासीनता : हमारे नीति निर्माता इस क्षेत्र के विकास के प्रति उदासीन रहे हैं। प्रत्येक राज्य में सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार जो इस क्षेत्र की देखरेख करते हैं, उनके पास प्रभावी रूप से योगदान करने के लिए न तो क्षमता है और न ही संसाधन। उदासीनता में जकड़े सहकारिता के इन कर्ताधर्ताओं को इसकी वास्तविक जरूरतों से कोई खास मतलब नहीं है।

संबंधित विश्लेषणों से यह तथ्य सामने आया है कि बड़े पैमाने पर उदासीनता और पोषणकर्ता (राज्य सरकारों) की लापरवाही के कारण आज हमारा सहकारी ढांचा टूट गया है। इसकी नींव बेहद नाजुक है। इसकी संरचना वर्तमान दौर के अनुकूल नहीं है। इसे कमजोर आधार पर खड़ा किया जाता है। हालांकि राज्य इसके कर्ताधर्ता हैं, लेकिन अपनी ओर से वह कोई जवाबदेही स्वीकार नहीं करता है और न ही कोई जिम्मेदारी लेता है, लिहाजा यह क्षेत्र समुचित रूप से पनप नहीं पाता है।

सर्वश्रेष्ठ निर्देशन, कमजोर नियंत्रण : हमारे देश में सहकारी पारितंत्र का राजनीतिकरण किया जाता है। वर्तमान परिस्थितियों में अगर कोई इसे सामाजिक-आर्थिक के बजाय राजनीतिक इकाई मानता है, तो उसे आसानी से समझा जा सकता है। कई राज्यों में यह एक पालन-पोषण क्षेत्र बन गया है, तो कुछ राज्यों में उभरते राजनेताओं के लिए पहचान बनाने और विधानसभा में जाने का एक माध्यम बन गया है। एक समय महाराष्ट्र के निर्वाचित विधायकों में से करीब एक-तिहाई ने सहकारी क्षेत्र में हाथ आजमाते हुए ही अपनी लोकप्रियता बढ़ाई थी। लेकिन इसके बावजूद इस क्षेत्र ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था में योगदान करना जारी रखा है। वैसे यह क्षेत्र गरीबों की तमाम आकांक्षाओं को पूरा करता है और वंचितों की सेवा करता है। कई ग्रामीण समुदायों में सहकारिता अक्सर एकमात्र सेवा प्रदाता है। विशेष रूप से देश के सबसे गरीब जिलों में।

सहकारिता के माध्यम से कृषि क्षेत्र में बाजार तक पहुंच प्रदान करते हुए किसानों की समुचित तरीके से मदद की जा सकती है। इसके माध्यम से किसानों को उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन जैसी प्रक्रियाओं में काफी मदद मिलती है। सहकारिता के माध्यम से किसानों को प्रशिक्षण, ऋण और अन्य संसाधन प्रदान किए जाते हैं, जिससे कृषि में उन्हें उच्च लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार सहकारी संगठनों के जरिये किसानों की उपज का उन्हें अधिकतम मूल्य हासिल करवाने का प्रयास किया जाता है।

विभिन्न सहकारी संस्थाएं व्यक्तिगत जोखिम को कम करके उद्यमिता को सक्षम बनाती हैं। वे साझा उत्पादकता, निर्णय लेने की क्षमता और रचनात्मक समस्या-समाधान द्वारा सहयोगी उद्यमिता की संस्कृति को बढ़ावा देती हैं। संबंधित पेशेवरों के बीच किए गए एक हालिया अध्ययन की रिपोर्ट बताती है कि सहकारिता की सफलता दर आठ गुना अधिक और एमएसएमई यानी लघु एवं मध्यम आकार के उद्योगों की तुलना में दोगुना मजबूत और टिकाऊ है।

ग्रामीण परिवारों की आय बढ़ाने का बेहतर माध्यम : क्रेडिट सहकारिता सूक्ष्म उद्यमियों को छोटे कारोबार शुरू करने, खेती या पशुधन में उद्यम करने के लिए भी प्रोत्साहित करने और उन्हें ऋण देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके अलावा, हस्तशिल्प उद्योग को संरक्षित करने और 'बाजार तक पहुंचाने' में कुछ खास सहकारी समितियां महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उल्लेखनीय है कि सहकारी पारिस्थितिकी तंत्र ग्रामीण परिवारों की आय बढ़ाने का एक बड़ा माध्यम बनता है और उन्हें अपने समुदायों के बीच ही रहते हुए सभी के साथ मिलकर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है।

परोक्ष रूप से देखें तो देश के कुछ खास इलाकों में गांवों से शहरों की ओर पलायन को रोकने में ग्रामीण सहकारी समितियों की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण रही है। एक संबंधित अध्ययन यह बताता है कि शहरों की ओर ग्रामीण नागरिकों का मजबूरी में किया गया प्रवासन शहरों और महानगरों के संसाधन पर बोझ बढ़ाने के साथ सामाजिक संघर्षों को बढ़ाता है। इसका एक बड़ा असर यह भी होता है कि ग्रामीण विकास की गति धीमी हो जाती है। एक फलता-फूलता सहकारी क्षेत्र मांग और निवेश को बढ़ा सकता है, एक अच्छे विकास चक्र को प्रोत्साहित कर सकता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अक्सर इस बात की सराहना करते हैं कि सहकारिता ग्रामीण परिदृश्य में वास्तविक विकास की शुरुआत करने के लिए एक वाहक हो सकती है और आर्थिक असमानता को कम करने तथा सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इस विषय में एक नया मंत्रालय बनाकर उन्होंने इसे एक नई दिशा प्रदान की है। इस मंत्रालय का मुख्य फोकस इस क्षेत्र को पुनर्जीवित करने और आर्थिक रूप से उचित स्थान दिलाने पर होगा। प्रधानमंत्री की मंशा स्पष्ट है और इस संदर्भ में उनका लक्ष्य व्यापक है। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था का पुनरुद्धार करने के साथ ही उसे विकसित करने वाला है। इस नवगठित सहकारिता मंत्रालय का एजेंडा ग्रामीण नागरिकों को एक राजनीतिक-सामाजिक इकाई से आगे बढ़ने और एक संपन्न सामाजिक आर्थिक उद्यम के रूप में उभरने के लिए मार्गदर्शन करना होना चाहिए। सभी प्रकार के लेन-देन को समुचित रूप से पारदर्शी बनाते हुए इसके विस्तार तथा विकास के लिए कम लागत वाली निधियों तक पहुंच को मजबूत करना चाहिए, तभी सहकारिता का चरित्र साकार होगा। हालांकि इस ओर उदासीनता से इस क्षेत्र के प्रति वर्तमान और संभावित हितधारकों का आकर्षण अवश्य कम हुआ है, लेकिन उनका भरोसा कम नहीं हुआ है।

सहकारिता मंत्रालय यदि समाज के वंचित समुदायों को जीवंत आर्थिक संस्थाओं में बदलने की क्षमता को भुनाने में असमर्थ रहता है, तो वह ग्रामीण भारत, विशेष रूप से वंचितों को विफल कर देगा। लिहाजा प्रधानमंत्री को अपने राजनीतिक प्रभाव का उपयोग संबंधित महत्वपूर्ण हितधारकों को मनाने के लिए करना चाहिए और एक सामंजस्यपूर्ण तथा समृद्ध ग्रामीण भारत के महात्मा गांधी के लक्ष्य को साकार करने के लिए इसका समग्र प्रारूप तैयार करना चाहिए।



समाज में निचले पायदान पर खड़े लोगों की आर्थिक उन्नति में सहकारी क्षेत्र की अहम भूमिका है। फाइल

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान

भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सहकारिता का महत्वपूर्ण योगदान है। आंकड़े इस तथ्य को साबित भी करते हैं। देश में चीनी उत्पादन में सहकारी क्षेत्र का हिस्सा 35 प्रतिशत है। इतना ही नहीं, चीनी उत्पादन के क्षेत्र में सहकारी संगठनों में बड़ी संख्या में ग्रामीण कार्यबल को आजीविका प्रदान करने की क्षमता है। देश में पीएसी (प्राथमिक कृषि सहकारी) की संख्या लगभग एक लाख है तथा इस मामले में ये प्रमुख ऋणदाता हैं और लगभग हर ग्रामीण ब्लाक इसके दायरे में आते हैं। यानी जमीनी स्तर पर किसानों को ऋण मुहैया कराते हुए इसके प्रवाह को गति देते हैं।

सहकारी समितियां ग्रामीण-शहरी प्रवास को कम करने और ग्रामीण सामुदायिक संस्कृति को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे बड़ी संख्या में लोगों को जीविका प्रदान करती हैं। एक फलता-फूलता सहकारी क्षेत्र न केवल आर्थिक विकास में सहयोग देगा, बल्कि रोजगार के अवसर भी बढ़ाएगा। कृषि क्षेत्र के साथ एक बड़ी विसंगति यह भी है कि इससे जुड़े अधिकांश रोजगार अल्पकालीन अवधि के होते हैं, लिहाजा लोगों को पूरे साल काम देने में यह सेक्टर सक्षम नहीं हो पाता है। ऐसे में खेती से जुड़े विभिन्न सहकारी संगठनों का व्यापक विस्तार करते हुए किसानों और कृषि कारोबार से जुड़े लोगों को पूरे वर्ष रोजगार मुहैया कराया जा सकता है। उचित संरचना और सक्षम पारिस्थितिकी तंत्र के साथ सहकारी समितियों में ग्रामीण अर्थव्यवस्था को व्यापक तौर पर प्रोत्साहित करने की क्षमता भी है। सहकारी समितियां ग्रामीण अर्थव्यवस्था को कई प्रकार से सहारा देने में सक्षम साबित हो सकती हैं। आवश्यकता है इनके भीतर छिपी हुई संबंधित क्षमता को जानने-समझने और उसे विकसित करने की। उम्मीद की जा सकती है कि केंद्र में सहकारिता मंत्रालय के गठन से ऐसा संभव हो सकेगा।

पुराने अनुभवों से सीख लेते हुए यह समझना होगा कि सहकारी समितियां तभी फल-फूल सकती हैं, जब इसके सभी सदस्यों के व्यावसायिक और सामाजिक लक्ष्य आपस में जुड़े हों। किसी एक की कीमत पर दूसरे को आगे बढ़ाने की व्यवस्था को अमल में लाने से पूरा सिस्टम बिगड़ जाएगा। इस क्षेत्र का सार और भावना महात्मा गांधी के भारत के प्रति दृष्टिकोण को दर्शाती है।

समग्रता में देखा जाए तो सहकारी समितियां भारत के आर्थिक माडल के लिए सबसे उपयुक्त हैं। सहकारिता का लाभ साझाकरण (लाभांश) और सामाजिक जिम्मेदारी (हेल्थ क्लीनिक, शिक्षा आदि) गरीबी उन्मूलन और सामाजिक गतिशीलता के लिहाज से बेहद महत्वपूर्ण है। जमीनी स्तर पर केंद्रित इसका बिजनेस माडल बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा कर सकता है। इसी तरह, एकीकृत और परिवार आधारित रोजगार माडल लैंगिक समानता को मजबूती प्रदान करते हुए महिलाओं की भूमिका को बढ़ाता है तथा उनके योगदान को महत्व देता है। इसके अलावा, हाशिए पर पड़े लोगों को सशक्त बनाते हुए वंचितों को संबल प्रदान करता है। साथ ही, सामाजिक एकजुटता बढ़ाने तथा खुशहाली एवं सद्भाव को बढ़ावा देने में सहकारी समितियां एक प्रभावी वाहक की भूमिका निभाती हैं।

खरी-खरी

साहित्य की एकल खिड़की

प्रभात गोस्वामी

साहित्य की आभासी महफिलों से अभिभूत छप्पू बाबू के जिस्म पर अक्सर पुस्तक लिखने की खुजली चलती रहती। वह जब भी बड़े भैयों को एक नई पुस्तक लिखते, वर्चुअल लोकार्पण करवाते देखता, तब खुजली और बढ़ जाती। मन अधीर हो जाता है कि क्यों न वह भी प्रति माह एक पुस्तक बाजार में लाए।

इसी तलब के चलते वह एक दिन एक 'उम्मीद प्रकाशन' के द्वारे जा पहुंचा। प्रकाशक जैसे उसी के इंतजार में थे, बोले, आइए महामना, क्या सेवा करूं? छप्पू बाबू ने कहा, सेवा करने के लिए तो बंदा हाजिर हुआ है।

प्रकाशक ने जाल में फंसती मछली देखकर कहा, आप काफी समझदार हैं। आपको 'उम्मीद प्रकाशन' की उम्मीदों का पूर्वाभास है। फिर भी कुछ सवालों के जवाब आपको देने होंगे। जैसे कि हम आपकी पुस्तक क्यों छापें? क्या आपके पास पुस्तक को बिकवाने की कोई योजना है? सरकारी महकमों में आपकी महक कितने विभागों तक महकती है?

प्रश्नों की इस तेजाबी बारिश से अचकचाए छप्पू बाबू बोले, मेरी पुस्तक आप यूं छापें कि यह कट-पेस्ट की दुनिया की नायाब पुस्तक होगी। इसमें कहानी, कविता, व्यंग्य, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, साक्षात्कार सहित साहित्य की हर विधा शामिल होगी। जैसे एकल खिड़की योजना में ग्राहकों को एक ही खिड़की पर सारी सरकारी सुविधाएं उपलब्ध होती हैं, उसी तरह पाठकों को इस एक ही किताब में साहित्य की सारी विधाएं पढ़ने को मिलेंगी। छप्पू बाबू ने तर्क देना चालू रखा। वे बोले, मेरी पुस्तक के लिए दो भूमिकाएं लिखवाऊंगा। एक बड़े साहित्यकार से जिसकी साहित्य जगत में बड़ी भूमिका है और दूसरी नए साहित्यकार से, जिसकी अभी कोई भूमिका नहीं, लेकिन मठाधीशों के आशीर्वाद से साल-छह महीने में उसकी बड़ी भूमिका होने वाली है। साहित्य में भविष्य की संभावनाओं को देखते हुए भी कुछ निवेश करना पड़ता है! हमारे चाचा पुस्तकालय विभाग में ऊंचे पद पर हैं। आपका प्रकाशन इस छोटी-सी चाल से सीधे माल में शिफ्ट हो सकता है।

यह सब सुनकर प्रकाशक की जीभ लपलपा गई। 15 दिन बाद छप्पू की पुस्तक आ गई।

ट्वीट-ट्वीट

आर्थिक सुधारों के तीन दशक पूरे होना बड़ी घटना है। लोकतंत्र के 'टांग खींचो भारतीय माडल' को देखें तो यह एक ऐतिहासिक कदम था। अब यह देखने का अवसर है कि सुधारों से अभी तक क्या खोया और क्या पाया। साथ ही सुधारों की गति तीव्र कर आने वाले तीस वर्षों का खाका बनाने की भी जरूरत है।
अखिलेश शर्मा@akhileshsharma1

कंधार में अफगान सरकार का समर्थन करने वाले बेकसूर नागरिकों को तालिबान के आतंकियों ने उनके घरों से निकालकर गोलियों से भून डाला। यही इन तालिबानी राक्षसों का असली और घिनौना चेहरा है। ये जालिम कभी नहीं बदल सकते।
समीर अब्बास@TheSamirAbbas

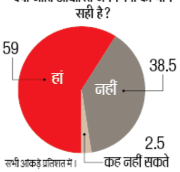


प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में दुनिया के सबसे बड़े टीकाकरण अभियान को लेकर पश्चिमी मीडिया कोई चर्चा नहीं करेगा। इस पर कोई विमर्श नहीं शुरू किया जाएगा। इसका कारण यही है कि वे यह स्वीकार ही नहीं कर सकते कि इस मुश्किल वक्त में भी भारत किसी मोर्चे पर अग्रणी बनकर दुनिया के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है।
माधव शर्मा@HashTagCricket

पूर्वोत्तर भारत से लगातार चैंपियन निकल रहे हैं जो भारत को गौरवान्वित करते हैं। हर चार साल में हमें एक बार यह अनुभूति हो जाती है।
गब्बर@GabbbarSingh

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या जाति आधारित जनगणना की मांग सही है?



सभी आकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या उदारीकरण के तीस वर्षों बाद भारतीय अर्थव्यवस्था को नए सिरे से गति देने की जरूरत है?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

पंडित नेहरू को कहें पंडित तो है माफ,
रैना पंडित क्यों नहीं जरा कीजिए साफ।
जरा कीजिए साफ अगर दोनों कश्मीरी,
तो फिर क्यों है भेद और क्या है मजबूरी?
जात-पांत की बात कीजिए या तो खंडित,
या रैना को आप पुकारो कहकर पंडित!!
-ओमप्रकाश तिवारी

उत्तर प्रदेश डायरी

राज्य में भगवा पिच पर विपक्ष



राजू मिश्र
वरिष्ठ समाचार संपादक, उत्तर प्रदेश

घरेलू पिच हमेशा मददगार होती है और यदि इस मुहावरे को उत्तर प्रदेश के मौजूदा राजनीतिक परिदृश्य से जोड़कर देखा जाए तो भाजपा राज्य का अगला विधानसभा चुनाव घरेलू पिच पर ही लड़ेगी और विपक्ष इस पर राजी भी हो गया लगता दिखता है।

अयोध्या में राम मंदिर बन रहा है। अयोध्या ही नहीं काशी, मथुरा, चित्रकूट सहित दूसरे तीर्थ-पर्यटन स्थलों में भी नई सुविधाएं बन और पुरानी परंपराएं जीवंत हो रही हैं। सांस्कृतिक धरोहरें संवारी जा रही हैं। प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से योगी सरकार विधानसभा चुनाव भगवा एजेंडे के इन्हीं कार्यों को आगे रखकर लड़ने जा रही है। यह उसका घोषित एजेंडा भी है। लेकिन, विपक्ष इनकी काट खोजने के बजाय खुद भी इसी भगवा पिच पर चुनावी खेल खेलने को आतुर दिख रहा है। बसपा नेता सतीश चंद्र मिश्र ने बिकरू कांड के एक आरोपित का मुकदमा खुद लड़ने का एलान करने के बाद पिछले हफ्ते ब्राह्मणों को जोड़ने के लिए अयोध्या से अभियान की शुरुआत की। हालांकि इसका औपचारिक नाम प्रबुद्ध वर्ग गोष्ठी रखा गया था। प्रतीकवादी इस पार्टी के महासचिव ने ट्विटर पर जो पोस्टर जारी किया उसमें नीला रंग तो नाममात्र था, भगवा रंग ही सर्वाधिक उभरकर आया। ब्राह्मणों को रिझाना उद्देश्य था, इसलिए परशुराम का चित्र तो रखा ही गया, लेकिन रामलला भी बैकग्राउंड में नजर आए और मंदिर का प्रस्तावित माडल भी। यही नहीं, इससे पहले रामलला और हनुमानगढ़ी में दर्शन भी किए। अतीत में तिलक, तराजू और तलवार का नारा इसी पार्टी के साथ जोड़ा जाता रहा है।

राम से दुराव का नाता समाजवादी पार्टी भी नहीं रखना चाहती। हां, वह राम के पहले कृष्ण को याद कर खुद को अलग दिखाना चाहती है। ब्राह्मण वोट इस पार्टी को भी चाहिए। इसलिए इसने पहले ही परशुराम की प्रतिमा स्थापित कराने का वादा कर रखा है। समाजवादी पार्टी के मौजूदा मुखिया अखिलेश यादव बीते दिनों चित्रकूट सहित कई मंदिरों में जा चुके हैं।

अहम बात यह है कि समाजवादी और बहुजन समाज पार्टी जिस मुस्लिम वोटों के ध्रुवीकरण के बिना कभी सत्ता तक नहीं पहुंच सकीं, आजकल वह इनके मामले में पूरी तरह मौन हैं। बसपा महासचिव सतीश चंद्र मिश्र एक ट्वीट में सत्ता समीकरण यूं समझाते हैं, 'सत्ता की चाबी ब्राह्मण 13 फीसद व दलित 23 फीसद के हाथ में है।' पहले यह पार्टी दलित, ब्राह्मण के साथ मुस्लिम वोटों का प्रतिशत भी बताया करती थी। समाजवादी पार्टी जिस तरह आजम खां से मुंह फेर कर बैठी है उसमें भी उसकी यही मजबूरी दिखती है।

कांग्रेस मतों का गणित तो नहीं समझा रही, लेकिन प्रियंका वाड्रा भी अपने दौरों में मठ-मंदिरों में आशीर्वाद से परहेज नहीं कर रहीं। हालांकि, प्रियंका ने उत्तर प्रदेश में संगठन की गैर मौजूदगी और भाजपा को हराने के लिए सभी से गठबंधन का विकल्प खुला रखकर वास्तविकता को एक तरह से सहज भाव से स्वीकार लिया है कि उनकी पार्टी लड़ाई में है ही नहीं।

कुछ राजनीतिक विश्लेषक मान रहे हैं कि यह विपक्ष की भाजपा के वोटों में सेंधमारी की रणनीति है, तो दूसरा वर्ग मान रहा है कि यह सत्ता पक्ष द्वारा बिछाए जाल में विपक्ष के आसानी से लगातार फंसते जाने का एक और प्रमाण है।

नजीर बन सकता है विश्वनाथ धाम कारिडोर के लिए हुआ समझौता : बीते हफ्ते काशी के किनारे से ताजा हवा का झोंका आया। श्रीकाशी विश्वनाथ धाम कारिडोर को नया कलेवर दिया जा रहा है। इसमें ज्ञानवापी मस्जिद के सामने स्थित 1700 वर्ग फीट की जमीन आड़े आ रही थी। यह जमीन सुन्नी वक्फ बोर्ड की तरफ से अभी लीज पर मंदिर को मिली थी। जमीन पर पुलिस का कंट्रोल रूम बना था। अब इस जमीन का मालिकाना हक मंदिर के पास होगा। यह सबकुछ एक समझौते के तहत हुआ जिसमें मंदिर प्रशासन ने अंजुमन इंतजामिया मसाजिद को बांसफाटक में एक हजार वर्ग फीट जमीन दी है। एक तरह से मंदिर प्रशासन और सुन्नी सेंट्रल वक्फ बोर्ड के बीच जमीन की अदला-बदली हुई है। ठीक उसी तरह जिस तरह सुप्रीम कोर्ट के फैसले में अयोध्या में राममंदिर बनाने के साथ ही मस्जिद के लिए अयोध्या की सीमा से बाहर जमीन देने का आदेश दिया गया था। विश्वनाथ कारिडोर के लिए जमीन की अदला-बदली को बाकायदा कानूनी जामा पहनाया गया और एक दूसरे के पक्ष में रजिस्ट्री की गई।

यह एक छोटी शुरुआत है, लेकिन इसे नजीर मानकर यदि काशी के समग्र विवाद और मथुरा में श्रीकृष्ण जन्म स्थान मामले के निदान के प्रयास किए जाएं तो अयोध्या जैसे विवाद के विकराल होने से पहले ही उचित समाधान तक पहुंचा जा सकता है। काशी में ज्ञानवापी और मथुरा में शाही मस्जिद को भी इसी तरह अलग से जमीन देकर विवाद के समाधान तक पहुंचा जा सकता है। हां, लेकिन यह तभी संभव है जब राजनीतिक दल इस मसले पर अनावश्यक अपनी टांग न अड़ाएं और यह सब एक सौहार्दपूर्ण प्रक्रिया के तहत हो।



बसपा ने अयोध्या से ब्राह्मणों को जोड़ने का अभियान शुरू किया तो अपने पोस्टर को भी भगवा रंग में रंग डाला। सौजन्य : इंटरनेट मीडिया

मंथन

लाल किला या नेताजी फोर्ट

नेताजी सुभाष चंद्र बोस के प्रपौत्र चंद्र कुमार बोस द्वारा हाल ही में लाल किला का नाम नेताजी फोर्ट रखे जाने की मांग की है, जिसे समग्रता में देखते हुए गलत नहीं कहा जा सकता है



सन्नी कुमार
अध्येता, इतिहास

बीते दिनों नेताजी सुभाष चंद्र बोस के प्रपौत्र चंद्र कुमार बोस ने फिर इस मांग को उठाया कि लाल किले का नाम बदलकर 'नेताजी फोर्ट' कर दिया जाए। अपनी बात की पुष्टि के लिए उन्होंने इस बात को भी जोड़ा कि डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भी इस आशय की मांग की थी, किंतु तत्कालीन नेहरू सरकार ने इस पर ध्यान नहीं दिया।

अब यहां दो सवाल खड़े होते हैं। एक तो यह कि एक मुगलकालीन इमारत से सुभाष चंद्र बोस का ऐसा क्या संबंध है कि ऐसा नामांतरण किया जाए? दूसरा यह कि नाम बदले के पीछे क्या कारक कार्य करते हैं? आमतौर पर इतिहास को देखने का नजरिया, विचारधारा तथा अस्मिता के नए रूपों को ग्रहण करने जैसे कारक नामांतरण के लिए जिम्मेदार होते हैं। दुनियाभर में ऐसे उदाहरण मौजूद हैं। इस संदर्भ में कुछ उदाहरण देखें तो 'कुस्तुनतुनिया' शहर जो एक ईसाई कांस्टेनटाइन के नाम पर था, उसे इस्लामी चरित्र के अनुरूप बदलकर इस्तांबुल कर दिया गया। इसी प्रकार देशज संस्कृति के प्रतिनिधित्व के नाम पर दो कनाडाई शहरों बायटान और यार्क का नाम बदलकर क्रमशः ओटावा और टोरंटो किया गया। सोवियत संघ के विघटन के बाद साम्यवादी नेताओं के नाम पर बने शहरों लेनिनग्राद और स्टालिनग्राद को बदलकर क्रमशः सेंट पीटर्सबर्ग और वोल्गोग्राद कर दिया गया। कहने का भाव यह है कि वैश्विक स्तर पर शहरों, इमारतों आदि के नाम बदलते रहे हैं, लेकिन इन सबके पीछे एक स्पष्ट कारण होता है। अब क्या लाल किले को नेताजी फोर्ट करने के पीछे कोई मजबूत कारण है?

नेताजी ने अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध जो फौज संगठित की उन्हें प्रेरणा देने के लिए उन्होंने 'दिल्ली चलो' का ऐतिहासिक नारा दिया। दिल्ली पर धावे का अर्थ था लाल किले पर कब्जा। प्रकारांतर से लाल किले पर कब्जे का अर्थ देश के केंद्र पर काबिज होने की मंशा ही थी। इस तरह नेताजी ने लाल किले पर फतह के मनोवैज्ञानिक महत्व को सर्वाधिक सटीकता से समझा। 'आजाद हिंद फौज' पर चला ट्रायल जिसे लाल किला मुकदमा भी कहते हैं, यह भी इसी इमारत से जुड़ा हुआ है। इस मुकदमे ने राष्ट्रीय चेतना को एकीकृत स्वर प्रदान किया था।

वस्तुतः जिस प्रकार लाल किला सदियों से शक्ति एवं प्रभुसत्ता का प्रतीक बना रहा, उसी तरह नेताजी की छवि भी एक ऐसे ही सशक्त व्यक्ति की रही है। वो नेताजी ही थे जिन्होंने अंग्रेजी सत्ता को उनके ही तरीकों से चुनौती दी। इस प्रकार सत्ता के प्रतीक रहे लाल किले और नेताजी के बीच एक स्पष्ट संबंध जुड़ता है। अगर इस नामांतरण को 'मुगल- गैर मुगल' की संकिर्णता में न देखकर राष्ट्रीय इमारत को नया अर्थ देने की व्यापकता में देखा जाए तो नेताजी फोर्ट एक सुसंगत अर्थ रखता है। सबसे बढ़कर यह कि लाल किला किसी मुगल शासक के नाम पर नहीं है और न ही यह किसी धार्मिक पहचान को धारण करता है, लाल बलुआ पत्थर से बने होने के कारण इसे लाल किला कहा जाता है। इसलिए यह नामांतरण किसी सांस्कृतिक पहचान से विरोध नहीं रखता है।

अब यहां एक नजर लाल किले के इस रूप पर डालना जरूरी है कि यह किस प्रकार राजनीतिक प्रभुसत्ता के केंद्र के रूप में महत्व रखता है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि इसे नेताजी फोर्ट कहना क्यों जायज हो सकता है! वस्तुतः 17वीं सदी में शाहजहां द्वारा निर्मित लाल किला न केवल मुगल प्रभुसत्ता व शक्ति का प्रतीक था, बल्कि कालांतर में यह राष्ट्रीय एकीकरण और ध्रुवीकरण का भी केंद्र बना। विदेशी आक्रमणकारी के रूप में तुर्क, ईरानी व अंग्रेजों ने अगर दिल्ली पर आक्रमण किया तो अपनी वैधता व शक्ति प्रदर्शन के लिए लाल किले को ही केंद्र चुना। ईरानी बादशाह नादिरशाह तो लाल किले में मयूर सिंहासन पर बैठकर ही अपनी जीत का अनुभव कर पाया। इतना ही नहीं, वर्ष 1857 में स्वतंत्रता के पहले आंदोलन से लेकर आजाद हिंद फौज के सिपाहियों तक ने दिल्ली के लाल किले से एक जुड़ाव महसूस किया।

सत्ता के केंद्र के रूप में लाल किला एक प्रतीकात्मक महत्व रखता है। यह धारणा इस बात से भी पुष्ट हो जाती है कि अंग्रेजों ने लाल किले के इस प्रतीकात्मक महत्व को नष्ट करने की हरसंभव कोशिश की। वर्ष 1911 में जब दिल्ली दरबार का आयोजन हुआ तब महारानी विक्टोरिया ने लाल किले से ही इसकी ऐतिहासिक घोषणा की थी और जब देश आजाद हुआ तो नेहरू ने लाल किले को ही ध्वजारोहण के लिए चुना। तब से यह परंपरा चली आ रही है।

अतः जब यह स्पष्ट है कि अलग-अलग समयों में यह इमारत राजनीतिक शक्ति को ही प्रतिबिंबित करता रहा तो इस प्रतीक को किसी ऐसे व्यक्तित्व से संबोधित करना, जिसने अपने जनों के लिए यही शक्ति चाही, अतिशयोक्ति नहीं है। खासकर जब हर स्वतंत्रता दिवस को यह इमारत ही नए भारत के स्वप्न का पहला साक्षी बनता है तो इसे आधुनिक अर्थ देने में कोई बुराई नहीं है। इतिहास की अपनी जटिलताएं होती हैं, लेकिन यह कभी भी अपने लोगों को नए अर्थ ग्रहण करने से नहीं रोकती। इस नामांतरण से मुगल काल में बनी इस इमारत का इतिहास कहीं से खंडित नहीं होगा, बल्कि नए अर्थ ही ग्रहण करेगा।



सत्ता के केंद्र के रूप में दिल्ली का लाल किला ऐतिहासिक रूप से प्रतीकात्मक महत्व रखता है। फाइल

राष्ट्रीय संस्करण
सोमवार 26 जुलाई, 2021
दैनिक जागरण
www.jagran.com

बिजनेस

सैंगयांग को खरीदेगी अमेरिकी कंपनी

सियोल : अमेरिका स्थित वाहन आयातक हा आटोमोटिव होल्डिंग्स कर्ज में डूबी सैंगयांग मोटर कंपनी का अधिग्रहण करने के लिए अगले सप्ताह अपना आशय पत्र (एलओआइ) जमा कराएगी। महिंद्रा ने 2011 में 523 अरब वोन देकर एसयूवी बनाने वाली इस दक्षिण कोरियाई कंपनी में 70 फीसद हिस्सेदारी हासिल की थी। (आइएएनएस)

अगर हम अपने स्मार्टफोन की डिमांड को 100 फीसद पूरा करने में सफल हो जाएं तो इस क्षेत्र में पहले नंबर की कंपनी बन सकते हैं। फिलहाल मांग के सापेक्ष 70 फीसद ही आपूर्ति कर पा रहे हैं।
–माधव सेठ, सीईओ, रियलमी



एक नजर में

सोने का आयात बढ़कर 7.9 अरब डालर पर पहुंचा

नई दिल्ली : देश के चालू खाता घाटे पर असर डालने वाले सोने का आयात अप्रैल-जून 2021 की तिमाही के दौरान कई गुना बढ़कर 7.9 अरब डालर (58,572.99 करोड़ रुपये) हो गया। वाणिज्य मंत्रालय के अनुसार पिछले वित्तीय वर्ष की इसी अवधि में कोरोना प्रकोप के चलते आयात 68.8 करोड़ डालर (5,208.41 करोड़ रुपये) तक गिर गया था। अप्रैल-जून 2021 तिमाही में चांदी का आयात 93.7% घटकर 3.94 करोड़ डालर रहा। मौजूदा वित्त वर्ष में अप्रैल-जून के दौरान आयात में इतनी वृद्धि से देश का व्यापार घाटा बढ़कर लगभग 31 अरब डालर हो गया है। (प्रेट्र)

आदित्य पुरी सबसे ज्यादा वेतन पाने वाले बैंक अफसर

मुंबई : एचडीएफसी बैंक के आदित्य पुरी अपने सेवानिवृत्ति के वर्ष (2020-21) में निजी क्षेत्र के शीर्ष तीन बैंकों के अधिकारियों में सबसे अधिक वेतन-भत्ता कमाने वाले अधिकारी रहे। उनकी कुल कमाई 13.82 करोड़ रुपये थी। पुरी के उत्तराधिकारी शशिधर जगदीशन ने बीते वित्तीय वर्ष में 4.77 करोड़ रुपये का वेतन हासिल किया। आइसीआइसीआइ बैंक के प्रबंध निदेशक और सीईओ संदीप बख्शी ने इसी वित्त वर्ष के लिए अपने मूल वेतन और अनुपूरक भत्तों के अपने तय हिस्से को छोड़ दिया। वहीं एक्सिस बैंक के प्रमुख अमिताभ चौधरी को वेतन-भत्ते के तौर पर 6.52 करोड़ रुपये मिले। (प्रेट्र)

मोबाइल की तरह बदल सकेंगे बिजली कंपनी

नई दिल्ली : केंद्रीय मंत्रिमंडल जल्द बिजली (संशोधन) विधेयक, 2021 को मंजूरी देने पर विचार कर सकता है। विधेयक पारित होने के बाद दूरसंचार सेवाओं की तरह बिजली उपभोक्ताओं को भी कई सेवाप्रदाताओं में अपनी पसंद का विकल्प चुनने की आजादी होगी। सरकार का इरादा इस विधेयक को संसद के मानसून सत्र में लाने का है। सरकार ने मौजूदा संसद सत्र में जिन 17 विधेयकों को पेश करने के लिए सूचीबद्ध किया है उनमें यह भी शामिल है। (प्रेट्र)

खादी के उत्पादन को लगे पंख, 188% की बढ़ोतरी

पीएम ने पहली बार 2014 में खादी खरीदने की अपील की थी

मन की बात का असर

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात से खादी की बिक्री को भारी प्रोत्साहन मिला है। मोदी ने पहली बार दो अक्टूबर 2014 को मन की बात में लोगों से खादी खरीदने की अपील की थी और उसके बाद से अब तक खादी के उत्पादन में 188 फीसद की बढ़ोतरी हो चुकी है।

केवीआइसी के चेयरमैन वीके सक्सेना कहते हैं, वर्ष 2014-15 में खादी का उत्पादन 879.98 करोड़ रुपये का था। वर्ष 2018-19 तक उत्पादन में 100 फीसद से अधिक की वृद्धि दर्ज हो चुकी थी। वहीं वर्ष 2014-15 के मुकाबले फिलहाल उत्पादन में 188 फीसद की वृद्धि हो चुकी है। सक्सेना ने बताया कि प्रधानमंत्री की तरफ से एक बार फिर से खादी का जिक्र करने के बाद रविवार को केवीआइसी के आनलाइन ट्रैफिक में भारी बढ़ोतरी देखी गई।



रविवार को प्रधानमंत्री मोदी के मन की बात में जिक्र के बाद केवीआइसी के आनलाइन हिट में भारी बढ़ोतरी ● फाइल फोटो

आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2014 के बाद से ही खादी के किसी एक स्टोर की बिक्री एक दिन में लाखों रुपये से अधिक होने लगी। दो अक्टूबर, 2014 को मन की बात में लोगों से खादी की खरीदारी करने की प्रधानमंत्री की अपील के बाद चार अक्टूबर, 2014 को खादी इंडिया की एक दिन की बिक्री 66.81 लाख रुपये की रही जो उस समय सर्वाधिक थी। हालांकि उसके बाद से खादी की बिक्री में लगातार बढ़ोतरी होती चली गई और अब एक साल में कई मौकों पर केवीआइसी के एक स्टोर की बिक्री एक करोड़ रुपये से अधिक हो जाती है।

केवीआइसी के मुताबिक वर्ष 2019 के दो अक्टूबर को नई दिल्ली के कनाट प्लेस स्थित खादी इंडिया ने 1.27 करोड़ रुपये की बिक्री हुई, जो अब तक का रिकार्ड है। केवीआइसी के मुताबिक प्रधानमंत्री के मन की बात में खादी का जिक्र आने के बाद से नौजवान खादी की ओर आकर्षित होने लगे और अब यह फैशन का रूप लेता जा रहा है। कोरोना के बावजूद गत वित्त वर्ष 2020-21 में केवीआइसी का कारोबार पूर्व के वित्त वर्ष के मुकाबले 7.71 फीसद से बढ़कर 95,741.74 करोड़ रुपये का हो गया। केवीआइसी खादी के साथ अन्य उत्पादों की बिक्री भी करता है।

आरबीआइ के बोर्ड में नौ गैर-सरकारी निदेशकों की कमी

नई दिल्ली, प्रेट्र : आरबीआइ के केंद्रीय बोर्ड में नौ गैर-सरकारी निदेशकों की कमी है। इनमें से सात निदेशकों के पद ऐसे हैं, जिन पर विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े प्रसिद्ध लोगों का मनोनयन किया जाता है। केंद्रीय बोर्ड रिजर्व बैंक के गवर्नर की अगुआई वाला निर्णय लेने का शीर्ष निकाय है। विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े प्रसिद्ध लोग इसमें शामिल हैं।

आरबीआइ कानून के तहत सरकार बैंक के केंद्रीय बोर्ड में चार निदेशकों के अलावा (चार स्थानीय बोर्डों में से एक-एक) विभिन्न क्षेत्रों के 10 प्रसिद्ध लोगों की नियुक्ति करती है। सरकार अभी तक इनमें सात की नियुक्ति नहीं कर पाई है। वहीं पश्चिमी और दक्षिणी क्षेत्र के स्थानीय बोर्ड से भी प्रतिनिधित्व का अभाव है। अभी सिर्फ चर्चित हस्तियों में टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन, बैंकर एसके मराठे तथा चार्टर्ड अकाउंटेंट तथा आरएसएस के विचारक एस गुरुमूर्ति केंद्रीय बोर्ड में है। रिजर्व बैंक की वेबसाइट के अनुसार उनका मनोनयन रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 8 (1) (सी) के तहत किया गया है।

90 फीसद भारतीय इलेक्ट्रिक वाहन के लिए ज्यादा कीमत देने को तैयार

नई दिल्ली, प्रेट्र : वैश्विक स्तर पर अगले 12 महीनों में इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) की बिक्री में जबर्दस्त बढ़ोतरी की संभावना है। कंसल्टेंसी फर्म अर्नस्ट एंड यंग (ईवाई) का कहना है कि भारत में भी करीब 90 फीसद लोग इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने के लिए अधिक खर्च करने को तैयार हैं।

ईवाई के मोबिलिटी कंज्यूमर इंडेक्स (एमसीआइ) सर्वे में 13 देशों के 9,000 से अधिक लोगों की प्रतिक्रिया ली गई। इसमें भारत से 1,000 लोगों की राय ली गई है। सर्वे जुलाई के दूसरे पखवाड़े में किया गया। सर्वे में 40 फीसद लोगों ने कहा कि वे इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने को अन्य वाहनों की तुलना में 20 प्रतिशत अधिक खर्च करने को तैयार हैं। भारत में 10 में से तीन कार खरीदारों ने कहा कि वे इलेक्ट्रिक/हाइड्रोजन वाहन खरीदना पसंद करेंगे। सर्वे में शामिल ज्यादातर भारतीय उपभोक्ताओं का कहना था कि वे पूरी तरह चार्ज ईवी से 100 से 200 मील चलने की उम्मीद करते हैं। भारत में तो 90 फीसद उपभोक्ता ईवी खरीदने के लिए अधिक खर्च करने को तैयार हैं।



इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) ● फाइल फोटो

ईवाई इंडिया के पार्टनर और आटोमोटिव क्षेत्र के लीडर विनय रघुनाथ ने कहा, 'इलेक्ट्रिक और अन्य प्रौद्योगिकी प्लेटफार्म वाले वाहनों के स्वामित्व की लागत का अंतर घट रहा है।'

इलेक्ट्रिक कारों पर मिलने वाले प्रोत्साहन से कंपनियां उत्साहित : लग्जरी कार निर्माता कंपनी आडी और मर्सिडीज बेंज भारत में इलेक्ट्रिक कारों को लेकर किए जा रहे एलान से उत्साहित हैं। इन कंपनियों का कहना है कि केंद्र की फेम-दो योजना के तहत व्यक्तिगत यात्री वाहनों को सीधे लाभ की पेशकश नहीं की गई है लेकिन इलेक्ट्रिक कारों पर जीएसटी में पांच प्रतिशत के प्रोत्साहन जैसे कदमों से मदद मिलेगी। बता दें कि आडी ने पिछले सप्ताह ही ई-ट्रान ब्रांड के तहत तीन इलेक्ट्रिक एसयूवी उतारी हैं। मर्सिडीज-बेंज पिछले साल अक्टूबर से अपनी पूर्ण इलेक्ट्रिक एसयूवी ईक्यूसी की बिक्री कर रही है।

स्पष्ट नीति के बाद यामाहा करेगी निवेश : यामाहा मोटर इंडिया ग्रुप के चेयरमैन मोटोफुमी शितारा ने कहा, कंपनी भारत और अन्य वैश्विक बाजारों के लिए नए ईवी प्लेटफार्म पर काम कर रही है। हालांकि देश में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी पर कंपनी का निवेश सरकार की इस संबंध में स्पष्ट नीति पर निर्भर करेगा।

डोमिनोज ने रिवोल्ट मोटर्स से किया करार

डोमिनोज पिज्जा ने अपने मौजूदा पेट्रोल बाइक बेड़े को ई-बाइक में बदलने के लिए रिवोल्ट मोटर्स के साथ हाथ मिलाया है। साझेदारी के तहत डोमिनोज रिवोल्ट के आरवी300 बाइक माडल की पूरी मौजूदा इंवेंट्री खरीदेगा और उसे अपने पेट्रोल बाइकों के स्थान पर प्रयोग करेगा।

पीएम आवास योजना को नए सिरे से पेश करने की जरूरत

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआइआइ) ने प्रधानमंत्री आवास योजना (पीएमएवाई) को नए सिरे से पेश करने की वकालत की है। उद्योग संगठन ने रविवार को कहा, पीएमएवाई को नए सिरे से पेश कर इसमें अनिवार्य रूप से सभी ऋणदाताओं के लिए कर्ज से जुड़े जीवन बीमा के प्रविधान को जोड़ने की जरूरत है। इससे यह सुनिश्चित हो सकेगा कि प्रमुख कर्जदार की मृत्यु होने या दिव्यांगता की स्थिति में भी सभी को घर प्रदान करने का लक्ष्य भटकेगा नहीं। भारत 2022 में अपनी आजादी के 75 साल पूरे कर रहा है। पीएमएवाई सभी के लिए घर का सरकार का महत्वाकांक्षी मिशन है।

सीआइआइ ने कहा कि योजना में पहले से बीमा का प्रविधान जोड़ा नहीं गया है। ऐसे में यह योजना कर्ज लेने वाले की मृत्यु या दिव्यांगता के जोखिमों को पूरा नहीं करती है। यदि योजना में बीमा को जोड़ दिया जाता है तो किसी भी स्थिति में सभी के लिए घर के लक्ष्य को हासिल किया जा सकेगा। संगठन के महानिदेशक चंद्रजीत बनर्जी ने कहा कि महामारी की वजह से नागरिकों का जीवन और आजीविका प्रभावित हुई है। इस दौर में परिवारों का संरक्षण काफी महत्वपूर्ण हो गया है।

एचडीएफसी को दिया 25 करोड़ डालर का कर्ज

अंतरराष्ट्रीय वित्त निगम (आइएफसी) ने देश में निम्न आय वर्ग के लोगों को सस्ता और ईको फ्रेंडली घर उपलब्ध कराने के लिए एचडीएफसी को 25 करोड़ डालर (1,875 करोड़ रुपये) का कर्ज दिया है।

अमेरिका और ब्राजील जैसे देश भारत के प्रमुख निर्यात बाजार

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : अमेरिका भारत का सबसे प्रमुख निर्यात बाजार बनता जा रहा है। इस साल जुलाई के पहले 21 दिनों में अमेरिका को 145.85 करोड़ डालर का निर्यात किया गया जो पिछले साल की समान अवधि के मुकाबल 49.32 करोड़ डालर अधिक है। वहीं जुलाई के पहले तीन सप्ताह में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) को 66.65 करोड़ डालर का निर्यात किया गया, जो पिछले साल की समान अवधि के मुकाबले 37.3 करोड़ डालर अधिक है। इस सबके बीच ब्राजील को होने वाले निर्यात में तेजी से वृद्धि हो रही है। इस साल जुलाई में ब्राजील को 21.25 करोड़ डालर का निर्यात किया गया जो पिछले साल जुलाई के पहले 21 दिनों के मुकाबले 14.4 करोड़ डालर अधिक है। चीन, इंडोनेशिया व आस्ट्रेलिया जैसे देशों को होने वाले निर्यात में तेजी से वृद्धि हो रही है।

लेकिन 2019 के मुकाबले इंडोनेशिया, चीन को होने वाले निर्यात में अधिक वृद्धि

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के मुताबिक अगर वर्ष 2019 जुलाई में किए गए निर्यात की तुलना वर्ष 2021 से की जाए तो इस अवधि में सबसे अधिक वृद्धि इंडोनेशिया को होने वाले निर्यात में हुई है। इसके बाद चीन और आस्ट्रेलिया का नंबर आता है। आंकड़ों के मुताबिक इस साल जुलाई के पहले तीन सप्ताह में इंडोनेशिया को 23.27 करोड़ डालर का निर्यात किया गया जो 2019 की समान अवधि के मुकाबले 16.7 करोड़ डालर अधिक है। इस साल जुलाई माह के पहले 21 दिनों में चीन को 41.47 करोड़ डालर का निर्यात किया गया जो 2019 की समान अवधि के मुकाबले 9.69 करोड़ डालर अधिक है। आस्ट्रेलिया में इस साल जुलाई के पहले तीन सप्ताह में 10.56 करोड़ डालर का निर्यात किया गया जो वर्ष 2019 की समान अवधि के मुकाबले 5.87 करोड़ डालर अधिक है। मंत्रालय के मुताबिक इस साल जनवरी से मई के बीच चीन को होने वाले निर्यात में पिछले साल की समान अवधि के मुकाबले 46.15% की वृद्धि दर्ज की गई जबकि इसी अवधि में अमेरिका को होने वाले निर्यात में 52.82% का इजाफा हुआ।

तीन सरकारी बैंकों के एमडी का कार्यकाल बढ़ाने की सिफारिश

नई दिल्ली, प्रेट्र : वित्त मंत्रालय ने पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) सहित सार्वजनिक क्षेत्र के तीन बैंकों के प्रबंध निदेशकों का कार्यकाल बढ़ाने की सिफारिश की है। इसके साथ ही कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) से विभिन्न सरकारी बैंकों के 10 कार्यकारी निदेशकों (ईडी) के सेवा विस्तार को भी कहा है। पंजाब नेशनल बैंक के प्रबंध निदेशक और सीईओ एसएस मल्लिकार्जुन राव का तीन साल का कार्यकाल 18 सितंबर को समाप्त हो रहा है। वित्त मंत्रालय ने उनका कार्यकाल 31 जनवरी, 2022 तक बढ़ाने की सिफारिश की है। राव तब तक 60 वर्ष की अपनी सेवानिवृत्ति की आयु प्राप्त कर लेंगे।

यूको बैंक के प्रबंध निदेशक और सीईओ अतुल कुमार गोयल के कार्यकाल में आगामी पहली नवंबर से दो साल का विस्तार करने की सिफारिश की गई है। बैंक ऑफ महाराष्ट्र के प्रबंध निदेशक और सीईओ एएस राजीव का कार्यकाल भी एक दिसंबर, 2021 से आगे दो साल के लिए बढ़ाने का सुझाव दिया गया है।

वित्त मंत्रालय ने साथ ही इंडियन बैंक के प्रबंध निदेशक और सीईओ के तौर पर नियुक्ति के लिए एसएल जैन के नाम की सिफारिश की है। सरकारी बैंकों और वित्तीय संस्थानों के लिए अधिकारियों की तलाश करने वाले बैंक बोर्ड ब्यूरो (बीबीबी) ने साक्षात्कार के बाद मई में जैन के नाम की सिफारिश की थी। कार्यकारी निदेशकों के संबंध में मंत्रालय ने उनके कार्यकाल को उनकी सेवानिवृत्ति की आयु या दो वर्ष, जो भी पहले हो, तक बढ़ाने के लिए 10 नामों की सिफारिश की है।

खेल जागरण

मुंबई-चेन्नई के मुकाबले से होगी आइपीएल की बहाली

नई दिल्ली, प्रेट्र : आइपीएल संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में जब बहाल होगी तो 19 सितंबर को दुबई में गत चैंपियन मुंबई इंडियंस का सामना चेन्नई सुपरकिंग्स (सीएसके) से होगा। बायो-बबल (कोरोना से बचाव के लिए बनाए गए सुरक्षित माहौल) में कोविड-19 संक्रमण के कई मामले आने के बाद मई में टूर्नामेंट को स्थगित कर दिया गया था। बीसीसीआइ ने कहा, 'महामारी को देखते हुए इस साल मई में स्थगित किया गया 14वां सत्र 19 सितंबर को दुबई में सीएसके और मुंबई इंडियंस के बीच ब्लाकबस्टर मुकाबले के साथ बहाल होगा।'

टूर्नामेंट के बहाल होने पर 27 दिनों में 31 मुकाबले खेले जाएंगे। मुंबई इंडियंस और चेन्नई सुपरकिंग्स के बीच मुकाबले के अगले दिन अबू धाबी में कोलकाता नाइटराइडर्स (केकेआर) का सामना रायल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) से होगा। शारजाह 24 सितंबर को अपने पहले मुकाबले की मेजबानी करेगा, जो आरसीबी और सीएसके के बीच होगा। पहला क्वालीफायर 10 अक्टूबर को दुबई में होगा, जबकि एलिमिनेटर 11 अक्टूबर को शारजाह में खेला जाएगा। दूसरा क्वालीफायर 13 अक्टूबर को शारजाह में ही होगा। आइपीएल का फाइनल 15 अक्टूबर को दुबई में खेला जाएगा।

आइपीएल का कार्यक्रम-2021

तारीख	समय	मैच	स्थान
19 सितंबर	7:30	सीएसके vs मुंबई इंडियंस	दुबई
20 सितंबर	7:30	केकेआर vs आरसीबी	अबू धाबी
21 सितंबर	7:30	पंजाब किंग्स vs राजस्थान रायल्स	दुबई
22 सितंबर	7:30	दिल्ली कैपिटल्स vs हैदराबाद	दुबई
23 सितंबर	7:30	मुंबई इंडियंस vs केकेआर	अबू धाबी
24 सितंबर	7:30	आरसीबी vs सीएसके	शारजाह
25 सितंबर	3:30	दिल्ली कैपिटल्स vs राजस्थान रायल्स	अबू धाबी
25 सितंबर	7:30	सनराइजर्स हैदराबाद vs पंजाब किंग्स	शारजाह
26 सितंबर	3:30	सीएसके vs केकेआर	अबू धाबी
26 सितंबर	7:30	आरसीबी vs मुंबई इंडियंस	दुबई
27 सितंबर	7:30	हैदराबाद vs राजस्थान रायल्स	दुबई
28 सितंबर	3:30	केकेआर vs दिल्ली कैपिटल्स	शारजाह
28 सितंबर	7:30	मुंबई इंडियंस vs पंजाब किंग्स	अबू धाबी
29 सितंबर	7:30	राजस्थान रायल्स vs आरसीबी	दुबई
30 सितंबर	7:30	सनराइजर्स हैदराबाद vs सीएसके	शारजाह
01 अक्टूबर	7:30	केकेआर vs पंजाब किंग्स	दुबई
02 अक्टूबर	3:30	मुंबई इंडियंस vs दिल्ली कैपिटल्स	शारजाह
02 अक्टूबर	7:30	राजस्थान रायल्स vs सीएसके	अबू धाबी
03 अक्टूबर	3:30	आरसीबी vs पंजाब किंग्स	शारजाह
03 अक्टूबर	7:30	केकेआर vs हैदराबाद	दुबई
04 अक्टूबर	7:30	दिल्ली कैपिटल्स vs सीएसके	दुबई
05 अक्टूबर	7:30	राजस्थान रायल्स vs मुंबई	शारजाह
06 अक्टूबर	7:30	आरसीबी vs हैदराबाद	अबू धाबी
07 अक्टूबर	3:30	सीएसके vs पंजाब किंग्स	दुबई
07 अक्टूबर	7:30	केकेआर vs राजस्थान रायल्स	शारजाह
08 अक्टूबर	3:30	हैदराबाद vs मुंबई इंडियंस	अबू धाबी
08 अक्टूबर	7:30	आरसीबी vs दिल्ली कैपिटल्स	दुबई
10 अक्टूबर	7:30	क्वालीफायर-1	दुबई
11 अक्टूबर	7:30	एलीमिनेटर	शारजाह
13 अक्टूबर	7:30	क्वालीफायर-2	शारजाह
15 अक्टूबर	7:30	फाइनल	दुबई

नोट : 3:30 बजे के मैच दोपहर में और 7:30 बजे के मैच रात से शुरू होंगे।

सूर्यकुमार व भुवी ने दिलाई जीत

कोलंबो, प्रेट्र : सूर्यकुमार यादव के अर्धशतक के बाद भुवनेश्वर कुमार की अगुआई में गेंदबाजों के उम्दा प्रदर्शन से भारत ने पहले टी-20 मैच में रविवार को यहां श्रीलंका को 38 रन से हराकर तीन मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त बनाई। भारत के 165 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए श्रीलंका की टीम तेज गेंदबाजों भुवनेश्वर (4/22) और दीपक चाहर (2/24) की धारदार गेंदबाजी के सामने 18.3 ओवर में 126 रन पर ढेर हो गई। श्रीलंका ने अंतिम सात विकेट सिर्फ 36 रन पर गंवाए। मेजबान टीम की ओर से चरित असलंका ने सर्वाधिक 44 रन बनाए। इससे पहले भारत भी सूर्यकुमार (50) के अर्धशतक और कप्तान शिखर धवन (46) की उपयोगी पारियों के बावजूद पांच विकेट पर 164 रन ही बना सका था। सूर्यकुमार ने 34 गेंद की अपनी पारी में पांच चौके और दो छक्के जड़े।

लक्ष्य का पीछा करते हुए श्रीलंका की शुरुआत अच्छी नहीं रही। उसने 50 रन तक तीन विकेट गंवा दिए। चरित असलंका व अशेन बंडारा (09) ने चौथे विकेट के लिए 50 रन जोड़े। इस साझेदारी को हार्दिक ने अशेन को बोल्ड कर तोड़ा। श्रीलंका को अंतिम पांच ओवर में जीत के लिए 58 रन की दरकार थी। चाहर ने 16वें ओवर में असलंका और वानिंदु हसरंगा (00) को चलता किया। अगले ओवर में भुवनेश्वर की गेंद को चमिका करुणारत्ने (03) विकेटों पर खेल गए। श्रीलंका को अंतिम ओवर में 43 रन की जरूरत थी। वरुण चक्रवर्ती के 18वें ओवर में सिर्फ तीन रन बने, जबकि शनाका को इशान किशन से स्टंप कर दिया। शनाका ने 16 रन बनाए। भुवनेश्वर ने अगले ओवर में इसुरू उदाना (01) और दुष्मंता चमीरा (01) को पवेलियन भेजकर भारत को जीत दिलाई।

इससे पहले श्रीलंका के कप्तान दासुन शनाका ने टास जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। तेज गेंदबाज चमीरा ने पदार्पण कर रहे पृथ्वी शा (0) को मैच की पहली ही गेंद पर विकेटकीपर मिनोद भानुका के हाथों कैच कराया। कप्तान धवन और संजू सैमसन (27) ने पावर प्ले में भारत का स्कोर एक विकेट पर 51 रन तक पहुंचाया। लेग स्पिनर हसरंगा ने सैमसन को एलबीडब्ल्यू कर श्रीलंका को दूसरी सफलता दिलाई। धवन व सैमसन ने दूसरे विकेट के लिए 51 रन जोड़े। इसके बाद सूर्यकुमार ने धवन के साथ तीसरे विकेट के लिए 62 रन जोड़े। धवन करुणारत्ने की गेंद पर बड़ा शाट खेलने की कोशिश में कैच दे बैठे। सूर्यकुमार ने हसारंगा पर छक्के के साथ 33 गेंद में अर्धशतक पूरा किया, लेकिन अगली गेंद पर कैच दे बैठे। इशान किशन (नाबाद 20) और हार्दिक पांड्या (10) को बड़े शाट खेलने में परेशानी हुई।

संक्षिप्त स्कोर बोर्ड

भारत : 164/5 (20 ओवर)
- सूर्यकुमार : 50 रन, 34 गेंद, 5 चौके, 2 छक्के
- दुष्मंता चमीरा : 4-0-24-2

श्रीलंका : 126 (18.3 ओवर)
- चरित असलंका : 44 रन, 26 गेंद, 3 चौके, 3 छक्का
- भुवनेश्वर कुमार : 3.3-0-22-4

मैन आफ द मैच : भुवनेश्वर कुमार

राष्ट्रीय फलक

श्रद्धा का महासावन

आत्मतत्व का पूजन ही शिवत्व

शिव ही तत्व हैं। वह ब्रह्म और परमेश्वर भी हैं। आद्य गुरु शंकराचार्य ने शिव के आध्यात्मिक महत्व की विशेष चर्चा की है। उन्होंने बताया है कि चराचर जगत में जीव-जंतु, वनस्पति या मनुष्य, सबका आत्मा शिव है। जीवात्माओं की बुद्धि देवी पार्वती हैं। वहीं इनके प्राण शिव के गण माने जाते हैं। मनुष्य या संसार जगत के सभी जीव जो दिनचर्या करते हैं, वही शिव पूजन है। जीव जो कुछ भी बोलता है, वह शिव की स्तुति करता है। शिव परिवार में गणेश-लक्ष्मी और कार्तिकेय का वर्णन है, जिसमें गणेश जी को विवेक का प्रतिरूप, गणेश की पत्नी रिद्धि-सिद्धि को लक्ष्मी धन और कार्तिकेय को शौर्य का प्रतीक माना गया है। शिव के त्रिनेत्र के वाहक सूर्य, चंद्रमा और अग्नि हैं। सूर्य को प्रकाश व ऊष्मा, चंद्रमा को मन और अग्नि को ऊर्जा का प्रतीक माना गया है। इन सबका पूजन श्रवण नक्षत्र में किया जाता है। श्रवण से श्रावण मास बना है। श्रवण के स्वामी चंद्रमा (सोम) हैं। वही सुधाकर हैं। सोम तत्व के कारण श्रावण मास शिव पूजा के लिए सर्वश्रेष्ठ है। आषाढ़ तक सूर्य के ताप के कारण पृथ्वी तपती रहती है। इस कारण बहुत से जीव, जंतु और वनस्पतियों का लोप हो जाता है। श्रावण मास में सूर्य की किरणें कमजोर हो जाती हैं। इससे वातावरण में नमी रहती है। वर्षा के कारण लुप्त हुए जीव-जंतुओं में नवसंचार उत्पन्न हो जाता है। वह पुनः जीवित हो उठते हैं। पृथ्वी पर हरियाली आ जाती है।



प्रो. गिरिजा शंकर शास्त्री
ज्योतिष शास्त्र विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय

स्कैन करें और पढ़ें 'श्रावण मास' से संबंधित सभी सामग्री

प्रिया मलिक ने विश्व कैडेट कुश्ती चैंपियनशिप में जीता स्वर्ण



पदक जीतने के बाद खुश पहलवान प्रिया मलिक ● ट्विटर

नई दिल्ली, जेएनएन : भारतीय महिला पहलवान प्रिया मलिक ने बुडापेस्ट में विश्व कैडेट कुश्ती चैंपियनशिप में शानदार प्रदर्शन करते हुए रविवार को स्वर्ण पदक अपने नाम किया। चैंपियनशिप के आखिरी दिन प्रिया ने 73 किग्रा भारवर्ग के फाइनल मुकाबले में बेलारूस की पहलवान सेनिया पातापोविक को 5-0 से शिकस्त दी।

प्रिया ने साल 2019 में पुणे में आयोजित हुए खेलो इंडिया में स्वर्ण पदक जीता था।

उन्होंने उसी वर्ष दिल्ली में आयोजित 17वें स्कूल खेलों में भी स्वर्ण जीता था। साल 2020 में आयोजित हुए नेशनल स्कूल गेम्स और नेशनल कैडेट चैंपियनशिप में भी प्रिया ने स्वर्ण पदक जीते थे। प्रिया की जीत पर कई जानी मानी हस्तियों ने उन्हें शुभकामनाएं दीं।



विश्व धरोहर में शामिल हुआ शिव मंदिर... : तेलंगाना स्थित काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा) मंदिर विश्व धरोहर में शामिल किया गया है। रविवार को यूनेस्को ने इसकी घोषणा की। वारंगल स्थित यह शिव मंदिर इकलौता ऐसा मंदिर है, जिसका नाम इसके शिल्पकार रामप्पा के नाम पर रखा गया है। काकतीय वंश के महाराज ने इस मंदिर का निर्माण 13वी सदी में कराया था। इस दौर में बने ज्यादातर मंदिर खंडहर में तब्दील हो चुके हैं, लेकिन कई प्राकृतिक आपदाओं के बाद भी इस मंदिर को कोई खास नुकसान नही पहुंचा है। एएनआइ

10 फीसद बच्चे स्मार्टफोन का पढ़ाई के लिए कर रहे उपयोग

नई दिल्ली, एएनआइ : राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर) की तरफ से कराए गए एक अध्ययन में चौंकाने वाली बातें सामने आई हैं। अध्ययन में कहा गया है कि 59.2 फीसद बच्चे अपने स्मार्टफोन पर मैसेजिंग एप का उपयोग करते हैं, जबकि सिर्फ 10.1 प्रतिशत ही स्मार्टफोन या इंटरनेट सुविधा वाले उपकरणों का इस्तेमाल आनलाइन पढ़ाई या सीखने के लिए करते हैं।

मोबाइल फोन व इंटरनेट सेवा वाली दूसरी डिवाइस के इस्तेमाल का बच्चों पर पड़ने वाले प्रभाव के संबंध में किए गए अध्ययन में पता चला कि सभी आयुवर्ग (8-18 साल) के 30.2 फीसद बच्चों व किशोरों के पास अपना स्मार्टफोन है। 13 साल से ज्यादा उम्र के किशोरों में स्मार्टफोन के इस्तेमाल की प्रवृत्ति काफी तेज हुई है। अध्ययन के अनुसार, 'इससे पता चलता है कि 12-13 साल से ज्यादा उम्र के किशोरों के अभिभावक उन्हें लैपटाप या डेस्कटाप दिलाने के बजाय स्मार्टफोन उपलब्ध कराना ज्यादा बेहतर समझते हैं।' अध्ययन में पता चला कि 72.70 फीसद शिक्षकों को स्मार्टफोन के इस्तेमाल का अनुभव नहीं था।

देशभर में हुए इस अध्ययन में पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण व पूर्वोत्तर क्षेत्र की 15 लोकेशन को चुना गया। करीब एक हजार लोगों की प्रतिक्रियाएं ली गईं।

8.5 लाख लोग चीन में प्रलंयकारी वर्षा और बाढ़ के कारण विस्थापित हुए हैं। 24 हजार से ज्यादा मकान ढह चुके हैं। विभिन्न प्रांतों में 876.6 हजार हेक्टेयर में फसलें बर्बाद हो चुकी हैं।

सदी की भीषण वर्षा और इन-फा तूफान की दस्तक से थमा चीन

▸ वर्षा व बाढ़ से हजारों लोग प्रभावित, सभी उड़ानें व ट्रेनें रद, हजारों पेड़ गिरे

शंघाई, एपीः चीन में सदी की सबसे भीषण वर्षा व बाढ़ के साथ ही तूफान 'इन-फा' ने वाणिज्यिक शहर शंघाई के दक्षिण में रविवार को दस्तक दे दी है। तूफान से पहले सभी एयरलाइनों की उड़ानों, मेट्रो लाइनों और ट्रेन सेवाओं को रद कर दिया गया। साथ ही लोगों से घरों के अंदर ही रहने को कहा गया है। प्रलंयकारी वर्षा और बाढ़ के कारण साढ़े आठ लाख लोग विस्थापित हो चुके हैं। 876.6 हजार हेक्टेयर में फसलें बर्बाद हो चुकी हैं और करीब 24.5 हजार मकान ढह चुके हैं। झेजियांग प्रांत के मौसम विभाग का कहना है कि पिछले पांच हजार सालों में हेनान प्रांत में इतनी वर्षा नहीं हुई है।

ग्लोबल टाइम्स के अनुसार, मध्य चीन में झेंगझोउ शहर में भारी बारिश के बाद मृतकों की संख्या 63 हो गई है, जबकि हेनान प्रांत में पांच लोग लापता बताए जा रहे हैं। इसके अलावा, शांग्झी प्रांत में अनवरत वर्षा व बाढ़ के कारण लियोनान काउंटी में 146 गांवों के करीब 70 हजार लोग प्रभावित हुए हैं। अकेले इस प्रांत में बाढ़ से चीन को 13.9 करोड़ डालर का नुकसान हुआ है। इस बीच, सरकारी टीवी ने राष्ट्रीय मौसम एजेंसी के हवाले से बताया कि तूफान ने शाम साढ़े चार बजे तक झेजियांग प्रांत के झोउशान में दस्तक दी। उसने 250-350 मिलीमीटर (10 से 14 इंच) तक बारिश का अनुमान जताया है। ब्यूरो ने कहा, 'लोगों को बाहर नहीं जाना चाहिए।' इससे पहले तूफान से ताइवान में बारिश हुई और हजारों पेड़ तक उखड़ गए लेकिन किसी के हताहत होने की कोई खबर नहीं है। इस दौरान 155 से लेकर 191 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चली।

सरकारी टीवी ने अपनी वेबसाइट पर कहा कि शंघाई के पुडोंग और होंगक्याओ हवाई अड्डों पर सैकड़ों उड़ानों को रद कर दिया गया तथा सोमवार को और उड़ानें रद होने की आशंका है। शंघाई ने पार्कों और एक मशहूर पर्यटक स्थल को बंद कर दिया है। शंघाई के दक्षिण-पश्चिम हांगझोउ में अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे ने भी उड़ानों को रद कर दिया है। शंघाई के बंदरगाह शहर निंग्बो में ट्रेन सेवाएं निलंबित कर दी गई हैं। इससे पहले झेजियांग प्रांत में स्कूल, बाजार और कारोबारों को बंद करने का आदेश दिया गया।


चीन इन दिनों भारी बारिश और भीषण बाढ़ की चपेट हैं। पश्चिमी राज्य झेजियांग के निंगबो शहर में लोग बाढ़ग्रस्त इलाकों में मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। यहां आवागमन भी प्रभावित हुआ है। एएफपी

'सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यों के बीच की खाई को पाट बेहतर संतुलन की जरूरत'

▸ तिरुमूर्ति ने कहा-भारत जिम्मेदारियां उठाने से नहीं घबराता

संयुक्त राष्ट्र, प्रेट्र : संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि टीएस तिरुमूर्ति ने कहा है कि सुरक्षा परिषद में स्वतंत्र विदेश नीति वाले भारत जैसे विशाल देश का स्वागत हो रहा है। भारतीय राजनयिक ने कहा, सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यों के बीच की खाई को पाटते हुए बेहतर संतुलन बनाए जाने की आवश्यकता है। ज्ञात हो, भारत अगले दो साल के लिए सुरक्षा परिषद का अध्यक्ष बनने जा रहा है।

संयुक्त राष्ट्र में भारत के राजदूत टीएस तिरुमूर्ति ने कहा, भारत जिम्मेदारियां उठाने से नहीं घबराता है। बतौर अध्यक्ष उसकी प्राथमिकता सुरक्षा परिषद के वीटो पावर वाले पांच स्थायी देशों (चीन, फ्रांस, रूस, ब्रिटेन और अमेरिका) के बीच आपसी तनावों व दरारों को कम करना होगा।

भारत को एक अगस्त को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की अस्थायी अध्यक्षता हासिल होगी। संयुक्त राष्ट्र के 15 देशों वाली सुरक्षा परिषद में अस्थायी सदस्य के तौर पर भारत वर्ष 2021-22 के दौरान अध्यक्षता करेगा। दो साल के कार्यकाल में अगले साल दिसंबर में फिर भारत सुरक्षा परिषद की अध्यक्षता करेगा।

तिरुमूर्ति ने एक इंटरव्यू में कहा, हम बहुत ही नाजुक दौर में सुरक्षा परिषद में शामिल हो रहे हैं। जब हम ना सिर्फ कोरोना महामारी की विसंगतियों से जूझ रहे हैं, बल्कि सुरक्षा परिषद के अंदर और बाहर भी कई दरारों और रुकावटों का सामना कर रहे हैं। एकजुट होकर बड़े कदम उठाने होंगे ताकि इन दूरियों को कम किया जा सके। भारत इन खाइयों को पाटने के लिए पुल का काम करेगा। टीएस तिरुमूर्ति से पूछा गया था कि सुरक्षा परिषद के सदस्यों के बीच भारत अपनी अध्यक्षता के दौरान कैसे मतभेदों और विभाजनों को दूर करेगा।

तिरुमूर्ति ने कहा, अफगानिस्तान और म्यांमार में जारी गृह युद्ध को देखते हुए सुरक्षा परिषद गहन वार्ता के जरिये संवेदनशील मसलों को हल करेगी। तालिबान प्रतिबंध समिति की अध्यक्षता करते हुए भारत अपनी अहम भूमिका जारी रखेगा। लीबिया में भी कलह को समाप्त करने का प्रयास करेगा। अफ्रीकी मामले में भी वरीयता में रहेंगे। स्थायी सदस्यों की उम्मीदों पर खरा उतरने की कोशिश होगी।


रखा भारत का पक्ष : टीएस तिरुमूर्ति

न्यूज गैलरी

चीनी अधिकारियों से बात करने आइएसआइ प्रमुख बीजिंग पहुंचे

इस्लामाबाद : पाकिस्तान के खैबर पख्तूनखा में हुए बम विस्फोट के कई दिनों बाद पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आइएसआइ के महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल फैज हमीद शुक्रवार को चीनी अफसरों से बातचीत करने बीजिंग पहुंच गए। जियो न्यूज के अनुसार, दासू में नौ चीनी नागरिकों की मौत के मामले में हमीद चीन अफसरों से रणनीतिक वार्ता करेंगे। पाक के विदेश मंत्री शाह मेहमूद कुरैशी भी दो दिनी यात्रा पर चीन में ही हैं। चीन ने पाकिस्तान से कहा है कि उनके देश में हुआ आतंकी घटना में चीनी नागरिकों के हत्यारों का पता लगाकर उन्हीं जल्द कड़ी सजा दी जानी चाहिए। (एएनआइ)

जासूसी की खबरों के बीच मैक्रों ने की नफ्ताली से बात

यरुशलम : फ्रांस के राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों ने मोरक्को के सुरक्षा बलों द्वारा पेगासस स्पाइवेयर के जरिये उनके मोबाइल फोन की जासूसी करने की खबरों के बीच इजरायल के प्रधानमंत्री नफ्ताली बेनेट से बात की। इजरायल के चैनल 12 ने बताया कि फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रों ने प्रधानमंत्री बेनेट से फोन पर हुई बातचीत के दौरान जासूसी मामले की गंभीरता से जांच करने की अपील की। इजरायल के प्रधानमंत्री ने कहा, यह आरोप उस समय से संबंधित है, जब उन्होंने पदभार नहीं संभाला था, लेकिन इस मामले में प्रभावी निष्कर्ष तक पहुंचा जाएगा। मैक्रों ने फ्रांस में पेगासस के दुरुपयोग की खबरें सामने आने के बाद गुरुवार को राष्ट्रीय सुरक्षा पर तत्काल बैठक की थी। (प्रेट्र)

तालिबान के युद्ध अपराधों की जांच कर रहा आइसीसी

बड़ा कदम ▸ ह्यूमन राइट्स वाच की शिकायत पर सक्रिय हुआ अंतरराष्ट्रीय न्यायालय

महिलाओं से जबरन शादी कर रहे तालिबान आतंकी

काबुल, आइएएनएसः अफगानिस्तान में तालिबान के कत्लेआम को मानवाधिकार संगठन द्वारा उठाने के बाद अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (आइसीसी) ने जांच शुरू कर दी है। तालिबान ने विशेष तौर पर कंधार प्रांत के पाकिस्तानी सीमा से लगे स्पिन बोल्डक शहर में निर्दोष नागरिकों, महिलाओं व बच्चों की हत्या की है। यहां प्रांतीय अधिकारियों के रिश्तेदार, सेना और पुलिस के कर्मचारियों को पहले हिरासत में लिया, फिर गोली से उड़ा दिया। कुछ स्थानों पर तो सिर कलम करने की घटनाएं सामने आई हैं। 8 और 16 जुलाई को इस क्षेत्र में संघर्ष के दौरान तालिबान ने सरकार और सेना के जासूसों की खोज की और तमाम लोगों को मार डाला।

ह्यूमन राइट वाच की एसोसिएट डायरेक्टर (एशिया) पेट्रीशिया गोसमैन ने कहा है कि तालिबान आतंकियों ने यहां तीन सौ लोगों को हिरासत में लिया और अज्ञात स्थान पर ले गए। अब इस बात की आशंका है कि तालिबान यहां और भी ज्यादा खून-खराबा कर सकता है। हालांकि तालिबान नेताओं ने मानवाधिकार उल्लंघन से इन्कार किया है, लेकिन जमीनी स्तर पर स्थितियां बता रही हैं कि निर्दोष नागरिकों पर जुल्म किया जा रहा है।

अब अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (आइसीसी) ने यहां युद्ध अपराधों की जांच शुरू कर दी है। इन मामलों में वे तालिबानी कंमाडर भी दोषी माने जाएंगे, जिनके नेतृत्व में निर्दोष लोगों पर अत्याचार हो रहा है। पेट्रीशिया गोशमैन ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र, अमेरिका व अन्य देशों को हत्या का यह सिलसिला बंद कराने के लिए तालिबान को सख्त संदेश देना चाहिए। गोशमैन ने कहा, कंधार प्रांत के स्पिन बोल्डक में सौ शव मिले हैं, जबकि गायब तीन सौ लोगों का अभी कोई पता नहीं चला है।

समाचार एजेंसी एएनआइ के अनुसार अफगानिस्तान में अमेरिका और नाटो देशों की सेनाओं की वापसी के बाद तालिबान ने हमले तेज कर दिए हैं। जिलों पर कब्जा करने के बाद तालिबान के काले कानून फिर शुरू हो गए हैं। तालिबान आतंकी अफगान परिवारों की लड़कियों से जबरन शादी कर रहे हैं। तालिबान की ओर से पुरुषों के लिए मस्जिद में प्रतिदिन नमाज पढ़ने, टोपी लगाने और दाढ़ी बढ़ाने का फरमान जारी कर दिया गया है। इतना ही नहीं महिलाओं पर भी 2001 से पहले लागू रहे शरई कानून थोपना शुरू कर दिया गया है। हालांकि तालिबान के प्रवक्ता सुहैल शाहीन ने दो दिन पहले कहा था कि उदारवादी रवैया अपनाया जाएगा। महिलाओं को काम करने की स्वतंत्रता होगी। हां घर से बाहर निकलते समय उन्हें बुर्का जरूर पहनना होगा।


बड़ी संख्या में अफगानी बनवा रहे पासपोर्ट : अमेरिकी सेना की अफगानिस्तान से वापसी और कई जिलों में कट्टरपंथी तालिबानी के कब्जे से देश में हालात तेजी से बदल रहे हैं। यहां काफी संख्या ऐसे लोगों की है, जो खुद को असुरक्षित मानते हैं और किसी अन्य देश में जाकर अपना नया ठौर-ठिकाना तलाश करना चाहते हैं। इसलिए यहां पासपोर्ट बनवाने वालों की संख्या में अचानक इजाफा हुआ है। राजधानी काबुल स्थिति पासपोर्ट कार्यालय के बाहर रविवार को लगी लंबी कतारें इसका प्रमाण हैं। एएफपी

बल्ख प्रांत में अफगान सेना ने मारे 81 तालिबान आतंकी

एएनआइ के अनुसार, अफगान सेना ने हवाई हमलों में हेलिकाप्टर की मदद लेना भी शुरू कर दिया है। बल्ख प्रांत में तालिबान के ठिकानों पर हेलिकाप्टर से ताबड़तोड़ फायरिंग की गई। इस आपरेशन में तालिबान के 81 आतंकी मारे गए। हवाई हमले में आतंकियों के वाहन और गोलाबारूद पूरी तरह से नष्ट कर दिए गए। ज्ञात हो कि तालिबान ने दो सौ से ज्यादा जिलों पर कब्जा कर लिया है। इनको मुक्त कराने के लिए ही अफगान सेना ने तालिबान को खदेड़ने की रणनीति पर काम शुरू कर दिया है।

आक्रामक तालिबान को रोके अफगान सेना : अमेरिका

रायटर के अनुसार, अफगानिस्तान में तेजी से काबिज हो रहे तालिबान के संबंध में अमेरिका के रक्षा मंत्री लायड आस्टिन ने चिंता जताई है। अलास्का में पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने कहा कि अफगान सेना के लिए जरूरी है कि वह तालिबान के जिलों पर कब्जे की तेज गति को कार्रवाई कर धीमा करे। आतंकियों पर योजनाबद्ध तरीके से अपने हमलों को अंजाम दे। उन्होंने कहा कि अफगान सेना युद्ध की कार्ययोजना को प्रभावी बना रही है।

अफगानिस्तान में चीन, पाक व तुर्की की तिकड़ी तेजी से हो रही सक्रिय

▸ इजरायली मीडिया ने कहा, पाक का असली चेहरा आया सामने

▸ तालिबान का साथ देने के लिए अमेरिका से किया किनारा

तेलअवीव, एएनआइ : अमेरिका सेना की अफगानिस्तान से तेजी से हो रही वापसी के बीच यहां अब अपने हितों के लिए चीन, पाकिस्तान और तुर्की की तिकड़ी तेजी से सक्रिय हो रही है।

तालिबान लड़ाकों के विभिन्न प्रांतों में तेजी से काबिज होने के बाद पाकिस्तान ने भी रंग बदलना शुरू कर दिया है। वह अमेरिका और पश्चिमी देशों का सहयोगी देश बन शांति प्रयासों का नाटक कर रहा था, अब उसका असली चेहरा सामने आ गया है।

यह रिपोर्ट टाइम्स आफ इजरायल में प्रकाशित हुई है। रिपोर्ट के अनुसार वर्तमान में पाकिस्तान को खराब आर्थिक स्थिति में अमेरिकी सुरक्षा कवच की जरूरत है, ऐसी स्थिति में भी वह चीन और तुर्की के साथ ही आगे बढ़ रहा है।

इस रिपोर्ट में विदेशी मामलों के जानकार फेबियन बाशर्ट ने कहा है कि पाक ने अपनी नीति में परिवर्तन इस साल जून से ही करना शुरू कर दिया था, जब उसने कहा था कि वह अमेरिका को सैन्य अड्डे के लिए अपनी भूमि नहीं देगा। हाल में तालिबान ने चीन की उन चिंताओं को भी कम कर दिया है, जिसमें उसका मानना है कि तालिबानी शासन में अफगानिस्तान उइगरों के संगठन पूर्वी तुर्किस्तान इस्लामिक मूवमेंट (ईटीआइएम) का केंद्र बन जाएगा। यह संगठन शिनजियांग में सक्रिय है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि तुर्की भी इस तिकड़ी में शामिल होकर अपना लाभ देख रहा है, उसे लगता है कि वह मुस्लिम देशों का नेतृत्व कर सकेगा। तुर्की पहले से ही अपने देश में उइगर मुस्लिमों को निशाना बनाकर चीन का प्रिय बन गया है। चीन भी अमेरिकी सेना के अफगानिस्तान से जाने से आई शून्यता को अपनी मौजूदगी से भरना चाहता है। इन तीनों ही देशों की अफगानिस्तान की खनिज संपदा पर भी नजर बनी हुई है।

इधर जम्मू-कश्मीर के स्तंभकार फारूक गादरबली ने ट्वीट करके कहा है कि चीन पाकिस्तान और तालिबान का सहयोग करके इस क्षेत्र की शांति को पूरी तरह खत्म करना चाहता है। गादरबली पीस एंड जस्टिस फोरम के संस्थापक भी हैं। ध्यान रहे कई अन्य पत्रकार भी ऐसी ही आशंका जाहिर कर चुके हैं।

देउबा सरकार में फूट डालने की कोशिश कर रहे विरोधी

काठमांडू, प्रेट्र : नेपाल में नवगठित शेर बहादुर देउबा सरकार की राह में रोड़े बिछने शुरु हो गए हैं। नेपाली कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी केंद्र) के अध्यक्ष पुष्प कमल दहल प्रचंड ने कहा है कि विपक्ष सत्तारूढ़ गठबंधन में फूट डालने की कोशिश कर रहा है लेकिन वह सफल नहीं होगा। पांच दलों का सत्तारूढ़ गठबंधन एकजुट है और नेपाल के विकास में जुटा हुआ है।

प्रचंड ने कहा, विरोधी मिलेनियम चैलेंज कार्पोरेशन या हिंद-प्रशांत रणनीति या न्याय व्यवस्था को लेकर सत्तारूढ़ गठबंधन में फूट डालने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने यह बात ओली की पार्टी नेपाली कम्युनिस्ट पार्टी (यूएमएल) के विद्रोही नेता माधव कुमार नेपाल से मुलाकात के बाद कही। नेपाल अब सत्तारूढ़ गठबंधन के साथ हैं। प्रचंड ने कहा, पांच दलों का सत्तारूढ़ गठबंधन पूरी तरह से एकजुट है। इस गठबंधन की सरकार बनने से प्रधानमंत्री के रूप में केपी शर्मा ओली की मनमानी रुकी है। इसलिए विरोधी अब सरकार की खामियों को तलाशने और उसे कमजोर करने में लगे हुए हैं।

गुलाम कश्मीर में मतदान के दौरान हिंसा, दो की मौत

▸ मारे गए कार्यकर्ता इमरान खान की पार्टी के, भारत ने गिलगिट-बाल्टिस्तान में चुनाव पर विरोध जताया

इस्लामाबाद, प्रेट्रः गुलाम कश्मीर में विधानसभा गठन के लिए रविवार को मतदान हुआ। इस दौरान अनियमितता बरते जाने के आरोप लगे और हिंसा भी हुई। हिंसक झड़पों में प्रधानमंत्री इमरान खान की तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी के दो कार्यकर्ता मारे गए हैं। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी ने हिंसा की घटनाओं के लिए चुनाव आयोग से कार्रवाई की मांग की है।

विधानसभा की 45 सीटों के लिए मतदान की शुरुआत सुबह आठ बजे हुई और शाम पांच बजे तक जारी रहा। मतदान के बाद मतगणना शुरू हो जाएगी। उम्मीद है कि सोमवार को सभी सीटों के परिणाम आ जाएंगे। भारत ने गिलगिट-बाल्टिस्तान इलाके में चुनाव कराने के पाकिस्तान के कदम की निंदा की है। कहा है कि सेना के कब्जे वाले इस इलाके की स्थिति में बदलाव लाने वाले किसी कदम का कोई कानूनी आधार नहीं होगा। गुलाम कश्मीर की विधानसभा में कुल 53 सदस्य होते हैं। 45 सदस्यों को जनता चुनकर भेजती है जबकि पांच सीटें महिलाओं और तीन सीटें तकनीक विशेषज्ञों के लिए होती हैं। इन्हें सरकार नामित करती है।

इस चुनाव में पाकिस्तान के तीनों बड़े राजनीतिक दलों के बीच मुख्य मुकाबला है। सत्तारूढ़ तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी, नवाज शरीफ की पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज और बिलावल भुट्टो की पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी गुलाम कश्मीर की सत्ता पर काबिज होने की कोशिश में हैं। कोटली जिले के चारहोई इलाके में मतदान केंद्र के बाहर हुई हिंसा में इमरान की पार्टी के दो कार्यकर्ता मारे गए हैं। उनकी हत्या का आरोप बिलावल भुट्टो की पीपीपी पर लगा है। एक अन्य घटना में झेलम घाटी में पांच पुलिसकर्मी घायल हुए हैं। उन पर जमात-ए-इस्लामी समर्थकों ने लाठी-डंडों से हमला किया था। कुछ अन्य स्थानों पर भी हिंसक झड़पों के चलते मतदान बाधित होने की खबर है।

सरकार के बाद अब न्यायपालिका को कब्जे में लेना चाहती है पाक सेना

इस्लामाबाद, एएनआइ : पाकिस्तान में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सेना का ही नियंत्रण रहा है। मौजूदा स्थिति में भी सेना ही अफगानिस्तान समस्या से लेकर भारत में आतंकवाद फैलाने तक सभी फैसले ले रही है। अब सेना न्यायपालिका पर भी पूर्ण नियंत्रण की कोशिश में लगी है। ताइवानी डिजिटल पोर्टल में बिलाल बलूच की रिपोर्ट प्रकाशित हुई है, जिसमें लिखा है कि सेना देश के सभी उच्च न्यायालयों में अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर जजों की नियुक्ति कराने में लगी हुई है। सेना के उच्चाधिकारी ऐसे जजों की नियुक्ति करा रहे हैं, जो सरकार और राजनेताओं के प्रदर्शन पर अपनी तीखी टिप्पणियां करते हैं। इसी के साथ सेना दबाव बनाने की रणनीति पर काम शुरू कर देती है। ताइवानी मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, लाहौर उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश एजाज अहमद चौधरी ने एक साक्षात्कार में कहा था कि पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आइएसआइ के एक जनरल ने उनसे जजों की नियुक्ति के संबंध में संपर्क किया था।

टोक्यो ओलिंपिक में शामिल दो एथलीट समेत 10 लोग और मिले कोरोना संक्रमित

टोक्यो, रायटर : जापान की राजधानी टोक्यो में चल रहे ओलिंपिक खेलों के दौरान खिलाड़ियों में कोरोना संक्रमण के खतरे बने हुए हैं। रविवार को ओलिंपिक में शामिल दो एथलीट सहित दस लोग कोरोना संक्रमित मिले हैं।

संक्रमित होने वालों में छह ओलिंपिक पर्सनल, एक मीडिया सदस्य, एक कर्मचारी शामिल है। अब तक खेलों में शामिल 132 लोग कोरोना संक्रमित मिल चुके हैं। राजधानी टोक्यो में पिछले 24 घंटे के दौरान 1763 नए मरीज मिले हैं। कोरोना संक्रमण की ताजा स्थिति को लेकर जापान के प्रधानमंत्री योशिहिदे सुगा से टोक्यो की गवर्नर युरिको कोइके ने मुलाकात की। ओलिंपिक खेलों को कोरोना संक्रमण से बचाए रखने के लिए शहर में इमरजेंसी लगी हुई है।

इधर जर्मनी की चांसलर एंजेला मर्केल चेतावनी दी है कि अगले कुछ हफ्तों में देश को कोरोना की भयावह स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। यहां सितंबर के अंतिम सप्ताह तक हर रोज एक लाख नए मरीज मिलने की आशंका है। दो माह तक मरीजों में कमी आने के बाद जुलाई से डेल्टा वैरिएंट के कारण संक्रमण तेजी से फैल रहा है। जर्मनी की चांसलर ने कहा है कि कोरोना संक्रमण की यही गति रही तो वैक्सीन न लगवाने वालों पर कड़ी पाबंदी लगाई जाएगी।

आस्ट्रेलिया में लाकडाउन के विरोध में प्रदर्शन बढ़ रहे हैं। ऐसी स्थिति में कोरोना संक्रमण भी तेजी से बढ़ रहा है। यहां अब लंबे समय तक लाकडाउन बने रहने की संभावना है।

▸ अब तक यहां 132 लोग हो चुके हैं कोरोना संक्रमित

▸ जर्मनी में तेजी से बढ़ रही मरीजों की संख्या


विश्वभर में कोरोना संक्रमितों की संख्या 19.31 करोड़ हो गई है। संक्रमण के मामले में फ्रांस चौथे नंबर पर है। राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने रविवार को फ्रेंच पोलिनेशिया में अस्पताल का दौरा कर स्थिति का जायजा लिया। एएफपी

पाकिस्तान : बिना वैक्सीन लगाए लोगों पर घरेलू उड़ान में प्रतिबंध लगा दिया गया है।

मलेशिया : एक दिन में 17 हजार से ज्यादा मामले सामने आ रहे हैं।

रूस : पिछले 24 घंटे के दौरान 24072 नए मरीज मिले हैं।

भारतवंशी यूसुफ अली अबूधाबी के सर्वोच्च कारोबारी बोर्ड के उपाध्यक्ष बने

दुबई, प्रेट्र : अबूधाबी के क्राउन प्रिंस शेख मुहम्मद बिन जायद अल नहयान ने प्रख्यात भारतीय उद्योगपति यूसुफ अली एमए को सरकार के सर्वोच्च संगठन में उपाध्यक्ष नियुक्त किया है। यह संगठन यूएई के सभी कारोबारों की निगरानी करता है। 29 सदस्यीय इस बोर्ड में शामिल किए जाने वाले वह अकेले भारतीय हैं।

65 वर्षीय यूसुफ अली अबूधाबी स्थित लुलु ग्रुप के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक हैं। यह कंपनी कई देशों में हाइपमार्केट और रिटेल कंपनियों का संचालन करती है। क्राउन प्रिंस शेख मुहम्मद ने अबूधाबी चैम्बर आफ कामर्स एंड इंडस्ट्री (एडीसीसीआइ) के निदेशकों को एक नए बोर्ड के गठन का प्रस्ताव जारी किया था। एडीसीसीआइ के अध्यक्ष अब्दुल्लाह मुहम्मद अल मजरोई और यूसुफ अली उपाध्यक्ष नियुक्त किए गए हैं।

एडीसीसीआइ आबूधाबी में स्थापित सभी कारोबारों का सर्वोच्च संगठन है। यह क्षेत्र का सबसे रईस और प्रभुत्वशाली संगठन है। यहां के सभी प्रभावी और बड़े कारोबारों को एडीसीसीआइ से ही लाइसेंस लेना होता है। अमीरात और सीईओ वाले इस बोर्ड में यूसुफ अली अकेले भारतीय हैं। उन्होंने अपनी नियुक्ति को अपने जीवन का सबसे गौरवशाली क्षण बताया है। साथ ही क्राउन प्रिंस के प्रति गहरा आभार जताया है।


यूसुफ अली। जागरण आर्काइव

ब्रिटिश सेना में महिला कर्मियों के साथ हैरान करने वाला भेदभाव

▸ तंग करना और उत्पीड़न है आम बात

लंदन, प्रेट्र : ब्रिटिश सेना में महिलाओं के साथ भेदभाव के बारे में वहां की संसदीय समिति ने हैरान करने वाली रिपोर्ट दी है। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि 64 प्रतिशत अवकाश प्राप्त महिला कर्मियों और 58 प्रतिशत कार्यरत महिला कर्मियों ने तंग किए जाने, उत्पीड़न और भेदभाव की शिकायत की है।

हाउस ऑफ कामंस की रक्षा मामलों की महिलाओं से संबंधित उपसमिति ने यह रिपोर्ट दी है। इसमें सुरक्षा बलों में महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण किया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि रक्षा मंत्रालय और सेना अपनी महिला कर्मियों के सम्मान की सुरक्षा कर पाने में विफल रहे हैं। इससे महिला सैन्यकर्मी अपनी पूरी क्षमता से जिम्मेदारी को नहीं निभा पा रही हैं। संसदीय समिति के इस सर्वे में महिलाओं ने सेना की नौकरी को करियर के रूप में बेहतर माना लेकिन 84 प्रतिशत ने यह भी माना कि इसमें पुरुष सहकर्मियों की ओर से उन्हें चुनौतीपूर्ण स्थितियों का सामना करना पड़ता है। सेना में उनके साथ भेदभाव होता है, उनके साथ गैर बराबरी का व्यवहार होता है।

उपसमिति की प्रमुख कंजरवेटिव पार्टी की सांसद सराह आर्थटन ने कहा, महिलाएं हमारी सैन्य सफलताओं और देश के सुरक्षा तंत्र का अभिन्न हिस्सा हैं। लेकिन उनसे बातचीत कर पता चलता है कि पुरुष सहकर्मी उनकी मुश्किलें बढ़ाते हैं। महिला कर्मियों को प्रोन्नति में रुकावटों का सामना करना पड़ता है। उनके साथ अनुचित व्यवहार किया जाता है। उन्हें परिवार और बच्चों की ओर से भी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

अवकाशप्राप्त महिला कर्मियों से बात करने पर उनके द्वारा झेली गई मुश्किलों का पता चलता है। उपसमिति ने उनकी समस्याओं के बारे में सुना-जाना, तो पता चलता है कि इन पूर्व महिला कर्मियों ने कितनी मुश्किलें झेली होंगी, वर्तमान कर्मी भी ऐसी ही मुश्किलें झेल रही हैं। उपसमिति ने महिला सैन्यकर्मियों की मुश्किलें दूर करने के लिए सरकार से अविलंब कदम उठाने की सिफारिश की है।


ब्रिटिश फौज की महिलाकर्मी। फाइल

अमेरिका में फिर सभी के लिए जरूरी हो सकता है मास्क

विलमिंगटन, एपी : अमेरिका के शीर्ष संक्रामक रोग विशेषज्ञ एंथनी फासी ने रविवार को कहा, कोरोना संक्रमण के मामले में उनका देश गलत दिशा की तरफ बढ़ रहा है। बिना टीकाकरण वाले अमेरिकियों और अत्यधिक संक्रामक डेल्टा वैरिएंट के चलते अमेरिका में फिर कोरोना की विकट स्थिति पैदा होने लगी है।

एक टीवी चैनल के साथ बातचीत में फासी ने कहा, 'हम गलत दिशा में बढ़ रहे हैं और मैं बहुत निराश हूं।' सरकार के शीर्ष स्वास्थ्य अधिकारी फिर से सभी लोगों के लिए मास्क की सिफारिश करने पर गंभीरता से विचार कर रहे हैं। इनमें वैक्सीन की दोनों डोज लगवा चुके लोग भी शामिल हैं। राष्ट्रपति जो बाइडन के मुख्य चिकित्सा सलाहकार फासी ने कहा कि मास्क से जुड़े दिशानिर्देशों पर चर्चा के दौरान वह भी मौजूद थे। लास एंजिल्स काउंटी जैसे कुछ क्षेत्रों में, जहां संक्रमण तेजी से फैल रहा है, वहां सभी लोगों से मास्क पहनने का आग्रह किया जाने लगा है।

उन्होंने कहा, रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र (सीडीसी) के अनुकूल स्थानीय नियमों में सार्वजनिक स्थलों पर मास्क पहनने की आवश्यकता को खत्म कर दिया गया था। सीडीसी के आंकड़ों के मुताबिक अमेरिका में अभी तक 16.3 करोड़ लोगों यानी 49 फीसद पात्र लोगों का टीकाकरण हो गया है। उन्होंने कहा, कि बिना टीकाकरण वाले लोगों के चलते ये हालात पैदा हुए हैं।

कुछ लोगों को पड़ सकती है बूस्टर डोज की जरूरत : संक्रामक रोग विशेषज्ञ एंथनी फासी ने कहा कि कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोगों को कोरोना वैक्सीन की बूस्टर डोज देने की जरूरत पड़ सकती है, क्योंकि डेल्टा वैरिएंट के मामले बढ़ रहे हैं। ऐसे लोगों में अंग प्रत्यारोपण करना वाले मरीज, कैंसर पीड़ित शामिल हैं।

कुछ जीतीं कुछ हारीं

रियो ओलिंपिक की रजत पदक विजेता भारतीय स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधू, छह बार की विश्व चैंपियन दिग्गज मुक्केबाज एमसी मेरी कोम और टेबल टेनिस की सनसनी मनिका बत्रा के रूप में भारत की महिला तिकड़ी ने रविवार को यहां टोक्यो ओलिंपिक में अपने-अपने मुकाबले जीतकर खेलों के इस महाकुंभ में शानदार आगाज किया। स्टार खिलाड़ी मनिका बत्रा शुरुआती दो गेम गंवाने के बाद शानदार वापसी करते हुए टूर्नामेंट में आगे बढ़ीं तो सिंधू और मेरी कोम ने एकतरफा अंदाज में अपने-अपने मुकाबले जीते। वहीं, अर्जुन लाल जाट व अरविंद सिंह नौकायन में सेमीफाइनल में पहुंच गए।

7 वें नंबर की विश्व की खिलाड़ी पीवी सिंधू टोक्यो ओलिंपिक में अपने स्वर्ण पदक के अभियान में अब अगले दौर में हांगकांग की चियुंग एंगान यि से भिड़ेंगी जो विश्व रैंकिंग में 34वें स्थान पर हैं। भारतीय खिलाड़ी इस मुकाबले में जीत की दावेदार हैं

पीवी सिंधू दूसरे दौर में तो मेरी कोम प्री क्वार्टर फाइनल में पहुंचीं, टेबल टेनिस में मनिका बत्रा तीसरे दौर में



मनिका तीसरे दौर में

टोक्यो, प्रेट्र : विश्व रैंकिंग में 62वें नंबर की मनिका बत्रा ने यूक्रेन की 20वीं वरीयता प्राप्त मारग्रेट पेसोत्सका को 57 मिनट में 4-3 से (4-11, 4-11, 11-7, 12-10, 8-11, 11-5, 11-7) से हराया। वह तीसरे दौर में सोमवार को आस्ट्रिया की सोफिया पोलकानोवा से भिड़ेंगी। मनिका जब भी पिछड़ीं तब उन्होंने लंबी रैलियां खेली और अपने शाट पर शानदार नियंत्रण बनाए रखा। मनिका को शुरू में लय पाने में परेशानी हुई। यूक्रेनी खिलाड़ी ने आसानी से पहले दो गेम अपने नाम किए। मनिका ने अगले दोनों गेम जीतकर बराबरी पाई तो मारग्रेट ने पांचवां गेम जीतकर फिर बढ़त बनाई। इसके बाद मनिका ने अगले दोनों गेम अपने नाम किए। पुरुष सिंगल्स में जी साथियान हांगकांग के लाम सियू हांग से 11-7, 7-11, 4-11, 5-11, 11-9, 12-10, 11-6 से हार गए।

अर्जुन और अरविंद सेमीफाइनल में

टोक्यो: भारत के अर्जुन लाल जाट व अरविंद सिंह ने रविवार को यहां पुरुषों की नौकायन लाइटवेट डबल स्कल्स स्पर्धा के रेपचेज दौर में तीसरे स्थान पर रहकर सेमीफाइनल में जगह बनाई। ओलिंपिक की नौकायान स्पर्धा के सेमीफाइनल में पहुंचने वाली यह पहली भारतीय जोड़ी है। भारतीय जोड़ी ने 6:51.36 का समय निकाला। सेमीफाइनल्स 28 जुलाई को होंगे। इस जोड़ी ने कहा, 'हमारे कोच ने कहा था कि हमें भारत के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान हासिल करने की कोशिश करनी है। हमें अपना सर्वश्रेष्ठ करना था।'

62 वें नंबर की मनिका ने यूक्रेन की मारग्रेट पेसोत्सका को 57 मिनट में हरा दिया

भारत की उम्मीद पीवी सिंधू ने दूसरे पदक की ओर बढ़ाया कदम

टोक्यो, प्रेट्र : विश्व चैंपियन पीवी सिंधू ने महिला सिंगल्स वर्ग में इजरायल की सेनिया पोलिकारपोवा पर सीधे गेमों में आसान जीत दर्ज की। छठी वरीयता प्राप्त सिंधू ने 58वीं रैंकिंग की प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ 21-7, 21-10 से 28 मिनट में यह मुकाबला जीता। दुनिया की सातवें नंबर की खिलाड़ी सिंधू का सामना अब हांगकांग की चियुंग एंगान यि से होगा जो विश्व रैंकिंग में 34वें स्थान पर हैं। जीत के बाद सिंधू ने कहा, 'यह मैच आसान था लेकिन मैने इसे हलके में नहीं लिया। हर समय फोकस बनाए रखना और हर मैच में हर अंक हासिल करने की कोशिश अहम होती है। यह आसान मैच था लेकिन, मैने सुनिश्चित किया कि हम कुछ रेलियां लगाए और मुझे कोर्ट पर खुद को ढालने में मदद मिले।' सिंधू ने आक्रामक शुरुआत की लेकिन, एक समय 3-4 से पीछे चली गईं। उन्होंने हालांकि तुरंत वापसी करते हुए सेनिया को गलती करने पर मजबूर किया और ब्रेक तक 11-5 की बढ़त बना ली। इसके बाद उन्होंने लगातार 13 अंक बनाए। अपने चिर परिचित सीधे और क्रास कोर्ट स्मैश का पूरा इस्तेमाल करके उन्होंने सेनिया को दबाव से निकलने का मौका ही नहीं दिया। सेनिया के एक शाट चूकने के साथ ही सिंधू ने पहला गेम जीत लिया। दूसरे गेम में सिंधू ने 9-3 की बढ़त बना ली और ब्रेक के समय सात अंक के फायदे पर थी। ब्रेक के बाद सेनिया की गलतियों का सिंधू ने पूरा फायदा उठाया। अपनी निचली रैंकिंग वाली प्रतिद्वंद्वी के बारे में उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है कि आप अपने सारे स्ट्रोक्स खेलें और उनकी आदत डाल लें।'

58 वी रैंकिंग की इजरायली प्रतिद्वंद्वी को 21-7, 21-10 से 28 मिनट में आसानी से हराया

जिमनास्ट प्रणति फाइनल में जगह बनाने से चूकीं

टोक्यो, प्रेट्र : टोक्यो ओलिंपिक में भारत की अकेली जिमनास्ट प्रणति नायक कलात्मक जिमनास्टिक स्पर्धा के आल राउंड फाइनल्स में जगह बनाने में असफल रहीं।

पश्चिम बंगाल की 26 वर्ष की नायक ने चार वर्गों (फ्लोर एक्सरसाइज, वाल्ट, अनइवन बार और बैलेंस बीम) में कुल 42.565 अंक बनाए। वह दूसरे सब डिविजन के बाद 29वें स्थान पर रही। पांच सब डिविजन से शीर्ष-24 जिमनास्ट आल राउंड फाइनल में जगह बनाते हैं जो 29 जुलाई को होगा। हर वर्ग के शीर्ष आठ जिमनास्ट व्यक्तिगत स्पर्धा के फाइनल में खेलेंगे जो एक से तीन अगस्त तक होगी। नायक सभी में निचले हाफ में रही। उन्होंने फ्लोर में 10.633 स्कोर किया, जबकि वाल्ट में उनका स्कोर 13.466 रहा। अनइवन बार में 3.033 और बैलेंस बीम में स्कोर 9.433 रहा।

26 साल की भारतीय खिलाड़ी प्रणति नायक ने चार वर्गों में कुल 42.565 अंक बनाए

पिस्टल में तकनीकी खराबी की वजह से हारीं भाकर

टोक्यो: पिस्टल में तकनीकी खराबी के कारण 10 मीटर एयर पिस्टल व्यक्तिगत स्पर्धा के क्वालीफिकेशन में मनु भाकर के 20 मिनट बर्बाद हुए जिससे वह मामूली अंतर से फाइनल्स में जगह बनाने से चूक गईं। जब उनकी पिस्टल में खराबी आई तब उन्हें 55 मिनट में 44 शाट लेने थे। समस्या से उबरने के बाद वह लौटीं तो उन्हें 36 मिनट में ये शाट लेने पड़े जो किसी भी स्तर पर काफी मुश्किल था। उसके बाद चार या पांच मिनट अभ्यास में यह जांचने में लग गए कि पिस्टल ठीक से काम कर रही है या नहीं।

मनु अपने कोच व जूरी के एक सदस्य के साथ पिस्टल ठीक कराने गईं क्योंकि सुरक्षा कारणों से रेंज के पास यह नहीं किया जा सकता। इससे पहले भी म्यूनिख में 2019 विश्व कप में मनु को तकनीकी खराबी का सामना करना पड़ा था।

यहां मनु ने पहली सीरीज में 98 के स्कोर के बाद 95, 94 और 95 का स्कोर किया और शीर्ष-10 से बाहर हो गईं। ओलिंपिक में पहली बार भाग ले रही एक अन्य निशानेबाज यशस्विनी सिंह देसवाल ने खराब शुरुआत से उबरकर 574 का स्कोर बनाया और वह 13वें स्थान पर रहीं। पुरुषों की 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में दीपक कुमार और दिव्यांश सिंह पंवार क्रमशः 26वें और 32वें स्थान पर रहकर क्वालीफिकेशन से ही बाहर हो गए। दीपक ने आखिर में छह सीरीज में 624.7 अंक बनाए।

अंगद 11वें स्थान पर: स्कीट निशानेबाज अंगद वीर सिंह बाजवा रविवार को यहां टोक्यो ओलिंपिक की पुरुष स्कीट क्वालीफिकेशन के तीसरे राउंड के अंत में 11वें स्थान पर रहे। हमवतन मैराज खान ने 71 अंक जुटाए जिससे वह 30 निशानेबाजों में 25वें स्थान पर थे।

15 साल छोटी डोमेनिका गणराज्य की मिगुएलिना हर्नांडिज को 4-1 से शिकस्त दी

छह बार की विश्व चैंपियन मेरी कोम प्री-क्वार्टर फाइनल में पहुंचीं

टोक्यो, प्रेट्र : एम सी मेरी कोम (51 किग्रा) ने शुरुआती दौर में डोमेनिका गणराज्य की मिगुएलिना हर्नांडिज गार्सिया पर शानदार जीत से प्री-क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया लेकिन, मनीष कौशिक (63 किग्रा) का रविवार को यहां खेलों में पदार्पण निराशाजनक रहा और वह पहले दौर में हार गए। लंदन ओलिंपिक 2012 की कांस्य पदक विजेता मेरी कोम ने अपने से 15 साल जूनियर और पैन अमेरिकी खेलों की कांस्य पदक विजेता को 4-1 से शिकस्त दी। मेरी कोम रविवार को रिंग में उतरने वाली पहली भारतीय मुक्केबाज रहीं और यह मुकाबला भी शुरू से काफी रोमांचक रहा जिसमें 38 वर्षीय मणिपुरी मुक्केबाज ने कुछ शानदार तकनीक दिखाई और गार्सिया की कड़ी चुनौती को पस्त किया।

मेरी कोम ने जीत के बाद कहा, 'महामारी के कारण पिछले दो वर्ष काफी दर्दनाक रहे हैं जब सब कुछ बंद था। हम सभी एक ही तरह की समस्याओं से जूझ रहे हैं और प्रत्येक खिलाड़ी को घर पर ट्रेनिंग करने पड़ी लेकिन, हम मुक्केबाजों को ट्रेनिंग जोड़ीदार की जरूरत होती है।' पहले राउंड में मेरी कोम ने अपनी प्रतिद्वंद्वी को परखने का समय लिया लेकिन, इसके बाद आक्रामकता दिखाई। गार्सिया हालांकि दूसरे राउंड में कुछ दमदार मुक्कों से कुछ अंक जुटाने में सफल रहीं। मेरी कोम ने अपने दमदार राइट हुक से पूरे मुकाबले के दौरान दबदबा बनाए रखा। मेरी काम अब अगले दौर के मुकाबले में कोलंबिया की तीसरी वरीयता प्राप्त इंग्रिट वालेंसिया से भिड़ेंगी जो 2016 रियो ओलिंपिक की कांस्य पदक विजेता हैं। मेरी कोम दो बार इस कोलंबियाई मुक्केबाज से भिड़ी हैं और दोनों में जीती हैं।

वहीं, राष्ट्रमंडल खेलों के रजत पदक विजेता और विश्व चैंपियनशिप के कांस्य पदक विजेता मनीष को ब्रिटेन के ल्यूक मैककोरमैक से रोमांचक मुकाबले में 1-4 से हार का सामना करना पड़ा।

2016 रियो ओलिंपिक की कांस्य पदक विजेता इंग्रिट से होगा अगले दौर का मुकाबला

माना पटेल सेमीफाइनल में जगह बनाने में नाकाम

टोक्यो : भारतीय तैराक माना पटेल महिला 100 मीटर बैकस्ट्रोक स्पर्धा में अपनी हीट में दूसरे स्थान पर रहते हुए सेमीफाइनल में जगह बनाने में नाकाम रहीं। अपने पहले ओलिंपिक में हिस्सा ले रही माना ने एक मिनट 5.20 सेकेंड का समय लिया। उनकी हीट में जिंबाब्वे की डोनाटा काताई एक मिनट 2.73 सेकेंड के समय के साथ शीर्ष पर रहीं।

सानिया और अंकिता पहले दौर में ही हारीं

टोक्यो, प्रेट्र : भारत की सानिया मिर्जा और अंकिता रैना की जोड़ी रविवार को महिला डबल्स के पहले दौर में यूक्रेन की नादिया और लियुडमाइला किचेनोक बहनों से हारकर बाहर हो गईं। सानिया और अंकिता ने पहला सेट 6-0 से जीतकर शानदार शुरुआत की लेकिन, अगले दो सेट में लय कायम नहीं रख सकी। करीब डेढ घंटे तक चले इस मुकाबले में भारतीय जोड़ी 6-0, 6-7, 8-10 से हार गई। इस बार ओलिंपिक में तीसरा सेट 10 अंकों के टाई ब्रेकर में खेला जा रहा है।

सानिया दूसरे सेट में 5-3 से बढ़त मिलने के बाद मैच जीतने के लिए निर्णायक सर्विस पर थी लेकिन, उन्होंने दबाव में आकर अपनी सर्विस गंवा दी। इसके बाद से यूक्रेन की जोड़ी ने भारतीयों को वापसी का कोई मौका नहीं दिया। सुपर टाई ब्रेकर में सानिया और रैना 1-8 से पीछे थे लेकिन, उन्होंने लगातार सात अंक लेकर 8-8 से बराबरी की। इसके बाद दो अंक गंवाकर ओलिंपिक से बाहर हो गईं। इससे पहले मैच के दूसरे ही गेम में प्रतिद्वंद्वियों की सर्विस तोड़का सानिया और अंकिता ने बढ़त बना ली थी। उन्होंने पहला सेट 21 मिनट में जीत लिया।

पदक तालिका

	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल
चीन	5	1	4	10
जापान	5	1	0	6
अमेरिका	4	2	4	10
द. कोरिया	3	0	3	5
आरओसी	1	4	2	7
इटली	1	1	2	4
आस्ट्रेलिया	1	1	1	3
फ्रांस	1	1	1	3
हंगरी	1	1	0	2
ट्यूनिशिया	1	1	0	2
भारत	0	1	0	1

पुरुष तीरंदाजी टीम आज दिला सकती है पदक

टोक्यो, प्रेट्र : भारतीय तीरंदाज सोमवार को यहां एलिमिनेशन दौर के लिए जब मैदान पर उतरेंगे तो वे टोक्यो ओलिंपिक अभियान में निराशाजनक शुरुआत की भरपाई करना चाहेंगे। प्रवीण जाधव, अतानु दास और तरुणदीप राय की पुरुष टीम रैंकिंग दौर में शीर्ष-30 से बाहर रही थी जिससे उन्हें नौवीं वरीयता मिली। टीम कजाखस्तान के खिलाफ शुरुआत करेगी।

ओलिंपिक पदार्पण में जाधव तीनों भारतीयों में सबसे आगे 31वें स्थान पर रहे थे। दास 34वें और राय 37वें स्थान पर रहे। जाधव और दीपिका कुमारी की जोड़ी मिक्स्ड डबल्स स्पर्धा के क्वार्टर फाइनल में बाहर हो गई थी। अगर वे पहले दौर की बाधा पार कर लेते हैं तो पुरुष तिकड़ी शीर्ष वरीय कोरिया से भिड़ेगी जिन्हें बाई मिली है।

निशानेबाजी : इस खेल में भारतीय निशानेबाजों के अब तक खराब प्रदर्शन के बाद अंगद वीर सिंह बाजवा और मैराज अहमद खान पुरुष स्कीट में फाइनल में जगह बनाने की कोशिश करेंगे और फिर देश को पदक दिलाने का भार उनके कंधों पर होगा।

टेनिस : पहले दौर की बाधा पार करने वाले भारतीय युवा स्टार टेनिस खिलाड़ी सुमित नागल का सामना दूसरे दौर में ग्रैंडस्लैम चैंपियन विजेता डेनिल मेदवेदेव से होगा।

भवानी पर नजर: महिला तलवारबाज भवानी देवी ओलिंपिक के लिए क्वालीफाई करने वाली तलवार बाज हैं और उनके सोमवार को खेलने के साथ ही भारत ओलिंपिक में तलवारबाजी खेल में भी पदार्पण कर लेगा। भवानी की कोशिश टोक्यो खेलों को यादगार बनाने की रहेगी।

हाकी टीम की निगाहें अच्छे प्रदर्शन पर : शुरुआती मुकाबले में मजबूत नीदरलैंड्स से हारने के बाद भारतीय महिला हाकी टीम दूसरे मैच में दुनिया की तीसरे नंबर की टीम जर्मनी के खिलाफ वापसी की कोशिश करेगी।

भारत के आज के मैच

पदक के मुकाबले

तीरंदाजी : पुरुष टीम एलिमिनेशन, क्वार्टर फाइनल, सेमीफाइनल, फाइनल- सुबह 6 बजे से
- खिलाड़ी : प्रवीण जाधव, अतानु दास और तरुणदीप राय

निशानेबाजी : पुरुष स्कीट, क्वालीफिकेशन, फाइनल- सुबह 6.30 बजे से
- खिलाड़ी - मैराज अहमद खान, अंगद वीर सिंह

अन्य मुकाबले

बैडमिंटन: पुरुष डबल्स-सुबह 9:10 बजे से
- खिलाड़ी : सात्विकसाईराज रेंकीरेड्डी/चिराग शेट्टी

मुक्केबाजी : पुरुष-राउंड आफ 32-दोपहर 3:06 बजे से
- खिलाड़ी : आशीष कुमार

तलवारबाजी : महिला सेबर व्यक्तिगत टेबल आफ 64- सुबह 5:30 बजे से
- खिलाड़ी : भवानी देवी

हाकी: महिला टीम : पूल-ए, शाम 5:45 बजे से, बनाम जर्मनी

सेलिंग: पुरुष लेजर रेस, सुबह 8:35 बजे से
- खिलाड़ी-विष्णु सरवनन

महिला लेजर रेडियल रेस: सुबह 11:05 बजे से
- खिलाड़ी : नेत्रा कुमानन

तैराकी : पुरुष 200 मीटर बटरफ्लाई हीट्स - दोपहर 3:45 बजे से
- खिलाड़ी : साजन प्रकाश

टेबल टेनिस : पुरुष : सिंगल्स राउंड 2- सुबह 6.30 बजे से
- खिलाड़ी : अचंता शरत कमल
- महिला : सिंगल्स राउंड 3-दोपहर 12 बजे से
- खिलाड़ी : मनिका बत्रा

टेनिस : पुरुष सिंगल्स, दूसरा दौर, सुबह 7.30 बजे से
- खिलाड़ी-सुमित नागल

प्रसारण : सोनी नेटवर्क पर

बड़े उलटफेर का शिकार हुईं बार्टी

ओलिंपिक डायरी

नई दिल्ली, प्रेट्र : ओलिंपिक खेलो में रविवार को टेनिस की सिंगल्स स्पर्धा में एक बड़ा उलटफेर हुआ। हाल ही में विंबलडन का खिताब जीतने वाली विश्व की नंबर एक टेनिस खिलाड़ी एश्ले बार्टी को पहले दौर में हार का सामना करना पड़ा। उन्हें स्पेन की सारा सोरिबेस ने सीधे सेटों में 6-4, 6-3 से शिकस्त दी। इस मुकाबले में बार्टी ने 55 बेजां गलतियां कीं। आस्ट्रेलिया की बार्टी को दुनिया की 48वें नंबर की सोरिबेस ने आसानी से हरा दिया। विंबलडन जीतने के 15 दिन बाद महिला सिंगल्स मुकाबलों में यह बार्टी की पहली हार है। वहीं, अन्य मुकाबले में जापान की नाओमी ओसाका ने चीन की 52वीं रैंकिंग की झेंग साई साई को 6-1, 6-4 से हराया।

मौजूदा ओलिंपिक चैंपियन एंडी मरे हुए बाहर: ब्रिटेन के दो बार के मौजूदा ओलिंपिक चैंपियन एंडी मरे ने दायें पैर की मांसपेशियों में खिंचाव के कारण रविवार को टोक्यो ओलिंपिक खेलों की टेनिस पुरुष सिंगल्स स्पर्धा से अपना नाम वापस ले लिया है। ब्रिटेन के इस खिलाड़ी ने सेंटर कोर्ट पर कनाडा के नौवीं वरीय फेलिक्स आगुर अलियासामी के खिलाफ मैच से पूर्व यह फैसला किया।

चिराग और सात्विक की जोड़ी ने जगाई एक उम्मीद



ज्वाला गट्टा

स्मैश

पीवी सिंधू को ओलिंपिक के ग्रुप-जे के महिला सिंगल्स मुकाबले में इजरायल की सेनिया पोलिकारपोवा के खिलाफ रविवार को आसान चुनौती मिली। उन्हें आधे घंटे तक अच्छा वर्कआउट करने का मौका मिला और उन्होंने हालात को समझने में उसका अच्छा लाभ उठाया। साथ ही दर्शकदीर्घा से मिलने वाली ऊर्जा भी नदारद है, जिससे खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन होता है। इस बात से भी तालमेल बैठाने में वक्त लगता है। पुरुष डबल्स में शनिवार को चिराग शेट्टी और सात्विकसाईराज ने अहम जीत हासिल की। दुनिया की तीसरे नंबर की चीनी ताइपे की जोड़ी यांग ली और ची लिन वांग पर ये जीत तब आई, जब देश भारोत्तोलक मीराबाई चानू के रजत पदक का जश्न मना रहा था।

चिराग और सात्विक ने इस प्रदर्शन से काफी खुशियां दीं। आमतौर पर हम डबल्स खिलाड़ियों के बारे में अधिक बात नहीं करते, इसलिए मैं खुश हूं कि इस जोड़ी ने कड़े संघर्ष के बाद हासिल की गई जीत से काफी लोगों का ध्यान खींचा है। इस जीत से ग्रुप-ए में इस जोड़ी ने क्वार्टर फाइनल की उम्मीदें जगाई हैं। ग्रुप में शीर्ष वरीय मार्कस फर्नाल्डी गिडियोन और केविन संजाया सुकामुल्जो की इंडोनेशियाई जोड़ी भी है। मुझे विश्वास है कि भारतीय सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। ऐसे में ये अहम है कि अपने आखिरी लीग मैच में ब्रिटेन के बेन लेन और सीन वेंडी के खिलाफ मुकाबले से पहले इंडोनेशियाई जोड़ी के खिलाफ अपनी संभावनाओं को और बढ़ाएं। भारतीय जोड़ी कोर्ट पर काफी तेज है और चतुर व निडर थी। चिराग और सात्विक को विपक्षी टीम की कमजोरियों का लाभ उठाना होगा। मैंने देखा है कि शीर्ष वरीय खिलाड़ी दबाव में बिखरते हैं। वहीं, ब्रिटिश जोड़ी को भी हल्के में नहीं लिया जा सकता।

साई प्रणीत को इजरायल के मिशा जिल्बेरमैन से हार मिली। जो लोग उनके अनियमित प्रदर्शन को फालो नहीं कर रहे हैं, वे इस हार से चौंक गए होंगे। अपना दिन होने पर प्रणीत सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी को भी धूल चटा सकते हैं, लेकिन अगर उनका दिन नहीं हो तो वो अपनी ही परछाई जैसे नहीं दिखते। मैं हैरान हूं कि जो लोग प्रबंधन में हैं उन्होंने ओलिंपिक से पहले इस समस्या पर ध्यान क्यों नहीं दिया। ईमानदारी से कहूं तो मुझे टेलीविजन पर बैडमिंटन देखना पसंद नहीं है, लेकिन मेरे पास विकल्प नहीं है। पिछले दो ओलिंपिक का हिस्सा रहने के बाद इन खेलों को स्क्रीन पर देखना अजीब अनुभव है। मैं वास्तविकता में जीती हूं और जानती हूं कि मैं हमेशा तो नहीं खेल सकती। (टीसीएम)

बुरी खबर भारत को आस्ट्रेलिया ने रौंदते हुए 7-1 से दी शिकस्त

भारतीय पुरुष हाकी टीम की शर्मनाक हार

टोक्यो, प्रेट्र : न्यूजीलैंड के खिलाफ जीत से आगाज करने वाली भारतीय पुरुष हाकी टीम को बेजान आक्रमण और ढीले रक्षण के कारण टोक्यो ओलंपिक खेलों के ग्रुप-ए के दूसरे मैच में रविवार को यहां मजबूत आस्ट्रेलिया से 1-7 से शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा। आस्ट्रेलिया की तरफ से डेनियल बील (10वें), जेरेमी हेवार्ड (21वें), फ्लिन ओगलीवी (23वें), जोशुआ बेल्ट्ज (26वें), ब्लैक गोवर्स (40वें और 42वें) और टिम ब्रांड (51वें मिनट) ने गोल किए। भारत के लिए दिलप्रीत सिंह ने 34वें मिनट में एकमात्र गोल किया। भारत अपना अगला मैच 27 जुलाई को स्पेन के खिलाफ खेलेगा।

आस्ट्रेलिया ने शुरू से आक्रामक रवैया अपनाया। पहले हाफ में ही उसने 11 शाट गोल पर मारे, जिसमें उसने चार को गोल में बदला। भारत इस बीच तीन शाट ही आस्ट्रेलियाई गोल पर मार पाया, लेकिन उसे उसमें कोई सफलता नहीं मिली। इस बीच यदि गोलकीपर पीआर श्रीजेश ने दो खूबसूरत बचाव नहीं किए होते तो भारत की स्थिति और बदतर होती।



गोल करने के बाद जश्न मनाते आस्ट्रेलियाई टीम के खिलाड़ी • प्रेट्र

वैसे बढ़त बनाने का पहला मौका भारत को मिला, लेकिन पेनाल्टी कार्नर पर हरमनप्रीत सिंह का शाट थोड़ा ऊंचा रहा। इसके बाद भी टीम ने पेनाल्टी कार्नर हासिल किए, लेकिन किसी भी समय उन्हें गोल में बदलने की वैसी झलक नहीं दिखी, जो न्यूजीलैंड के खिलाफ दिखी थी।

उधर, आस्ट्रेलिया ने जवाबी हमले में पेनाल्टी कार्नर हासिल किया और बील ने जैक वेटन के करारे शाट को बड़ी चालाकी से गोल में पहुंचाया। आस्ट्रेलिया पहले क्वार्टर के बाद 1-0 से आगे था। भारत के पास वापसी का मौका था, लेकिन रूपिंदर पाल सिंह पेनाल्टी लेते समय लय में नहीं दिखे, जबकि ललित उपाध्याय एक अवसर पर अकेले आस्ट्रेलियाई रक्षापंक्ति में सेंध नहीं लगा सके।

दैनिक जागरण
सप्तरंग
साहित्यिक पुनर्नवा
सोमवार, 26 जुलाई, 2021



हरी चूड़ियां

कहानी

राजेश ओझा
गोंडा, उत्तर प्रदेश



उम्र बढ़ने के साथ-साथ और जरूरी हो जाता है जीवनसाथी का सान्निध्य, मगर कभी जिम्मेदारियां तो कभी परिवार मौका ही नहीं देता साथ बैठने का। एक बुजुर्ग दंपती के प्रेम को बयां करती कहानी...

शब्बीर चच्चा आज जैसे बाजार से घर आए, बच्चों ने रोज की तरह घेर लिया। 'मेरे लिए क्या है, मेरे लिए क्या है' रोज की तरह थैले को खींचने की होड़ लगने ही वाली थी कि चच्चा ने डांट दिया, 'चलो फूटो सभी, अभी जो जिसका होगा, सभी को दादी देंगी।' कहते हुए थैला चच्ची को पकड़ा दिया और खुद बाहर अपने कमरे में चले गए।

आज यह पहला अवसर था कि चच्चा ने बच्चों को डांटा था। बच्चों के साथ घर के सभी बड़े भी आश्चर्य में थे। जब तक सारे बच्चे नहीं आ जाते थे चच्चा थैला साइकिल से उतारते ही नहीं थे। आज ऐसा क्या हो गया? चच्ची थैला सीधे बड़ी बहू को देते हुए बोलीं, 'बहू देखो जरा आज क्या लाए हैं बुढ़ऊ कि जो बच्चों को छूने नहीं दिया।' कहते हुये चच्चा की चाय लेकर उनके कमरे में चली गईं। थैला खुलते ही हरी चूड़ियों का पैकट दिख गया।

'अरे गजब..!' बड़ी बहू के साथ उनकी तीनों देवरानियां भी आ गई थीं। सब एक साथ बोल पड़ीं।

पिछले एक हफ्ते से चच्चा रोज रात को चच्ची को किसी न किसी बहाने से बुलाते थे। कभी रात को 11 बजे उन्हें प्यास लग जाती, कभी वह अपना चश्मा नहीं तलाश पाते, पर तीन-तीन बहुओं की सास चच्ची सब कुछ समझते हुए भी कभी पानी किसी पोते से भिजवा देतीं तो कभी चश्मा तलाशने किसी बेटे को भेज देतीं। बहुएं चुहल करतीं।

'अम्मी कब तक किसको भेजोगी। अभी अब्बा की डायरी नहीं मिलेगी। हिसाब भी तो लिखना है। एक आपके चले जाने से अब्बा को सब हिसाब मिलने लगेगा'

'चुप नकचढ़ी।' चच्ची मीठी झिड़की देतीं और मुस्कुराते हुए वहां से हट जातीं। हालांकि ऐसा नहीं था कि चच्ची-चच्चा के पास बैठना नहीं चाहती थीं, पर नाती-पोतों से भरे घर में बहू-बेटों के लिहाज में उन्हें अब बड़ा अटपटा लगता था।

सुबह चच्ची ने आंगन में बैठी छोटी बहू से कहा था, 'फिर सावन आ गया। कितनी बार कही हूं कि सावन में मुझे हरी चूड़ियां पहनना बहुत अच्छा लगता है, लेकिन नहीं मेरे लिए तो हुजूर के पास पैसे ही नहीं हैं। बोलने पर कहते हैं, अब इस उमर में क्या सजना-संवरना रहीमा! नाती-पोतों को संवारो। चलो मान लिया 60 की हो गई हूं तो क्या मन भी बुड्ढा हो गया..?'

रात को खाना खाने के बाद जब चच्चा ने फिर आवाज लगाई, 'रहीमा..! मेरा पेन नहीं मिल रहा है' तो सब बहुएं एक साथ मुस्कुरा पड़ीं।

'नुसरत जा बेटा दादा जी का पेन तलाश दे।' दादी ने छुटके से कहा तो छोटी बहू तपाक से बोली, 'क्या अम्मी आप भी उसे पढ़ने नहीं दे रही हैं। आप जाओ न, आपकी हरी चूड़ियां देखने के लिए किसी न किसी बहाने से बुला रहे हैं, वहीं रहना भी है आपको।'

चच्ची को मजबूरन पेन तलाशने जाना पड़ा। पहुंचते ही मीठी घुड़की दी थी, 'ई देखो पेन तो खुदई अपने जेब में रखे हो। बार-बार काहे आवाज लगा रहे।'

'सावन में तुम्हरी कलाई हरी चूड़ियों के बिना अच्छी नहीं लगती न..! जब तक तुम हरी चूड़ियां न पहनो सावन नहीं चढ़ता।' चच्चा ने चच्ची की बात बीच में काटते हुए उन चूड़ियों को जो बहुओं ने परिहास करते हुए पहना दिया था, को चच्ची की थोड़ी झुर्रियों में लिपटी गोरी कलाइयों में सहलाया था।

चच्ची ने छोटी बहू को आवाज दी, 'छुटकी..! भैया बिना दूध पिए ही यहीं सो गया है।' छोटी बहू मुस्कुराते हुए आई थी। उसका छोटा लड़का चच्चा के पास ही सोता था। उठाते हुए बोली थी, 'चल बेटा..! आज दादी की हरी चूड़ियां आईं हैं।' चच्चा-चच्ची अब एक-दूसरे को देखकर मुस्कुरा रहे थे।

rajeshojha163@gmail.com



आमंत्रण

कहानी/ कविता/ व्यंग्य/ अनुभूति/ ललित आलेख/ लघुकथा एवं राष्ट्रीय महत्व के साहित्यिक-वैचारिक कार्यक्रमों से जुड़ी सूचनाएं, चित्र आदि आमंत्रित हैं। इन्हें इस पते पर भेजें...

पुनर्नवा, दैनिक जागरण, 2-सर्वोदय नगर, कानपुर-5
punarnava@knp.jagran.com

जयंती पर विशेष

शरतचंद्र ने दी थी उपन्यास सम्राट की उपाधि

31 जुलाई को जन्मे मुंशी प्रेमचंद का जीवन उनकी कथाओं की तरह ही बेहद सादगीभरा रहा। साहित्य को समर्पित इस विराट व्यक्तित्व के जीवन से जुड़ी झलकियों पर आधारित आलेख...



भारतीय बसंत कुमार
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

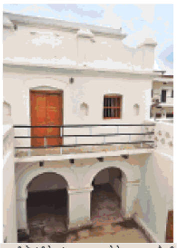
बनारस के लमही में प्रेमचंद के घर के अंदर खड़ा हूं। कोई भी कमरा सात-आठ फुट से बड़ा नहीं है। कोई खाट या चौकी बिछ जाती होगी तो फिर इन कमरों में कुर्सी भी बमुश्किल लगती होगी। चार कमरे हैं नीचे के तल में। दो उत्तर में और दो दक्षिण में। दोनों ओर के दोनों कमरे के बीच भी किवाड़ है। किसी अकुलाहट में बीच का किवाड़ सुकून देता हुआ कमरे का आयतन बढ़ा देता होगा। बहुत छोटे से आंगन के मध्य में एक रसोई है। इसी घर में रहते होंगे प्रेमचंद। यहां ही पत्नी शिवरानी से कभी उन्होंने कहा होगा, 'मैं मजदूर हूं और मजदूरी किए बिना मुझे भोजन का अधिकार नहीं है।' शिवरानी देवी के कथा संसार के अनगिन पात्र भी इन्हीं घरों में सृजे गए होंगे। यूं तो यह घर उनकी स्मृतियों का 'स्मारक' नहीं बन सका है, लेकिन अखिल विश्व साहित्य के विराट व्यक्तित्व के अभावग्रस्त जीवन दशा की निशानी खाली होकर भी बयां करने में सक्षम है।

'हिंदी पुस्तक एजेंसी', कोलकाता के संचालक बैजनाथ केडिया ने ही सबसे पहले प्रेमचंद की कहानियों एवं उपन्यासों को हिंदी में प्रकाशित किया। वह प्रेमचंद से मिलने बनारस आए थे और यहां के नीलकंठ मुहल्ले में रास बिहारी सेठ के उस मकान में ठहरे थे जहां कभी 'भारत जीवन' प्रेस चलता था। प्रेमचंद उस समय बनारस के पिसनहरिया मुहल्ले में रहा करते थे। तब आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने बैजनाथ केडिया की मुलाकात प्रेमचंद से करवाई थी। 'पंच परमेश्वर' व अन्य कहानियों के संग्रह, 'सेवा सदन', 'प्रेमाश्रम' आदि उपन्यास तब इसी प्रकाशन से प्रकाशित हुए थे।

इस फर्म का एक प्रेस था-'वणिक'। महावीर प्रसाद पोद्दार 'वणिक' प्रेस के मुद्रक थे। महावीर प्रसाद ने प्रेमचंद की कुछ रचनाओं को तब कथाशिल्पी शरतचंद्र चट्टोपाध्याय को पढ़ने के लिए दीं। एक दिन शरत बाबू से मिलने वह उनके घर गए थे और बैठकखाने में जो उपन्यास खुला पड़ा था, वह प्रेमचंद का था। प्रेमचंद की उस कृति पर शरतचंद्र ने 'उपन्यास सम्राट' संबोधन लिख रखा था। महावीर प्रसाद जब वहां से लौटे तो आनंदित हुए और अपने यहां से प्रकाशित होने वाली प्रेमचंद की कृतियों में 'उपन्यास सम्राट' लिखने लगे। 1918 में 'हिंदी पुस्तक एजेंसी' ने मूलतः उर्दू में लिखे उपन्यास का हिंदी संस्करण 'सेवा सदन' प्रकाशित किया था। 'सेवा सदन' में स्त्री-पुरुष के विचारों के अंतर और परिवार में स्त्री जीवन के संत्रास की कहानी है।

राष्ट्रीय संघर्ष की पृष्ठभूमि पर उपन्यास: प्रेमचंद को उनके 'सोजे वतन' के लिए याद करना अपरिहार्य है, जिसे अंग्रेजी हुकूमत ने प्रतिबंधित कर दिया था। इस समय वह हमीरपुर में सरकारी नौकरी कर रहे थे। हालांकि इसका एक लाभ यह हुआ कि वह नवाब राय से प्रेमचंद हो गए। भारत में असहयोग आंदोलन से पूर्व उन्होंने अपना 'प्रेमाश्रम' उपन्यास (रचना काल 1918-19) पूरा किया था। भारत के तेज होते राजनीतिक संघर्ष और जमींदारों के मन में ब्रिटिश हुकूमत के प्रति भक्ति के बीच यह उपन्यास राष्ट्रीय संघर्ष की पृष्ठभूमि में लिखा गया और गांधीजी के सत्याग्रह की छाप इसकी कथाभूमि में है।





लमही में मुंशी प्रेमचंद का मकान: फोटो उत्तम राय चौधरी

लखनऊ के मोटेराम शास्त्री का मुकदमा: 'हंस' से पूर्व प्रेमचंद ने कुछ समय तक 'माधुरी' पत्रिका का संपादन भी किया था। 'माधुरी' के जनवरी 1928 के अंक में उनकी कहानी 'मोटेरामजी शास्त्री' छपी तो लखनऊ के वैद्य पंडित शालिग्राम शास्त्री ने मानहानि का दावा कर दिया, जबकि हकीकत यह थी कि वह कई साल पूर्व ही इस नाम के पात्र का सृजन कर चुके थे। उनके 'वरदान' उपन्यास में इसी नाम का पात्र मौजूद था। वैद्य जी को आपत्ति थी कि इसे उनको लक्ष्य करते हुए लिखा गया है।

प्रेमचंद की एक तस्वीर के बारे में हरिशंकर परसाई ने कभी लिखा था, 'प्रेमचंद का एक चित्र मेरे सामने है। पत्नी के साथ फोटो खिंचा रहे हैं? सिर पर मोटे कपड़े की टोपी, कुर्ता-धोती पहने हैं। कनपटी चिपकी है, गालों की हड्डियां उभर आई हैं, पर घनी मूंछें चेहरे को भरा-भरा बतलाती हैं। पांवों में कैनवस के जूते हैं, जिनके बंद बेतरतीब बंधे हैं। दाहिने पांव का जूता ठीक है, मगर बाएं जूते में बड़ा छेद हो गया है, जिसमें से अंगुली बाहर निकल आई है। मेरी दृष्टि जूते पर अटक गई है। सोचता हूं-फोटो खिंचवाने की अगर यह पोशाक है तो पहनने की कैसी रही होगी? नहीं, अलग पोशाक नहीं होगी- इस आदमी में पोशाक बदलने का गुण नहीं है। यह जैसा है, वैसा ही फोटो में खिंच जाता है।' एक चित्र और उसका विश्लेषण प्रेमचंद के संपूर्ण व्यक्तित्व की कहानी कह रहा है।



मुंशी प्रेमचंद पत्नी शिवरानी देवी के साथ

विभिन्न रचनाओं का अनुवाद: उनका लेखकीय प्रभाव ऐसा था कि अन्य भाषाओं में भी प्रेमचंद की लिखी रचनाओं की मांग होने लगी। मराठी लेखक आनंद राव ने 1928 में प्रेमचंद से मराठी में उनकी कहानियों के अनुवाद के लिए उन्हीं से सूची मांगी थी। इसी दौर में गुजराती में भी उनकी रचनाओं का अनुवाद हुआ। जापान में रहने वाले केशोराम सब्बरवाल ने प्रेमचंद की कहानी का जापानी में अनुवाद व प्रकाशन करवाया और बर्लिन विश्वविद्यालय में हिंदी के प्रोफेसर ताराचंद राय ने उनकी कहानियों-उपन्यासों का जर्मन भाषा में अनुवाद के लिए पहल की थी।

रास न आया सिने संसार: मुंशी प्रेमचंद की कहानियों को फिल्मी दुनिया ने भी प्रेम दिया, लेकिन वह प्रेम उनको नसीब न हुआ। फिल्म जगत छोड़ने के चंद माह बाद ही वह दुनिया को अलविदा कह गए। आर्थिक तंगी के दौर में प्रेमचंद किस्मत आजमाने वर्ष 1934 में अजंता सिनेटोन लिमिटेड के करार पर मुंबई गए, लेकिन पहली ही फिल्म 'मजदूर' सेंसर बोर्ड में फंस गई। मुंबई में इस फिल्म का प्रदर्शन रोक दिया गया। देश के कुछ हिस्सों में बाद में इस फिल्म का प्रदर्शन हुआ। थोड़े दिन वह यहां सक्रिय रहे, पर सिने संसार उन्हें रास न आया।

मैं मजदूर हूं: 20 जून 1936 को बनारस में रूसी साहित्यकार गोर्की की मृत्यु के बाद 'आज' कार्यालय में एक शोकसभा थी। प्रेमचंद रातभर जागकर अपना भाषण लिखते रहे। तब पत्नी ने उनसे गोर्की के बारे में पूछा था। जवाब था, 'लेखक के पास तो उसकी तपस्या ही होती है। वही सबको वह दे सकता है। उससे सब लोग लाभ ही उठाते हैं। लेखक तो अपनी तपस्या का कुछ भी अंश अपने लिए नहीं छोड़ता और लोग जो तपस्या करते हैं वह तो अपने लिए है, परंतु लेखक जो तपस्या करता है, उससे जनता का कल्याण होता है। वह अपने लिए कुछ नहीं करता।'

बीमारी से निरंतर दुर्बल होते जाने के कारण पत्नी शिवरानी देवी बार-बार उन्हें लिखने से मना करतीं और पूर्ण विश्राम का आग्रह करतीं। तब प्रेमचंद की प्रतिक्रिया होती थी, 'मैं मजदूर हूं और मजदूरी किए बिना मुझे भोजन का भी अधिकार नहीं है।'

शिवपूजन सहाय से उनका अक्सर पत्राचार होता था। अपनी रचनाओं की आलोचना के प्रति प्रेमचंद कितने आग्रही थे। इसकी झलक उनके एक पत्र में मिलती है-'मतवाला' में 'रंगभूमि' की लंबी समालोचना निकलेगी, यह सुनकर बड़ी खुशी हुई। कम से कम मुझे अपने दोष तो मालूम हो जाएंगे। मुझे जबांदानी का दावा न कभी था न है, व्याकरण से मैं वैसा कोरा हूं जैसा गंजा बालों से। इसलिए मेरे लिए तो आलोचना कभी शिक्षा से खाली नहीं हो सकती है। कौन लिखेगा इसकी मुझे चिंता नहीं। मैं तो यह मानता हूं कि संसार में सैकड़ों ही बातें मुझे सूरदास जैसे दिव्यांग से सीखनी है।'

मृत्युशय्या पर पड़े हुए प्रेमचंद से लोग ईश्वर का स्मरण करने के लिए कहते थे। उन्होंने उस अंतिम रात्रि को जैनेंद्र से कहा था, 'जैनेंद्र, लोग ऐसे समय याद किया करते हैं ईश्वर, मुझे भी याद दिलाई जाती है, पर अभी तक मुझे ईश्वर को कष्ट देने की जरूरत नहीं मालूम हुई है। यह प्रेमचंद का दृढ़ मनुष्यत्व था, जो मृत्यु को सामने देखकर भी मुस्कुरा रहा था।

bhartiya@vns.jagran.com

आमजन के कथाकार



डा. चम्पा श्रीवास्तव
रायबरेली, उत्तर प्रदेश

कथासाहित्य के शलाका पुरुष मुंशी प्रेमचंद का समग्र सृजन आम आदमी की व्यथा और आकांक्षाओं का खुला दस्तावेज है। उनकी कृतियों में लोकरस व्याप्त है जिसमें झोपड़ी से लेकर महल तक, ग्राम से लेकर नगर तक, गरीबी से लेकर अमीरी तक तथा यथार्थ से लेकर आदर्श तक की गहन और संवेदनशील यात्रा का सफल रेखांकन हुआ है।

युगप्रवर्तक प्रेमचंद ने करीब 300 कहानियां एवं 13 उपन्यास लिखे। सभी कहानियों में भारतीय जनजीवन की नब्ज धड़कती परिलक्षित होती है। चाहे 'कफन' हो या 'बूढ़ी काकी', 'मंत्र' हो या 'मां', 'जुलूस' हो या 'सुहाग की साड़ी', 'सवा सेर गेहूं' हो या 'दूध का दाम', 'जीवन का शाप' हो या 'ईदगाह' तथा 'पूस की रात' हो या 'बेटी का धन' सभी में मानवीय मूल्यों, संबंधों एवं अभावों का यथार्थ चित्रांकन करते हुए मुंशी प्रेमचंद ने समाज में व्याप्त रूढ़ियों, अंधविश्वासों, परंपराओं, धारणाओं, कुप्रथाओं, कुरीतियों एवं भ्रष्टाचारों का पर्दाफाश किया है। कथा सम्राट प्रेमचंद ने 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रय', 'रंगभूमि', 'गबन' तथा 'गोदान' आदि उपन्यासों में कहीं अर्थ, कहीं अशिक्षा, कहीं छुआछूत, कहीं धार्मिक आडंबर, कहीं बाल विवाह, अनमेल विवाह, पुनर्विवाह, वेश्यावृत्ति तो कहीं दहेज की समस्या को प्रस्तुत करके नारी त्रासदी की अनूठी दास्तान पेश की है।

अपने कथा साहित्य में प्रेमचंद ने नारी समस्याओं का अंकन ही नहीं किया, बल्कि समाधान हेतु उसके हाथ में हामिद का चिमटा तथा वाणी का तीर भी थमाया है जिससे फिर कभी किसी गरीब को 'सवा सेर गेहूं' के लिए अपने को गिरवी न रखना पड़े। 'कर्मभूमि' की सुखदा से अछूत आंदोलन का नेतृत्व कराया 'सेवा सदन' की सुमन को वह शक्ति दी जिससे कोई नारी किसी पुरुष के अन्याय को सहन न कर सके, 'निर्मला' जैसी नारी का समर्थन करके पुरुष समाज के इस भ्रम को तोड़ा कि नारी दासी ही नहीं, सुख दुख की हमसफर भी है। उन्होंने 'संग्राम', 'प्रेम की वेदी' और 'कर्बला' नाटक लिखा। 'जीवन सार' 'आत्मकहानी' तथा 'दुर्गादास', 'महात्मा शेख सादी' तथा बालोपयोगी पुस्तकें भी सृजित कीं, जो उनके वैश्विक चिंतन का परिचायक है।

प्रेमचंद के समग्र साहित्यिक अवदान में उनकी पत्रकारिता का भी योगदान कम नहीं है। प्रेमचंद ने 1903 ई. से स्वतंत्र पत्रकारिता प्रारंभ की, जो 1930 ई. में 'हंस' के प्रारंभ होने तक चलती रही। 'स्वदेश' और 'मर्यादा' पत्र में मुंशी प्रेमचंद वैचारिक आलेख तथा टिप्पणियां लिखते थे साथ ही उर्दू के पत्र 'जमाना' में 'रफ्तारे जमाना' के नाम से स्थायी स्तंभ लिखकर समाज की प्रत्येक गतिविधि को जन-जन तक संप्रेषित कर रहे थे।

dr.champa1@gmail.com

पावस के रंग

गीत



डा. श्रुति मिश्रा
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

पाहन की छाती पर हंसता है तृण देखो।
धानी घुंघटे वाली का डोला आया।।

फूलों की, मिट्टी की, खुशबू निखरी, बिखरी।
सूखा उपवन, जल संतृप्त हो अघाया।।

दिन के तम में थम-थम, स्वप्न जगे हैं मन-मन।
प्रीत भर बरसने को बादल अकुलाया।।

कृष्णमेघ, पुरवाई, बहते पुरजोर घोर।
गुपचुप वियोग गान सावन ने गाया।।

गहन सरस नीरद भी तब तो हल्के लगे थे।
मन अंबर पर स्मृति बन, जब कोई छाया।।

सारे सिंगार साज पलभर झूठे लगे थे।
छुप-छुपकर एकाकी रोना क्यूं भाया?।

बूंदें पत्तों से छन, छलक उठीं कण-कण में।
ज्यों जीवन दोपहरी पर तेरा साया।।

सुन री! पगली ओ पवन, खुद को संभाल जरा।
उड़ते आंचल ने हाय आज गजब ढाया।।

अलबेली अब तेरा कौतुक छिपता है नहीं।
बोल जरा क्या खुद को खोकर है पाया?

मन उमंग, तन मृदंग, नेह भरे अंग-अंग।
जाने कितनी सौगातें सावन लाया।।

shrutimisra2012@gmail.com



बारिश का अभिसार

दोहे



गिरीश पंकज
रायपुर, छत्तीसगढ़

तप्त धरा की देह से, बारिश का अभिसार।
खुश होकर वो कर रही, नित हरियर श्रृंगार।।

कहां ग्रीष्म की वो तपन, स्वेदभरा वह दौर।
अब सावन में मन मगन, नाच रहे हैं मोर।।

गीत मगन हो गा रहे, धरती के भगवान।
पावस आते खुश हुआ, सबसे अधिक किसान।।

बादल धरती से कहे, सँचित कर लो नीर।
ग्रीष्मकाल में क्यों रहे, जलाभाव की पीर।।

बारिश के जल से किया, जिसने भी स्नान।
देह चमक कर हो गई, सचमुच स्वर्ण समान।।

बारिश से हर्षित हुए, सब रीते खलिहान।
खेत मगन होने लगे, फसलें हुईं जवान।।

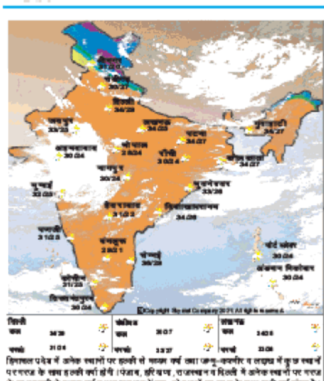
शिवजी को भाये बहुत, अद्भुत श्रावण मास।
कथा बांचती है प्रकृति, होता है एहसास।।

बूंद-बूंद संचित करें, यह तो है उपहार।
करे प्रकृति हर कदम पर, हम सब पर उपकार।।



जल जीवन का अंग है, जल से ही संसार।
जल न हो तो, जिंदगी हो जाए बेकार।।

girishpankaj1@gmail.com





2005 में सौ साल की सर्वाधिक बारिश का मुंबई पर कहर



2005 में आज ही मुंबई में 100 साल की रिकार्ड बारिश हुई थी। 944 मिमी हुई बारिश में मुंबई में 400 से ज्यादा और पूरे महाराष्ट्र में करीब एक हजार लोगों की मौत हुई थी। करोड़ों के नुकसान के साथ ही बड़ी संख्या में लोग बेघर हुए।

क्यूबा में फिदेल कास्त्रो के नेतृत्व में क्रांति की शुरुआत



1953 में आज ही क्यूबा क्रांति की शुरुआत हुई थी। कम्युनिस्ट क्रांतिकारी फिदेल कास्त्रो के नेतृत्व में यहां के राष्ट्रपति फल्गेंसियो बतिस्ता की तानाशाही के खिलाफ लोगों ने सशस्त्र विद्रोह किया। लिहाजा एक जनवरी 1959 को फल्गेंसियो सरकार का अंत हुआ।

पाकिस्तानी घुसपैठियों को भारतीय सैनिकों ने खदेड़ा

1999 में आज ही कारगिल में भारतीय सेना को जीत मिली थी। एक चरवाहे ने तीन मई 1999 को भारतीय सीमा में पाकिस्तान के घुसपैठ की सूचना दी थी। इन्हें बाहर खदेड़ने के लिए भारतीय सेना ने आपरेशन विजय चलाया। 60 दिनों तक चले इस युद्ध में 500 से ज्यादा जवानों ने शहादत दी। पाकिस्तान के भी करीब तीन हजार सैनिक मारे गए थे। थलसेना और वायुसेना ने पाकिस्तान को भारतीय चोटियों से भागने पर मजबूर किया। 26 जुलाई को आपरेशन पूरा होने पर कारगिल विजय दिवस की घोषणा की गई।



इधर-उधर की

63 साल पहले लाइब्रेरी से ली गई किताब लौटाई

लंदन, एजेंसी: देर आए दुरुस्त आए। इंग्लैंड में न्यू कैसल सेंट्रल लाइब्रेरी का वाकया इसी बात की बानगी है। यहां अज्ञात शख्स ने डाक के जरिये 63 साल बाद किताब लाइब्रेरी में वापस भेजी है। उसने इसके साथ ही माफी का पत्र भी लिखा है। लाइब्रेरी ने अपने फेसबुक पोस्ट से मामले की जानकारी देते हुए कहा, इसकी चर्चा से लोगों में लाइब्रेरी के लिए उत्सुकता बढ़ी है। लाइब्रेरी के मैनेजर डेविड हेपवर्थ ने कहा कि इसे लौटाने वाले ने अपनी पहचान उजागर नहीं की है, उसे जुर्माने का डर सता रहा होगा। वैसे मौजूदा समय में इसका जुर्माना साढ़े तीन लाख रुपये से ज्यादा का होता, लेकिन हम जुर्माना नहीं लेंगे। उनकी सदाशयता के हम कायल हैं। अगर वे कभी हमारे सामने आएंगे तो लाइब्रेरी उन्हें कुछ किताबें भेंट कर सकती है।



अज्ञात शख्स ने डाक के जरिये लौटाई किताब • इंटरनेट मीडिया

लंच टाइम बढ़ाकर दें बच्चों को अच्छा पोषण

शोध ▶ लंबे लंच टाइम में बच्चे खाते हैं ज्यादा फल-सब्जी, 20 मिनट की अवधि बढ़ाने की सिफारिश

वाशिंगटन, एएनआइ : यदि आपका बच्चा फल-सब्जी खाने में आनाकानी करता है और इस वजह से उसे सही पोषण नहीं मिल पाता है तो एक यह तरकीब अपनाई जा सकती है। एक अध्ययन में पाया गया है कि सब्जी और फल बच्चों की पहली पसंद नहीं होते हैं। उन्हें चटपटी चीजें ज्यादा अच्छी लगती हैं। लेकिन स्कूलों में यदि लंच टाइम बढ़ा दिया जाए तो बच्चे ज्यादा फल-सब्जी खाने लगते हैं। इससे उनका पोषण स्तर सुधर सकता है।

यूनिवर्सिटी ऑफ इलिनोइस के शोधकर्ताओं द्वारा इस संबंध में किए गए अध्ययन का यह निष्कर्ष जेएएमए नेटवर्क ओपन जर्नल में प्रकाशित हुआ है। इसके अनुसार, यदि हम अपने बच्चों का पोषण और स्वास्थ्य में सुधार लाना चाहते हैं तो यह लक्ष्य स्कूल में लंच टाइम बढ़ाकर हासिल किया जा सकता है।

यूनिवर्सिटी ऑफ इलिनोइस में डिपार्टमेंट ऑफ फूड साइंस एंड ह्यूमन न्यूट्रिशन की असिस्टेंट प्रोफेसर मेलिसा पफ्लुघ प्रेस्कॉट का कहना है कि बच्चों को स्कूल में खाने के लिए महज 10 मिनट से भी कम समय मिल पाता है। भले ही इसके लिए ज्यादा समय तय किए गए हों, लेकिन खाना लेने के लिए उन्हें कतार में लगना पड़ता है या फिर उन तक खाना पहुंचने में देर होती है।



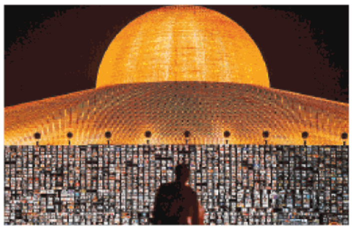
पोषण स्तर सुधारने की नई सलाह। इंटरनेट मीडिया

प्रेस्कॉट और अध्ययन के सह लेखकों ने 10 से 20 मिनट के लंच टाइम के दौरान फल और सब्जी की खपत की तुलना की है। उन्होंने पाया कि कम लंच टाइम में बच्चों ने कम मात्रा में फल और सब्जी खाई, जबकि पेय पदार्थ (ब्रेवरेज) और भोजन की शुरुआत के आइटमों की खपत में कोई अंतर नहीं था। इसका मतलब है कि यदि आप बच्चों को खाने के लिए पर्याप्त समय दें तो वे ज्यादा फल और सब्जी खा सकते हैं। उनके मुताबिक, इसका सबसे ज्यादा असर कम आय वर्ग वाले परिवारों के बच्चों पर देखने को मिलता है। क्योंकि वे अपनी आर्थिक स्थिति के कारण घर से खाना नहीं लाते हैं और उसके लिए कतारों में खड़े होने में उनका काफी समय बीत जाता है।

प्रेस्कॉट और उनकी टीम ने प्राथमिक और मिडिल स्कूल के बच्चों पर समर कैंप में यह अध्ययन किया। शोधकर्ताओं ने स्कूल कैफेटेरिया को लंच एरिया बनाया, जहां बच्चे कतारबद्ध होकर अपने पसंदीदा आइटम को चुनते थे। प्रेस्कॉट ने बताया कि कम लंच टाइम और ज्यादा लंच टाइम में एक जैसे खाने के सामान रखे गए ताकि खाने के आइटम के आधार पर बच्चों की रुचि के अंतर को टाला जा सके।

ऐसे किया अध्ययन : शोधकर्ताओं ने खाने के सामान के ट्रे की फोटो ली, जिससे यह जानना का प्रयास किया गया कि बच्चों में किस आइटम के प्रति ज्यादा रुचि थी। उसके बाद इस बात पर नजर रखी गई कि कौन बच्चा कितने समय तक खाने पर बैठता है और क्या खाता है। इस दौरान उनके व्यवहार पर भी निगरानी रखी गई, जिसमें आपस में खाने का सामान की शेयरिंग, उनकी आपसी बातचीत और फोन के इस्तेमाल को शामिल किया गया। खाने के बाद बच्चों से स्वाद और अन्य बातों की जानकारी ली गई। इसके आधार पर उनके खाने की मात्रा का आकलन किया गया। पाया गया कि बच्चों ने सब्जी की तुलना में फल ज्यादा खाए और यह लंबे लंच टाइम में और भी अधिक था।

ये निकाला निष्कर्ष : प्रेस्कॉट ने कहा कि उनके विचार में नए पोषण मानकों में सबसे जरूरी बात यह होनी चाहिए कि सब्जियों की वेरायटी बढ़ाई जाए ताकि कम आय वर्ग परिवार के बच्चों को वे चीजें मिल सकें, जो उन्हें घर पर नहीं मिल पाती हैं। लेकिन यदि हमने बच्चों को लंच टाइम कम दिया तो उन्हें पोषक चीजें खाने का मौका नहीं मिलेगा और पोषण का हमारा लक्ष्य विफल हो जाएगा। इसलिए शोधकर्ताओं का मानना है कि बच्चों के लंच टाइम में कम से कम 20 मिनट की बढ़ोतरी की जाए।

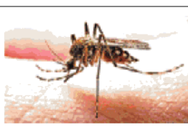


बौद्ध व्रत दिवस पर प्रार्थना

थाइलैंड के पथुम थानी में बौद्ध व्रत दिवस समारोह पर वाट फ्रा धम्मकाया बौद्ध मंदिर में प्रार्थना की गई। कोरोना संक्रमण की वजह से इस वर्ष स्क्रीन शो के माध्यम से श्रद्धालु प्रार्थना में शामिल हुए। इसकी स्थापना 1970 में माची (नन) चंद्र खोनोक्योंग और लुआंग पोर धम्मजायो ने की थी। लुआंग पु सोध कैंडासारो द्वारा स्थापित धम्मकाया परंपरा में है। यह मंदिर अपने आधुनिक प्रसार के तरीकों और प्रौद्योगिकी के उपयोग के लिए विश्वभर में जाना जाता है। रायटर

ग्लोबल वार्मिंग की वजह से डेंगू के प्रसार में आएगी कमी

- अमेरिकी शोधकर्ताओं ने अध्ययन के आधार पर लगाया पता
- हालांकि, मच्छरों में वायरल संक्रमण को नियंत्रित करने वाले एक बैक्टीरिया का असर भी कम होगा



अधिक तापमान के प्रति संवेदनशील होते हैं मच्छर।

इस तरह किया अध्ययन

शोधकर्ताओं ने मच्छरों पर ग्लोबल वार्मिंग के असर का पता लगाने के लिए विशेष प्रयोग किया। इसके लिए संक्रमित मच्छरों को सीलबंद शीशियों में रखा और फिर शीशियों को 42 डिग्री सेल्सियस तक गर्म पानी में डुबोया। इसके बाद शोधकर्ताओं ने देखा कि मच्छरों को स्थिर होने में कितना समय लगा और इसकी तुलना गैरसंक्रमित मच्छरों से की।

वाशिंगटन, प्रेट्र : वर्तमान में धरती जिन सबसे बड़े संकटों से जूझ रही है, उनमें से एक ग्लोबल वार्मिंग भी है। अभी तक विज्ञानी इसके कई दुष्परिणामों के प्रति सचेत कर चुके हैं, लेकिन अब एक नए अध्ययन में इसके एक लाभ के बारे में बताया गया है। इस अध्ययन में सामने आया है कि ग्लोबल वार्मिंग की वजह से डेंगू के प्रसार में कमी आएगी। हालांकि, इसमें यह भी बताया गया है कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण ही मच्छरों में वायरल संक्रमण को नियंत्रित करने वाले एक बैक्टीरिया का असर भी कम होगा।

पीएलओएस नेग्लेक्टेड ट्रापिकल डिजीज जर्नल में प्रकाशित अध्ययन में बताया गया है कि डेंगू का प्रसार करने वाले मच्छर अधिक तापमान के प्रति ज्यादा संवेदनशील होते हैं। शोधकर्ताओं ने यह भी पाया कि वोल्बाचिया जीवाणु से संक्रमण, जिसे हाल ही में डेंगू के खिलाफ एक जैविक नियंत्रण एजेंट के रूप में इस्तेमाल किया गया है, मच्छरों की थर्मल संवेदनशीलता बढ़ाता है। डेंगू एडीज एजिप्टी मच्छर के काटने से फैलता है।

अमेरिकी की पेंसिल्वेनिया स्टेट यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर एलिजाबेथ मैकग्रा के मुताबिक, यह मच्छर जीका, चिकनगुनिया और येलो फीवर सहित कई रोग पैदा करने वाले वायरस को प्रसारित करने के लिए भी जिम्मेदार है। मैकग्रा का कहना है कि बढ़ते शहरीकरण और जलवायु परिवर्तन से इस मच्छर का प्रभाव 2050 तक इतना बढ़ने की आशंका है कि दुनिया की 50 फीसद आबादी इससे पीड़ित हो सकती है। मैकग्रा ने बताया कि हाल के वर्षों में दुनिया भर के शोधकर्ताओं के समूहों ने इन वायरसों को नियंत्रित करने का प्रयास किया है। इसके लिए एडीज एजिप्टी को वोल्बाचिया पिपिएंटिस बैक्टीरिया से संक्रमित कर पर्यावरण में छोड़ा गया है। यह बैक्टीरिया डेंगू सहित अन्य वायरस वाले मच्छरों के अंदर इसे बढ़ने से रोकने का काम करता है। इस तरह वोल्बाचिया बैक्टीरिया ऐसे संक्रमण के प्रसार को रोकने में मददगार होता है।

अपने इस प्रयोग में शोधकर्ताओं ने पाया कि डेंगू वायरस वाले मच्छरों में गर्मी के प्रति अधिक संवेदनशीलता देखने को मिली। इसमें सामने आया कि गर्म पानी में शीशी में रखे मच्छर, गैरसंक्रमित मच्छरों की तुलना में लगभग तीन गुना तेजी से स्थिर हो गए। वहीं, वोल्बाचिया से संक्रमित किए गए मच्छर गैरसंक्रमित मच्छरों की तुलना में चार गुना तेजी से स्थिर हुए।

यह निकाला निष्कर्ष : इस प्रयोग के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि ग्लोबल वार्मिंग का असर आने वाले समय में मच्छरों पर भी देखने को मिलेगा। इससे डेंगू से संक्रमित मच्छर गैरसंक्रमित मच्छरों की तुलना में ज्यादा तेजी से स्थिर हो जाएंगे, यानी अपना असर कम फैला पाएंगे। वहीं, वोल्बाचिया से संक्रमित किए गए मच्छर भी गैरसंक्रिमत मच्छरों की तुलना में जल्द स्थिर होंगे, जिससे यह कह सकते हैं कि संक्रमण को रोकने के लिए प्रयोग इस बैक्टीरिया का असर भी कम होगा।

कोरोना महामारी से आ सकती है डायबिटीज की नई लहर

अनुसंधान



कोरोना से बढ़ा डायबिटीज। इंटरनेट मीडिया

कोरोना महामारी के बीच मरीजों के ठीक होने के बाद आ रहे प्रतिकूल प्रभावों में सबसे ज्यादा खतरा डायबिटीज का बढ़ गया है। एक अध्ययन में सामने आया है कि जिन लोगों में कोरोना संक्रमित होने से पहले शुगर का स्तर सामान्य था, उनमें भी डायबिटीज का मरीज होने के लक्षण मिले हैं। तमाम मरीजों में डायबिटीज उच्च स्तर पर मिली।

बोस्टन स्थित बच्चों के अस्पताल ने 551 ऐसे मरीजों का अध्ययन किया, जो 2020 में मार्च से लेकर मई तक कोरोना वायरस से संक्रमित होने के बाद इटली के एक अस्पताल में भर्ती हुए थे। अध्ययन करने वाली टीम का नेतृत्व करने वाले पाओलो फियोरिना ने बताया कि इन सभी मरीजों की कोरोना संक्रमण से मुक्त होने के बाद भी जांच की जाती रही। जांच के निष्कर्ष कुछ ही दिनों में सामने आने लगे। अध्ययन में 46 फीसद मरीज ऐसे थे, जिनमें डायबिटीज सामान्य स्तर से ज्यादा थी। कुछ का शुगर स्तर बहुत बढ़ा हुआ था। इनमें से किसी भी मरीज की पूर्व में डायबिटीज की कोई पृष्ठभूमि नहीं थी। कुछ मरीजों में तो डायबिटीज के लक्षण संक्रमित होने के छह माह के बाद सामने आए। वहीं जिन लोगों को कोरोना संक्रमित होने से पहले डायबिटीज थी, उन पर कोरोना संक्रमण का घातक प्रभाव हुआ। जान बचाने के लिए आक्सीजन के साथ ही वेंटीलेटर की आवश्यकता पड़ी। यह अध्ययन जर्नल नेचर मेटाबालिज्म में प्रकाशित हुआ है। टीम ने अध्ययन में यह भी पाया कि डायबिटीज के साथ ही मरीजों में हार्मोन का असंतुलन भी देखने को मिला। -आइएएनएस

स्क्रीन शॉट

अपने उसूल किसी के लिए नहीं बदलूंगा : एजाज खान



सिटी ऑफ ड्रीम्स सीजन 2 में दिखेंगे एजाज। इंटरनेट मीडिया

हर किसी के काम करने के अपने उसूल होते हैं। हालांकि फिल्म इंडस्ट्री में काम करते वक्त लोगों से रिश्ते अच्छे बनाकर रखने होते हैं। बात करें अगर अभिनेता एजाज खान की, तो उनका मानना है कि किसी के लिए भी अपने उसूलों को बदला नहीं जा सकता है। बिग बॉस 14 शो कर चुके एजाज दैनिक जागरण से बातचीत में कहते हैं कि हर इंडस्ट्री में हर किस्म के लोग होते हैं। निर्भर करता है कि आप कैसे लोगों के साथ खुद को ढालते हैं। मैं मुंहफट हूं, लेकिन किसी के बारे में गलत नहीं सोचता हूं। मैं अलग किस्म के लोगों के साथ काम करना चाहता हूं, तो कई बार उनका नजरिया भी समझना होगा। लेकिन मेरे जो उसूल हैं या जो मान्यताएं वह नहीं बदलूंगा। मैं काम करने के नए तरीके जरूर सीखूंगा, क्योंकि मुझे आगे बढ़ना है। इंडस्ट्री बहुत बड़ी है, हर किसी के पास काम है। मैंने हमेशा ईमानदारी और सामने वाले के नजरिए को समझते हुए काम किया है। यही वजह है कि सिटी ऑफ ड्रीम्स 2 के लिए मैंने बिग बॉस शो को बीच में ही छोड़ दिया, क्योंकि इस शो के साथ कमिटमेंट पहले से की थी। मैं सिर्फ अपना फायदा नहीं देखता हूं। मुझे पता है मैं जो पाने का हकदार हूं, वह मुझे मिलेगा। मैंने अपनी किस्मत अपनी मेहनत से बनाई है। मेरी लिए सफलता का यही तरीका है कि साफ नीयत से काम करूं, ताकि चैन से सो सकूं और खुद को आइने में देख सकूं। सिटी ऑफ ड्रीम्स 2 शो डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर 30 जुलाई से स्ट्रीमिंग के लिए उपलब्ध होगा।

सोनू ने चलाया साइकिल ठेला, पूछा बदले में दूध के दाम में कुछ छूट मिलेगी?

कोरोना काल में जरूरतमंदों की मदद करने के साथ-साथ अभिनेता सोनू सूद अक्सर अपनी जमीन से जुड़ी गतिविधियों को लेकर भी चर्चा में रहते हैं।



फिलहाल म्यूजिक वीडियो की शूटिंग में व्यस्त हैं सोनू। इंटरनेट मीडिया

चाकू-छुरी की धार तेज करने, डोसा बनाने और ढोल बजाने के बाद अब सोनू ने इंटरनेट मीडिया पर ऐसा ही एक नया वीडियो साझा किया है, जो काफी वायरल हो रहा है। इस वीडियो में वह एक किसान को उसके द्वारा काटे चारे के साथ साइकिल ठेला पर बिठाकर वह खुद उसे चलाते हुए नजर आ रहे हैं। वह पीछे बैठे व्यक्ति से पूछते हैं कि क्या हम लोगों को भी दूध मिलेगा और कितने रुपये किलो (लीटर) मिलेगा? इस पर वह व्यक्ति सोनू को दूध का दाम 50 रुपये लीटर बताता है। फिर आश्चर्य भाव से सोनू कहते हैं कि आप मुझसे भी 50 रुपये लेंगे, मैं जो आपके चारे को इतना धक्का मार रहा हूं। कुछ तो छूट दो यार...। लेकिन व्यक्ति सोनू को छूट देने से इन्कार कर देता है। फिर सोनू पूछते हैं कि जो दूध में पानी डालते हो वो...? इसी तरह हंसी-मजाक के साथ यह वीडियो खत्म हो जाता है। सोनू फिलहाल चंडीगढ़ में कोरियोग्राफर और निर्देशक फराह खान के साथ तुम तो ठहरे परदेसी... गाने के रीक्रिएटेड म्यूजिक वीडियो की शूटिंग कर रहे हैं।

शबाना आजमी के साथ अधूरी रही एक फिल्म की भड़ास निकालेंगे धर्मेंद्र

उम्र सिर्फ एक नंबर है, अगर जीवन में जज्बा हो तो जिंदगी का आनंद हर उम्र में लिया जा सकता है। यह बात 85 वर्षीय हिंदी सिनेमा के ही मैन अभिनेता धर्मेंद्र पर सटीक बैठती है। जो इस उम्र में भी इंटरनेट मीडिया से लेकर, फिल्मों और व्यक्तिगत जीवन में काफी सक्रिय रहते हैं। आगामी दिनों में वह अपने 2, रॉकी और रानी की प्रेम कहानी और ग्रैंडफादर्स आर फॉरेवर जैसी फिल्मों में नजर आएंगे। करण जौहर के निर्देशन में बन रही फिल्म रॉकी और रानी की प्रेम कहानी में धर्मेंद्र के साथ रणवीर सिंह, आलिया भट्ट, जया बच्चन और शबाना आजमी अहम भूमिकाओं में हैं। एक इंटरव्यू में धर्मेंद्र ने इस फिल्म में अपने सह कलाकारों के बारे में बात करते हुए कहा, 'जया बच्चन मुझे अब भी फिल्म गुड्डी में मेरी कोस्टार के तौर पर याद हैं। उस फिल्म के दौरान वह हमेशा कहती रहती थीं कि धरम जी मैं फैन हूं आपकी। शबाना के बारे में मैं क्या कह सकता हूं। वह बहुत शानदार कलाकार हैं। मुझे याद है कि हम बिच्छू नाम की फिल्म में एक साथ काम कर रहे थे, लेकिन दुर्भाग्यवश सई परांजपे निर्देशित वह फिल्म पूरी नहीं बन सकी। (हंसते हुए) अब इस फिल्म में मैं पूरी भड़ास निकाल लूंगा। रणवीर अपनी सभी फिल्मों में स्वाभाविक लगते हैं। बड़ा ही प्यारा लड़का है। जब भी हम किसी फंक्शन में मिलते हैं, तो वो आकर मेरे पास बैठ जाता है। उसी तरह आलिया भी अपने काम में बहुत शानदार है।' बता दें कि इस फिल्म से करण करीब पांच साल बाद निर्देशन में वापसी कर रहे हैं, फिल्म को अगले साल रिलीज किया जाना है।

इस तरह 15 दिनों में हीरो से विलन बन गए जैकी श्रॉफ

सिनेमा जगत को अनिश्चितताओं की दुनिया भी इसलिए माना जाता है, क्योंकि यहां चीजें अक्सर बदलती रहती हैं। कुछ ऐसा ही अनुभव रहा अभिनेता जैकी श्रॉफ का उनकी पहली फिल्म स्वामी दादा की शूटिंग के दौरान। एक लाइव चैट के दौरान जैकी ने बताया, 'उस दौर में किसी ने मुझसे पूछा था कि तुम्हें एक्टिंग करनी है क्या? तो मैंने उसे इन्कार कर दिया। फिर उसने कहा कि वहां सेट पर देव आनंद साहब के बेटे सुनील आनंद भी हैं, तो मैं उसके साथ सेट पर जाने को राजी हो गया। मैं सेट पर सुनील से मिला, उनके साथ मेरी अच्छी दोस्ती बन गई। फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि देव साहब को मिलना है ना? देव साहब मेरे फेवरेट एक्टर थे, मेरी मां भी मेरे बाल उन्हीं की तरह बनाती थी। मैं बिना देर किए देव साहब से मिलने के लिए तैयार हो गया और उनके घर गया। मुझे देखकर देव साहब ने कहा कि सुबह-सुबह तुम्हारी तस्वीर देखी और शाम को तुम मेरे सामने खड़े हो। तुम्हें अपनी फिल्म में रोल दूंगा। उसके बाद उन्होंने मुझे फिल्म में सेकेंड लीड किरदार का ऑफर दिया। मैंने घर जाकर तुरंत यह खबर अपनी मां को सुनाई, वह भी बहुत खुश हुई। उसके 15 दिनों बाद जब मैं दोबारा उनसे मिला तो उन्होंने कहा कि बेटा मैंने वह रोल मिथुन चक्रवर्ती को दे दिया है। तुम्हारे लिए एक और रोल है, तुम विलन की टीम में उसके लेफ्ट हैंड हो। मुझे तो उनकी फिल्म में खड़ा रहना भी स्वीकार था। इस तरह से मैं 15 दिनों में ही हीरो से विलन बन गया।' जैकी आगामी दिनों में सूर्यवंशी और फोन भूत जैसी फिल्मों में नजर आएंगे।



सिनेमा के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण के लेकर भी सक्रिय रहते हैं जैकी। इंटरनेट मीडिया

गजल को कभी भी पेशा नहीं माना : पंकज उधास

सात सवाल

मखमली आवाज के मालिक पंकज उधास का मानना है कि जज की कुर्सी पर बैठना किसी चुनौती से कम नहीं है। खजाना आर्टिस्ट अलाउड टैलेंट हंट के चौथे एडिशन से पंकज उधास बतौर जज जुड़े हैं। उनका कहना है कि ऐसे शो युवा गजल गायकों के लिए आगे बढ़ने का एक रास्ता खोल देते हैं। उनसे हुई बातचीत के अंश।



शो के चौथे एडिशन को जज करेंगे उधास • पीआरटीम

• गजल गायकों की तलाश अब कितनी आसान है?

-खजाना फेस्टिवल का यह बीसवां साल है, जबकि टैलेंट हंट चार सालों से चल रहा है। हमने वाकई में अंतर महसूस किया है। पहले के मुकाबले अब गजल गायक बढ़ गए हैं। गजल को लेकर युवाओं की समझ कई बार हैरत में डाल देती है। बतौर जज हमारी चुनौतियां बढ़ जाती है। 20 गायकों में से दो को चुनना मुश्किल काम है। जो शो में आगे नहीं बढ़ पाते हैं, मैं उन्हें यही समझाता हूं कि हौसला बुलंद रखना चाहिए, भविष्य में सफलता जरूर मिलेगी। हमारा मकसद उभरते हुए गजल गायकों के लिए एक रास्ता खोलना है।

• अपनी विरासत को युवा पीढ़ी के लिए किस तरह से संजोकर रखना चाहते हैं?

-गजल में कोई किसी की नकल नहीं कर सकता है। बेगम अख्तर, मेहदी हसन, जगजीत सिंह हर किसी का अंदाज एक-दूसरे से जुदा रहा है। ऐसे फनकारों को आगे आना चाहिए, जो गजल गायकी में अपना नया रंग लेकर आएं, ताकि गजल सुनने को लेकर एक नया जज्बा पैदा हो।

• चार दशक में अपने अंदाज और आवाज को एक ही तरह का बनाए रखना कैसे हो पाता है?

-यह एक तपस्या है, जिसके लिए कई त्याग करने पड़ते हैं। रोजमर्रा की जिंदगी में एक आम इंसान आइसक्रीम और अचार जैसी चीजें खा लेता है। कलाकार को दुनिया की इन प्रलोभन वाली चीजों से बचकर रहना पड़ता है।

• इस प्रलोभन से बचने के लिए कौन सी चीजें प्रेरित करती आई हैं?

-गजलों के प्रति मेरे भीतर जो शिद्दत है, वह आग की तरह जलती है। जब तक वह शिद्दत है, तब तक मेरी आवाज और परफार्मेंस सही रहेगी। कई बार लोग 10-15 सालों में अपने काम से थक जाते हैं। मेरे भीतर वह विचार कभी नहीं आता है कि बहुत गजलें गा लीं। हर वक्त मेरा दिमाग और दिल इसी बात पर लगा रहता है कि अब और क्या अच्छा कर सकता हूं।

• क्या अपनी किसी गजल को गाते वक्त आप कभी भावुक हुए हैं?

-बिल्कुल हुआ हूं। मेरी एक गजल है, जो मैंने बहुत हिम्मत करके गाई है कि घर लौट के रोएंगे मां-बाप अकेले में... मिट्टी के भी खिलौने सस्ते न थे मेले में। इस तरह के जज्बात को गाना आसान नहीं होता है। जब यह गजल रिकार्ड कर रहा था, तो मेरी आंखों में आंसू आ गए थे। यह कड़वा सत्य है कि आज भी कई माता-पिता के ऐसे हालात हैं, जो अपने बच्चों को मिट्टी के खिलौने भी नहीं दिला पाते हैं। शायर कहते हैं कि शायरी एक एहसास है, जब तक आप उन लब्जों को महसूस न करें, जीएं न तब तक आप गजल नहीं गा सकते हैं।

• आपने एक इंटरव्यू में बताया था कि आपका गाना चिट्ठी आई है... सुनकर एक शख्स विदेश से अपने वतन लौट आए थे। क्या इस तरह की बातें जिम्मेदारी बढ़ाती हैं?

-हां, क्योंकि मैंने गजल को कभी एक पेशा नहीं माना। कभी इसे जीने का जरिया नहीं बनाया। मैं गजल इसलिए गाता हूं, क्योंकि मैं इससे प्यार करता हूं। यह बात जरूर मायने रखती है कि जो काम आप कर रहे हैं, उसका असर लोगों पर क्या होगा। मेरी एक नज्म कोरोना काल में काफी वायरल हुई थी। उस नज्म को मशहूर शायर जफर गोरखपुरी साहब ने लिखा है कि दुख सुख था एक सबका अपना हो या बेगाना...एक वो भी था जमाना, एक ये भी है जमाना। जब लोग यह गजल सुनते हैं, तो उन्हें एहसास होता ही है कि हम इतने स्वार्थी कैसे हो गए हैं कि सिर्फ पैसों के पीछे भाग रहे हैं।

• फिल्मों में आपको गजल की कमी खलती है?

-अगर हम पिछली सदी के छठे और सातवें दशक के गाने देखें, तो महसूस होता है कि वह गजलनुमा गाने थे। उस दौर में मदन मोहन साहब, रोशन साहब, नौशाद साहब, जयदेव जी जैसे संगीतकार थे। वो फिल्मों में एक गजल तो डाल ही देते थे। गजल को लोगों तक पहुंचाने का काम सिनेमा ने किया। लेकिन साल 1980 के बाद जिस तरह का सिनेमा बना, उसमें गजलों का इस्तेमाल कम हुआ, अब लगभग बंद ही हो गया है। फिल्मों में गजलों की बहुत अहमियत है, जिसे निर्माता को नजर अंदाज नहीं करना चाहिए। एक अच्छी गजल का प्रभाव फिल्म पर जरूर पड़ता है।

(प्रियंका सिंह)

भगत सिंह का किरदार कुछ हटकर निभाने की थी इच्छा : अमोल



उधम सिंह की बायोपिक में भगत सिंह की भूमिका में दिखेंगे अमोल • इंस्टाग्राम

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सरदार उधम सिंह की बायोपिक फिल्म सरदार उधम सिंह में अभिनेता अमोल पराशर शहीद भगत सिंह के किरदार में नजर आएंगे। इस फिल्म में अभिनेता विक्की कौशल ने टाइटल किरदार निभाया है। अमोल इस फिल्म में भगत सिंह का किरदार पहले दिखाई गई फिल्मों से अलग निभाना चाहते थे। इस बारे में दैनिक जागरण के सहयोगी अखबार मिड डे से बातचीत में उन्होंने कहा, 'भगत सिंह के बारे में किताबों से पढ़कर उनके किरदार को एक वास्तविकता की तरह प्रदर्शित करना सबसे बड़ी चुनौती थी। इस तरह के किरदार के साथ एक अलग किस्म की जिम्मेदारी और उम्मीदों का बोझ अपने आप आ जाता है। मैं इसके लिए किसी दूसरे एक्टर की कापी (नकल) नहीं करना चाहता था। निर्देशक शुजित दा (शुजित सरकार) ने मुझे प्रोजेक्ट की शुरुआत में ही बता दिया था कि मुझे एक 21 वर्षीय ऐसे लड़के का किरदार निभाना है, जो बहुत ज्यादा पढ़ा-लिखा है। मेरे लिए उनके (भगत सिंह) जैसे क्रांतिकारी के मानवीय गुणों के बारे में जानना बहुत जरूरी था, इसकी शुरुआत मैंने उनके द्वारा लिखी कुछ किताबें पढ़ने से की। पूंजीवाद, सांप्रदायिकता और कट्टरता के बारे में लिखी उनकी सामाजिक टिप्पणियां हमें उनकी प्रेरणाओं की एक झलक दिखाती है।' इस फिल्म की शूटिंग पिछले साल फरवरी में ही पूरी हो चुकी है।